वर्ष–९

अंक–१–२

जनवरी-फरवरी-१९८९

✻ ✻ ✻ ✻ ✻ ✻ ✻ ✻ ✻ ✻ ✻ ✻

मुद्रक प्रकाशक लेखक

एवं

सम्पादक

योगेन्द्र निर्मोही

सम्पर्क—

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग

हाईकोर्ट कोलोनी,

जोधपुर–३४२००१ (राज०)

टेलीफोन : २२२०९

आनो भद्राः कृतयो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और

भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

प्रार्थना

ॐ नवै वर्षतुं वै परा दिवें: श्रियै सः

पुत्रान् दीर्घौं धान्यश्चपशुर्वै प्रदातः ।

हे गणपति ! हे महालक्ष्मी ! नया वर्ष हमारे लिये, परिवार के लिए और समस्त विश्व के लिए प्रकाशवान हो, मन का अन्धकार हटे, साधना एवं ज्ञान की ज्योति जले, पुत्र दीर्घायु एवं आज्ञाकारी हो घर में धन धान्य की वृद्धि हो, और मानसिक एवं जीवन में पूर्णता प्राप्त हो ।

डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कोलोनी, जोधपुर–३४२००१ (राजस्थान)

विषय--सूची

सम्पादकीय

जनवरी ८९ का यह "परविज्ञान विशेषांक" आपके हाथों में सौंपते हुए मुझे अत्यन्त प्रसन्नता और गौरव अनुभव हो रहा है, भारतवर्ष में पहली बार ऐसे कठिन और दुरूह विषय को चुन कर पत्रिका के माध्यम से आपके सामने प्रस्तुत किया है और स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है, कि विश्व में साधना, प्रयोग एवं तन्त्र के प्रति कितनी अधिक ललक और काम हो रहा है।

इस समय पूरा विश्व संक्रमण काल से गुजर रहा है, विज्ञान के प्रति और उसके विनाश कार्यों को अनुभव कर वैज्ञानिक चिन्तित और परेशान होने लगे है, जीवन की पूर्णता उन्हें "पराविज्ञान" में ही दिखाई देने लगी है और इस क्षेत्र में वे तेजी के साथ आगे बढ रहे है।

यह हमारी कमजोरी हैं, यह हमारी मानसिक गुलामी है, कि हम साधनाएं, प्रयोग, मन्त्र और तन्त्र को ढोंग, पाखण्ड और ढकोसला समझ बैठे है और इसे ढोंग सिद्ध करने के लिए प्रयत्नशील बने रहते हैं, इसके लिए सैकड़ों प्रकार के कुतर्क दे कर हम अपने आपको प्रगतिवादी और आधुनिक सिद्ध करने की कोशिश कर रहे है जब कि पश्चिम के उन्नत देश इन सभी साधनाओं और प्रकृति के रहस्यों को गम्भीरता से समझने का प्रयास कर रहे है और इसमें उन्हें जो सफलताएं मिली हैं, वे अपने आप में चौकाने वाली एवं अचरज भरी है, मुझे ऐसा लगता है कि यदि हम हाथ पर हाथ धरे बैठे रहे, तो हमारे पूर्वजों के ज्ञान साधनाओं और विधाओं पर भी पश्चिम हावी हो जायेगा और हम पिछड़े हुए रह जायेगे।

किसी भी साधना, प्रयोग या सिद्धि का एक लम्बा रास्ता होता है, और किसी भी एक साधना को लेकर निरन्तर कई कई वर्षों तक प्रयत्न करना पड़ता है, तभी उसमें सफलता मिलती है, पर इस प्रकार जो सफलता मिलती है, वह पूरे विश्व को आलोकित करने में पर्याप्त है।

आप साधक है, आपकी पृष्ठ भूमि साधनात्मक रही है और इससे भी बड़ी बात यह है कि आप युगान्तरकारी अद्वितीय व्यक्तित्व के चरणों में बैठे है, आपको सन्नद्ध होना हैं, भ्रम संदेह और आलोचनाओं के जाल को तोड़ कर आगे बढ़ें और पत्रिका के भारत व्यापी प्रसार में सहयोग देते हुए निरन्तर साधना पथ पर अग्रसर हो कर आप उन सिद्धियों को प्राप्त करें जिससे मानव जाति का कल्याण संभव है और ऐसा आप कर सकते है।

पत्रिका परिवार की समस्त शुभ कामनाएं नव वर्ष के अवसर पर आपके साथ है।

आपका ही
योगेन्द्र निर्मोही
सम्पादक

दिव्य व्यक्तित्व

जिनके प्रकाश में हम अपनी मंजिल पा सकते हैं

और इस मंजिल को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है, उस व्यक्तित्व में पूर्ण विश्वास करते हुए अपने आपको पूरी तरह से समाहित कर देने की तीव्र भावना।

●

।। शत अष्टोतरी मुण्डी सिद्ध पीठ स्थापना ।।

पूरे भारतवर्ष में दो चार "पंचमुंडी" और मात्र दो "नवमुंडी" पीठ है पर इससे ज्यादा कोई सिद्ध पीठ है ही नहीं, क्योंकि इसके निर्माण सृजन और स्थापना के लिये अद्वितीय अलौकिक और अनिवर्चनीय व्यक्तित्व की आवश्यकता होती है।

१२ नवम्बर ८८, आज सिद्धाश्रम के लिए अत्यन्त अद्वितीय समारोह साधना दिवस था, क्योंकि पिछले कई हजार वर्षों बाद पहली बार सिद्धाश्रम के प्रवेश द्वार पर एक दिव्य व्यक्तित्व के हाथों "शतअष्टोतरी मुण्डी सिद्ध पीठ" की भव्यता के साथ स्थापना की गयी जिससे कि विश्व के अन्य व्यक्ति और साधक भी सुविधापूर्वक मात्र शतअष्टोतरी मुण्डी शक्ति साधना सम्पन्न कर सिद्धाश्रम में प्रवेश पा सके।

और यह एक युगान्तरकारी घटना है, जिससे देश और विदेश के लिए सिद्धाश्रम–प्रवेश का पथ प्रशस्त हो सका है।

महालक्ष्मी का प्रत्यक्ष प्रगटीकरण

कुरूक्षेत्र (हरियाणा) में श्रेष्ठ साधना शिविर नवम्बर ८८ में सम्पन्न हुआ, इसमें पूरे भारतवर्ष के साधकों ने भाग लिया, और इस अवसर पर एक दिव्य व्यक्तित्व ने घोषणा की कि मन्त्र के माध्यम से देवताओं का प्रगटीकरण एवं प्रत्यक्ष दर्शन संभव है।

सैकड़ों साधकों की उपस्थिति में विशेष मन्त्रों के उच्चारण के द्वारा उस दिव्य व्यक्तित्व ने लक्ष्मी प्रत्यक्ष क्रिया सम्पन्न की और एक साथ सैकड़ों कैमरे चमक उठे, सभी लोगों ने कैमरों से उतारे गये चित्रों के माध्यम से अनुभव किया कि वास्तव में ही लक्ष्मी का प्रत्यक्षीकरण संभव है, प्रत्यक्ष लक्ष्मी के फोटो सभी साधकों के पास

संचयित है और यह उनके जीवन का सौभाग्य एवं उनकी धरोहर है।

इस घटना के माध्यम से उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया कि इस घोर कलिकाल में भी मन्त्रों की सार्थकता हैं, और मन्त्रों के माध्यम से देवताओं का प्रत्यक्ष प्रगटीकरण संभव है, जिन्हें कैमरे के माध्यम से फोटो खींच कर स्पष्ट देखा जा सकता है।

सौन्दर्य सृष्टि

२१ सितम्बर ८८, बंगलोर में आज बड़ी गहमा गहमी थी, दोपहर को एक बजे तो लोगों का झुण्ड "वैलाक-सभागार" की तरफ भागा चला जा रहा था, क्योंकि यहां आज "हिरण्यगर्भ पद्धति" से असौन्दर्य को सौन्दर्य में परिवर्तित करने का दिग्दर्शन था उस समय पूरे सभागार में तिल रखने की भी जगह नहीं थी, बंग-लौर के प्रमुख एवं महत्वपूर्ण हस्तियां उस सभागार में विद्यमान थी, जिनमें प्रसिद्ध वैज्ञानिक ए० एच० कुलकर्णी डा० धीमेजा, डा० चिन्तपुर, मेयर तिरुवालिया आदि उपस्थित थे।

ठीक समय पर एक भव्य और उच्चकोटि के व्यक्तित्व सभागार में प्रविष्ट हुए और उपस्थित दर्शकों में भगदड़ मच गई; आज नेत्रों के माध्यम से हिरण्य गर्भ प्रवाह देकर एक वृद्ध जर्जर और कमजोर स्त्री को सौन्दर्य में परिवर्तित कर देने का प्रयोग था।

कुछ ही समय बाद अध्यक्ष की कुर्सी के सामने लगभग दस फीट की दूरी पर एक ४५ वर्ष की काली, कमजोर और अधपके सफेद बालों से युक्त स्त्री खड़ी थी, थोड़े ही समय बाद उस आगन्तुक व्यक्तित्व ने अपने नेत्रों से पेरामेग्नेटिक किरणों का प्रवाह किया, सारे लोग सन्न से खड़े होकर इस दृश्य को अपनी आंखों से देख रहे थे और लोगों ने देखा कि धीरे धीरे उस वृद्धा के शरीर में परिवर्तन होने लगा है, सबसे पहले उसका कद ऊंचा उठा, शरीर में पुष्टता आई, काला रंग गोरे रंग में परिवर्तित हुआ, चेहरे पर चमक ओज और आकर्षण का भाव बढा, तथा सिर के बाल लम्बे घने और काले हुए।

और यह सब दस मिनट के अन्दर अन्दर हो गया, उस व्यक्तित्व ने वापिस कुर्सी पर बैठते हुए कहा, बस...बस।

और लोगों देखा कि उस वृद्धा स्त्री की जगह पर वही वृद्धा लगभग बीस वर्ष की तरुणी और अद्वितीय सौन्दर्य से सम्पन्न यौवनवती के रूप में खड़ी थी एक आश्चर्यजनक परिवर्तन........एक अद्वितीय प्रयोग।

और इससे कुरूप, काली और वृद्ध स्त्रियों की आंखों में अद्वितीय सौन्दर्य का स्वप्न तैर सा गया।

देव संगीत

१६-१७-१८ दिसम्बर को कानपुर में भव्य शिविर का आयोजन। आयोजन के आधार भूत व्यक्तित्व को माल रोड़ पर स्थित मेघदूत होटल में ठहराया गया, १७ दिसम्बर की रात्रि को लगभग ११ बजे होटल के उस कमरे में नगर के कई प्रतिष्ठित व्यक्तित्व उपस्थित थे जिनमें दो तांत्रिक कुछ अधिकारी आफिसर और शहर के प्रतिष्ठित व्यवसायी भी उपस्थित थे।

चर्चा चल पड़ी देव संगीत की, एक उच्च कोटि के अधिकारी ने पूछा कि क्या पृथ्वी वासियों को

भी देव संगीत सुनाया जा सकता है।

सामने पलंग पर बैठे हुए, भव्य व्यक्तित्व ने उत्तर दिया–अवश्य हो, यह देव संगीत अत्यन्त दुर्लभ और अद्वितोय होता है, बिना भाग्य के यह सुनना संभव ही नहीं है।

भव्य व्यक्तित्व के एक अत्यन्त प्रिय उच्च कोटि के अधिकारी ने अनुनय किया कि क्या आज ऐसे क्षण प्राप्त हो सकते है।

भव्य व्यक्तित्व ने एक क्षण उन सब की ओर देखा, कमरे में लगभग १५–१७ लोग उपस्थित थे, एक व्यक्ति दौड़ कर हारमोनियम और तबले लें आया, उस भव्य व्यक्तित्व ने अपने पलंग के नीचे ही पैरों पर उंगलियों से स्पर्श होते हुए दोनों वाद्य यन्त्रों को रख दिया और उन यन्त्रों को ढकते हुए अपने पैरां पर चादर डाल दो, ऐसा लग रहा था कि वे अपने पैरों से उन दोनों वाद्य यन्त्रों को वजा रहे है, और तभो कमरे में हलका सा मधुर संगोत गूंज उठा, वह व्यक्तित्व पलंग पर आंखें बन्द किये बैठा हुआ था उनके होठों से धोमे धीमे संगीत गुंजरित हो रहा था और दोनों पैर इस प्रकार से गतिशील थे, मानो वे पैर वाद्य यन्त्र बजा रहे हों।

और वह संगीत .. एक अद्वितीय संगीत ......देव दुर्लभ मधुर संगीत कमरे में गुंजरित होता रहा लोग स्तब्ध थे, ऐसा लग रहा था कि जैसे वे इन्द्र के दरबार में पहुंच गये हो, और जब संगोत समाप्त हुआ तब सुबह के सवा चार बजे थे, पर ऐसा लगा कि जैसे समय कपूर को तरह उड़ गया हो पांच घण्टे इस प्रकार से व्यतीत हुए कि उसका पता ही नहीं चला।

और यह देव-संगीत एक कैसेट में टेप हुआ, जो कि साधकों के लिए लोगों के लिए और वैज्ञानिकों के लिए एक चुनौतो है, एक अद्वितीय संगीत की धरोहर है।

॥ रोग निवारण ॥

३ सितम्बर ८८, मद्रास का प्रसिद्ध विल्लोर अस्पताल। आज यहां एक अद्वितीय भव्य व्यक्तित्व को आमन्त्रित किया गया है, जो अपने हाथों की उंगलियों के माध्यम से पैरामेगनेटिक प्रवाह निकाल कर रोगियों को रोग मुक्त करने का प्रयोग सम्पन्न करेंगे, उस समय विल्लोर अस्पताल के प्रधान डा० मि० ब्रिल, उद्योग पति ए० एच० व्यंकटे और शहर के महत्वपूर्ण सदस्यों के साथ साथ अस्पताल के लगभग सभी डॉक्टर उपस्थित थे।

उस समय पांच रोगियों को सामने खड़ा किया गया था जो विभिन्न रोगों से ग्रस्त थे, और कुछ यन्त्रों की सहायता से उसी समय ज्ञात हो सकता था कि उन रोगियों का रोग कितना प्रतिशत कम हो गया, या पूर्ण रूप से समाप्त हो गया।

आगन्तुक व्यक्तित्व एक ऊंची कुर्सी पर बैठ गया, और सामने उन रोगियों को खड़ा कर दिया, उसने अपने दाहिने हाथ को सामने फैला कर उंगलियों के माध्यम से मन को एकाग्र कर पैरामेगनेटिक किरणों का

प्रवाह उन रोगियों पर दिया। रोगियों के चेहरों से ऐसा लग रहा था कि उनके अन्दर भयानक द्वन्द्व और आलोड़न विलोड़न हो रहा है, लगभग सात आठ मिनट तक ऐसा ही चलता रहा, और इसके बाद उस आगन्तुक व्यक्तित्व ने अपना हाथ पीछे खींच लिया।

उसी समय उन रोगियों को एक अलग कमरे में ले जा कर उनका पूरी तरह से परीक्षण किया तो ज्ञात हुआ कि वे पांचों रोगी जो कि अपने अपने रोगों से ग्रस्त थे, पूर्णतः मुक्त हो गये थे, वैज्ञानिक उपकरण व मशीनें बतला रही थीं कि वे रोगी इस समय सर्वथा निरोग और स्वस्थ थे।

उस समय इंगलैण्ड से आये हुए प्रसिद्ध डा० ओ० नील भी उपस्थित थे, जो कि विश्व के माने हुए हृदय विशेषज्ञ हैं, डाक्टरों ने अनुभव किया कि औषधियों की अपेक्षा पेरासेमनेटिक किरणें चिकित्सा क्षेत्र में आश्चर्य-जनक परिवर्तन लाने में समर्थ और सक्षम है, यह उनके जीवन की एक आश्चर्यजनक घटना थी, जो कि उन्होंने अभी अभी अनुभव की थी, परन्तु सामने बैठे व्यक्तित्व का चेहरा इतनी बड़ी उपलब्धि दिखाने के बाद भी सर्वथा शान्त और आनन्दयुक्त था।

।। आंखों में विश्व ब्रह्माण्ड ।।

आश्विन नवरात्रि ८८। शाम का समय था, एक भव्य व्यक्तित्व इस नवरात्रि पर्व पर समस्त साधकों के सामने ऊंचे मंच पर बैठे हुए थे, मैं अगली ही पंक्ति में उनके सामने बैठा हुआ था और उस दिन वे भवोर्पणी दीक्षा का मर्म समझा रहे थे, यह दीक्षा विश्व की अद्वितीय दीक्षा मानी जाती है, इससे पहले भी मैं इस दीक्षा के बारे में सुन चुका था।

प्रवचन चल रहा था और मैं एक टक उनकी आंखों में ताक रहा था और मैंने देखा कि उनकी आंखों में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड उतर आया है, उस समय वे ब्रह्माण्ड के बारे में ही समझा रहे थे, मैंने उसी समय उनके चेहरे का और विशेष कर उनकी आंखों का क्लोंज अप ले लिया और वह चित्र मेरे पास सुरक्षित है, जिसमें आंखों का चित्र तो है ही, उन आंखों में हिमालय का विस्तृत दृश्य, बर्फ के ऊंचे ऊंचे पहाड़ और स्वर्गारोहण पर्वत के आस पास का दृश्य पूरी तरह से कैमरे में कैद हुआ है, एक आंख की पुतली में इतने सारे दृश्य अंकित होना और स्पष्ट होना अपने आप में अद्वितीय घटना है, और उस फोटोग्राफ की कई कापियां करा कर मैंने उस दिन शिविर में भी वितरित की थी।

वास्तव में ही उच्च व्यक्तित्व की आंखों में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड स्वतः ही समाहित रहता है।

उपरोक्त सभी प्रसंगों में वर्णित उस अद्वितीय व्यक्तित्व का नाम है परमहंस स्वामी निखिलेश्वरा नन्द जी, जिन्हें पूरा भारतवर्ष डाक्टर नारायणदत्त श्रीमाली के नाम से जानता है, जो गृहस्थ होते हुए भी योगी है, सिद्धाश्रम के आधार हैं, भारत की प्राचीन विद्याओं के उन्नायक है, ऐसे व्यक्तित्व के चरणों में बैठकर हम अपने आपको गौरवान्वित अनुभव कर रहे है।

योगेन्द्र निर्मोही

क्या आइन्स्टाइन ने सिद्धाश्रम जाने की योजना बनाई थी

जब मानव सभ्यता ने पहली बार आंख खोली थी, जब भारत के महर्षियों ने सिन्धु नदी के किनारे वेद की ऋचाओं का उच्चारण किया था, और **जब संसार के आदिग्रन्थ "ऋग्वेद" की रचना हुई थी तो उस वेद की ऋचा में महर्षियों ने मानव को परामर्श दिया था कि जीवन की पूर्णता सिद्धाश्रम जाने में ही है एक ऐसा आश्रम, जो सम्पूर्ण विश्व की आध्यात्मिक शक्तियों का आधार है, एक ऐसा स्थान जहां सैकड़ों, हजारों वर्षों के योगी सशरीर विद्यमान है साधना रत है और ज्ञान की पूर्णता का विस्तार पूरे विश्व में करने में सक्षम है।**

विश्व तभी तक जीवित और गतिशील है जब तक कि पाप और पुण्य सत् और असत् भौतिकता और आध्यात्मिकता का का बैलेन्स है एक तरफ पूरा विश्व भौतिकता के पंक में सिक्त हो चुका है झूठ, छल, कपट व्यभिचार और पाखण्ड का विस्तार पूरे विश्व में हो गया है तो इसका सन्तुलन आध्यात्मिकता के द्वारा ही सम्भव है और इस संतुलन की जिम्मेवारी सिद्धाश्रम

और उसमें स्थित योगियों पर है ।

पुराणों के अनुसार जब चारों तरफ प्रलय हो गया था इस प्रलय में मनुष्य पशु पक्षी कीट पतंग सब कुछ समाप्त हो गया था, चारों तरफ जल ही जल था, ऐसे

समय में भी केवल "सिद्धाश्रम" ही उस जल के बीच भावी मानव जीवन की आश्रय स्थली था, जिसे पुराणों ने वटवृक्ष के पत्ते पर बालमुकुन्द जैसी कल्पना की है, **देवताओं ने यह स्वीकार किया है कि जब चारों तरफ प्रलय था उस प्रलय-जलधि में सिद्धाश्रम एक ऐसे टापू की तरह दिखाई देता था, जैसे वटवृक्ष का पत्ता पानी**

पर तैर रहा हो और उस पर लीलाविहारी प्रकृति स्थित हो इसी सिद्धाश्रम पर प्रलय के उपरान्त मनु और इड़ा ने पहली पहली बार आंख खोली थी और इस मनु तथा इड़ा के सम्बन्ध-साहचर्य से ही मनुष्य जाति का विस्तार हुआ ।

प्रकृति की यह विशेषता है, कि वह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में संतुलन बनाये रखती है, सर्दी है, तो उसके साथ साथ गर्मी भी, सूर्य की प्रखर रश्मियां है तो चन्द्रमा की शीतल किरणें भी, अन्याय अत्याचार और भौतिकता की तीव्रता है, तो सिद्धाश्रम के माध्यम से आध्यात्मिकता का आधार भी, और इस प्रकृति-संतुलन में पिछले कई हजार वर्षों से सिद्धाश्रम का महत्वपूर्ण योगदान रहा है ।

यह सिद्धाश्रम हिमालय के उत्तर-पश्चिम की ओर मीलों फैला हुआ भव्य और अद्वितीय आश्रम है, जो "ओजोन" रश्मियों से आच्छादित है फलस्वरूप उड़ते हुए वायुयान राकेट अथवा उपग्रह से इस आश्रम के फोटो नहीं लिये जा सकते, नंगी आंखों से इसे देखना भी सम्भव नहीं है, **'ओजोन' रश्मियों से आच्छादित होने की वजह से हर समय पूरे सिद्धाश्रम में दूधिया प्रकाश सा बिखरा रहता है, इस सिद्धाश्रम में मृत्यु का कोई चिन्ह नहीं है, यहां पर हजारों हजारों तरह के पुष्प अपने पूर्ण यौवन के साथ खिले रहते है, जिनकी सुगन्ध "अष्टगन्ध-सुगन्ध" मानी जाती है,** इसी से "अष्टगन्ध" शब्द का निर्माण हुआ और जो योगी और सन्यासी साधक और साधिकाएं इस सिद्धाश्रम में रहती है, या इससे सम्पर्कित है, उनके शरीर से भी यह अष्टगन्ध स्वतः प्रवहित होती है, पुराणों के अनुसार वशिष्ठ, विश्वामित्र वेद व्यास और अन्य योगियों के साथ साथ भगवान श्री कृष्ण के शरीर से भी बराबर अष्टगन्ध प्रवहित होती रहती थी जिसकी गन्ध से सम्मोहित हो कर गोपियां उनकी ओर खिंची आती थी ।

यहां पर हजारों वर्ष की आयु प्राप्त योगी और महर्षि विद्यमान है और हम उन्हें ठीक उसी प्रकार से

ओजोन परत

सितम्बर ८८ में यूरोप के बारह राष्ट्रों के वैज्ञानिकों ने संयुक्त राष्ट्रसंघ में एक जगह एकत्र हो कर चिन्ता प्रकट की कि सम्पूर्ण पृथ्वी पर जो ओजोन परत है वह विभिन्न उपग्रहों एवं प्रक्षेपास्त्रों की वजह से विरल हो रही है जिससे पृथ्वी का तापमान तेजी के साथ बढ रहा है।

ओजोन एक ऐसी परत है, जो पूरी पृथ्वी के ऊपर छाई हुई है और जो सूर्य की दाहक एवं तेज किरणों को स्वयं सोख लेती है, और उसका बहुत कम अंश ही पृथ्वी पर आने देती है, यदि ओजोन परत में छेद हो गये या यह परत विरल हो गयी तो सूर्य की दाहक किरणों को रोकने वाला कोई नहीं होगा और वे किरणें सीधी पृथ्वी पर आकर इतना अधिक तापक्रम बढ़ा देगी कि सारी नदियां जल स्रोत पेड़ पौधे आदि जल कर खाक हो जायेंगे।

सिद्धाश्रम पर इस ओजोन की ही दुहरी परत है, जिसकी वजह से सिद्धाश्रम पर चौबीसों घण्टे दूधिया प्रकाश बना रहता है, और मृत्यु की काली छाया सिद्धाश्रम पर नहीं पड़ती।

देख सकते है जिस प्रकार से हम भौतिक जीवन में एक दूसरे को देख सकते है, **आज भी वशिष्ठ, विश्वा-मित्र, गर्ग, अत्रि, कणाद, पुलस्त्य, जमदग्नि, कृपाचार्य, श्रीकृष्ण, शंकराचार्य, गोरखनाथ आदि योगियों और सन्यासियों को वहां पर देख सकते है उनसे बातचीत कर सकते है, उनके पास बैठ सकते है और अपने जीवन को पूर्णता एवं अद्वितीयता प्रदान कर सकते है।**

यह एक ऐसा आश्रम है जहां देवसरिता से निसृत सिद्धयोगा झील है जिसका पानी पूर्णतः निर्मल, स्वच्छ, शुद्ध, पवित्र और दिव्य है, अत्यन्त गहरी और विशाल प्राकृतिक इस झील का पानी इतना स्वच्छ है कि सैकड़ों फीट गहरी तलहटी में पड़े हुए सिक्के को भी ऊपर से खड़ा खड़ा आदमी देख सकता है, यहां तक कि उस पर अंकित अक्षर भी पढ सकता है, इससे ज्यादा स्वच्छता और क्या हो सकती है, इसके किनारे पर मरकत एवं स्फटिक से निर्मित प्राकृतिक नावें है जिसमें बैठ कर झील

में विहार किया जा सकता है, झील के किनारे सैकड़ों सन्यासी और योगी ध्यानस्थ है, साधना में संलग्न है, **सैकड़ों देवांगनाएं साधिकाएं और अप्सराएं सिद्धयोगा झील में किलोल करती रहती है, उनके कहकहे, उनकी मस्ती और उनकी हंसी पूरे सिद्धाश्रम के वातावरण को सुरभिमय सुखदायक और तृप्तिदायक बनाये रखती है, इतना होने पर भी किसी की आंख में कोई विकार गन्दगी**

असभ्यता और अश्लीलता नहीं है, इन सब से काफी ऊपर उठे हुए है ये लोग।

यहां पर सैकड़ों पर्ण कुटियां बनी हुई हैं, वहां पर योगी ध्यानस्थ एवं साधनारत हैं, यहां पर सर्दी गर्मी का कोई विपरीत प्रभाव नहीं है, चारों तरफ देखने पर ऐसा लगता है कि जैसे पूर्ण तपोवन हो, हिरण, खरगोश आदि पशु निश्चि. और निर्भीक हो कर विचरण करते रहते हैं, हिरणों की भोली आंखें जब टुकुर-टुकुर इन सन्यासियों को यज्ञ करते देखती है, तो एक आनन्द दायक वातावरण बन जाता है।

देवांगनाएं यहां पर धर्म चर्चा सुनने के लिए आती हैं, अद्वितीय अप्सराएं अपने पूर्ण शृंगार के साथ नृत्य कला प्रस्तुत करती हैं, और गन्धर्व अपनी संगीत लहरियों के माध्यम से पूरे सिद्धाश्रम को सुरभिमय बनाये रखते हैं, वास्तव में ही यह एक ऐसा स्थान है, जहां किसी प्रकार का कोई तनाव नहीं है, दुःख, दैन्य, अभाव, कष्ट, पीड़ा, चिन्ता या मृत्यु का परिचय नहीं है, यहां पर आनन्द, मस्ती, तन्मयता और पूर्णता का वातावरण है।

आज भी भारतवर्ष में कुछ सन्यासी और गृहस्थ योगी विद्यमान हैं, जो सिद्धाश्रम संस्पर्शित हैं, जो अपने सूक्ष्म शरीर से या सशरीर सिद्धाश्रम जाने, वहां मन चाहे समय तक रहने और वापिस आने की क्षमता रखते हैं, पूरे विश्व के भौतिक और आध्यात्मिक सन्तुलन को बराबर बनाये रखने के लिए सिद्धाश्रम समय समय पर ऐसे योगियों को गृहस्थ जीवन में भेजता रहता है, जिससे कि उनके माध्यम से आध्यात्मिकता का वातावरण बन सके, लोग सत्य-पथ पर अग्रसर हो सकें, और इस संसार में आध्यात्मिक जीवन बना रह सके।

पर जिन्हें बुद्धि का अजीर्ण हो गया हो, जो अपनी मूर्खता को ही सब कुछ समझ बैठे हों, उनको तो विधाता भी नहीं समझा सकता, भर्तृहरी ने अपने एक श्लोक में कहा है कि "सूर्य तो ठीक समय पर उगता ही है, पर यदि उल्लू उसे न देख सके तो इसमें सूर्य का क्या दोष ?" होना तो यह चाहिये कि हमारे जीवन में यदि ऐसे योगी विद्यमान हैं तो हम उनसे सम्पर्क स्थापित करें, उनके पास बैठें, उनसे बातचीत करें और उनके

ज्ञान का लाभ उठाते हुए, हम स्वयं इसके योग्य बनें, कि हम सशरीर सिद्धाश्रम जा सकें, और वहां की उस देवभूमि, तपस्या भूमि को स्पर्श कर सके, उन योगियों के दर्शन कर सकें, और उनके चरणों में बैठ कर अपने जीवन को पूर्णता दे सकें, अस्तु।

"सिद्धाश्रम" शब्द जितना भारतवर्ष के लिए परिचित है लगभग उतना ही पश्चिम के लिए भी परिचित है, मैं पिछली बार जब यूरोप और अमेरिका की यात्रा पर गया तो मुझे यह जान कर सुखद आश्चर्य हुआ

कि उनकी विचारधारा उनका चिन्तन सिद्धाश्रम के प्रति है, वे यह जानते हैं कि ऐसे दिव्य आश्रमों पर वायुयान से

नही जाया जा सकता, ऐसे आश्रमों में यह गन्दी मलीन और दूषित देह को ले कर भी नहीं पहुँचा जा सकता, इसके लिए अपने आप में परिवर्तन लाना होगा, उस आश्रम के अनुकूल अपने आप को बनाना होगा, और यह विचारधारा गहराई तक पश्चिम के दिल और दिमाग में है।

आइन्स्ट्राइयन आधुनिक विज्ञान के पितामह है और पश्चिम के वैज्ञानिक उन्हें अत्यन्त सम्मान और आदर के साथ देखते है एक प्रकार से देखा जाय तो आइन्स्ट्राइयन पूर्णतः पाश्चात्य ऋषि है उनका दिव्य और तेजस्वी चेहरा आंखों में करुणा और दया के भाव, सिर पर बिखरे हुए श्वेत केश और दुबली पतली पवित्र काया को देखकर ऐसा ही लगता है कि जैसे कोई भारतीय ऋषि ने पश्चिम में जन्म ले लिया हो, एक ऐसा व्यक्तित्व जो भौतिकता से पूर्णतः परे है, जिसके हृदय में दया, ममता करुणा, प्रेम और स्नेह का सागर लहरा रहा है जो अत्यन्त सादगी पूर्ण जीवन व्यतीत करता हुआ, प्रकृति के उन रहस्यों को बराबर खोलता रहा है, जो अभी तक अज्ञात रहे है।

आइन्स्ट्राइयन ही पश्चिम का वह पहला व्यक्तित्व था जिसने अणु जैसे सूक्ष्म कण के टुकड़े कर परमाणु बना कर विश्व को दिखा दिया था, कि ऐसा भी संभव है, आइन्स्ट्राइयन ने परमाणु की जो थ्योरी बनाई, उसके बारे में पश्चिम के वैज्ञानिक आज भी यह कहते है, कि उनकी थ्योरी को समझने वाले केवल तीन व्यक्ति है, एक तो आइन्स्ट्राइयन स्वयं, दूसरे उसकी मां, और तीसरा अभी तक कोई नहीं हुआ, शायद कोई वैज्ञानिक हो जो उसकी थ्योरी को समझ सके, वास्तव में ही आइन्स्ट्राइयन प्रखर मेधावी और अद्वितीय व्यक्तित्व के धनी थे।

परन्तु वृद्धावस्था में आते आते आइन्स्ट्राइयन का रुझान भारत की तरफ हो गया था, और भारतीय शास्त्रों में वे पूरी तरह से डूब गये थे, उन्होंने कहा था कि हमारे विज्ञान का आधार भारतीय शास्त्र हैं, और विज्ञान के आगे जो कुछ हैं, वह "पराविज्ञान" है जिसको समझने के लिए प्रकृति के अत्यन्त सूक्ष्म रहस्य तक जाना होगा, जहां विज्ञान थक जाता है, वहीं पर पराविज्ञान का प्रारम्भ होता हैं।

उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "अबोव साइन्स" में बताया है कि जीवन की पूर्णता विज्ञान से उपर उठने में ही है, वे उस रहस्य को खोजने में लगे थे, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने अन्तर्मन तक पहुंच कर अपने सूक्ष्म शरीर का अलग से निर्माण कर सकता है, और उस सूक्ष्म शरीर के माध्यम से पूरे ब्रह्माण्ड में कहीं पर भी विचरण कर सकता हैं, उन्होंने अपनी इस पुस्तक में स्पष्टता के

साथ कहा कि मानव इसलिए ठोस है क्योंकि वह भूमि तत्व से आबद्ध है, जिस दिन वह भूमि तत्व की गिरफ्त से छूट जायेगा, उस दिन वह अपने सूक्ष्म शरीर को स्वयं देख सकेगा, उसने कहा कि जिस प्रकार से अणु के टुकड़े संभव है, उसी प्रकार मानव अपने शरीर से भूमि तत्व या जल तत्व को अलग कर सकता है ऐसा होने पर वह पूर्णतः वायु तुल्य बन जाता है, और उस वायु में ही वह एक मिनट में पूरी पृथ्वी के तीन चक्कर लगाने में समर्थ हो सकेगा।

आइन्स्ट्राइयन के जीवनी लेखक मि० आर० एच० ब्रू ने अपनी पुस्तक "आइन्स्ट्राइयन पर्सनलिटी" में कहा है

कि आइन्स्ट्राइयन धीरे धीरे इस दिशा में कार्य करने लगे थे, और जो शोध, जो परीक्षण और जो प्रयोग वे कर रहे थे उससे उनकी यह धारणा पुष्ट हो गयी थी कि शरीर से भूमि तत्व को अलग करना सहज संभव हैं, और ऐसा करके व्यक्ति अपने सूक्ष्म शरीर से पृथ्वी के किसी भी स्थान पर कभी भी किसी भी क्षण जा सकता हैं और वापिस अपने पूर्ण स्वरूप में आ सकता हैं, यही नहीं अपितु वे इस प्रयोग के अत्यन्त निकट तक पहुँच गये थे, कि यदि शरीर से भूमितत्व और अग्नि तत्व को अलग कर दिया जाय तो मानव अपने वर्तमान शरीर से ही पृथ्वी के अलावा अन्य लोकों यथा चन्द्रलोक, पाताल लोक, वरुणलोक आदि में जा सकता है ।

मि० आर० एच० ब्रू ने आंखों देखी घटना को स्पष्ट करते हुए कहा कि आइन्स्ट्राइयन अपनी प्रयोगशाला में कार्य कर रहे थे, और मैं बाहर खड़ा खड़ा शीशे से देख रहा था, कि वे मुझे अन्दर बुलावे तो मैं पुस्तक लेखन का कार्य आगे बढाऊं ।

तभी मैंने देखा कि आइन्स्ट्राइयन ठीक उसी प्रकार से बैठ गये जिस प्रकार से भारतीय योगी अपने आसन पर बैठते है उनके शरीर से एक छोटा सा सूक्ष्म शरीर निकलता हुआ, स्पष्ट दिखाई दिया जो उनके पास ही खड़ा था, और मैंने दूसरे ही क्षण देखा कि कमरे में न तो आइन्स्ट्राइयन थे, और न उसका सूक्ष्म शरीर ही; निश्चित ही वे जिस थ्योरी पर काम कर रहे थे, अपने उस प्रयोग में उन्होंने सफलता प्राप्त कर ली थी ।

"ब्रू" ने अपनी पुस्तक में आगे लिखा है कि मैं कमरे में गया पर उस आसन पर कोई नहीं था, कमरा बिल्कुल

सूक्ष्म शरीर

भारत का सारा चिन्तन इस बात पर है कि व्यक्ति को अपने अन्तर्मन में प्रवेश कर पूर्णता प्राप्त करनी चाहिए, क्योंकि सारा ब्रह्माण्ड उसके अन्दर ही निहित है, भगवान श्री कृष्ण ने महाभारत युद्ध के समय अर्जुन को अपना मुंह खोल कर बता दिया था कि सारा ब्रह्माण्ड तो उनके भीतर ही है ।

इस अन्तर्मन में प्रवेश करने की क्रिया को ही "सूक्ष्म शरीर" कहा जाता हैं, इस प्रकार की स्थिति प्राप्त कर व्यक्ति अपने सूक्ष्म शरीर को स्वयं देख सकता है, जो कि वास्तव में ही उसका लघु संस्करण ही होता हैं, यह सूक्ष्म शरीर सभी तत्वों – भूमितत्व, जल तत्व, अग्नि अत्व आकाश तत्व और वायु तत्व-से परे हो कर पूरे ब्रह्माण्ड में कहीं पर भी किसी भी समय विचरण करने में समर्थ होता हैं, और जब चाहे, तभी यह सूक्ष्म शरीर पुनः स्थूल शरीर में परिवर्तित हो सकता हैं ।

रूस के प्रसिद्ध वैज्ञानिक ब्लादीमोर की महत्वपूर्ण पुस्तक "सोल एण्ड सोल" के छपते ही रूस और अमेरिका में सनसनी सी फैल गई, जिसमें ब्लादीमोर ने चित्रों और वीडिओ फिल्म के माध्यम से यह स्पष्ट कर दिया कि कुछ विशेष क्रियाओं के द्वारा अपने शरीर को सूक्ष्म शरीर में परिवर्तित किया जा सकता है, और उस सूक्ष्म शरीर को पृथ्वी के किसी भी कोने पर किसी भी क्षण कभी कुछ ही सैकण्डों में भेजा जा सकता है, और बुलाया जा सकता है, ब्लादीमोर ने इस रहस्य को

खाली था, जबकि एक सैकेण्ड पहले वहां आइन्स्ट्राइयन विद्यमान थे, मेरे लिए यह अत्यन्त आश्चर्यजनक घटना थी, मैंने कमरे की सारी बत्तियां लगा ली, पर निश्चय ही कमरे में कोई नहीं था ।

मैंने बत्तियां बुझा कर हलका सा प्रकाश लेम्प लगा कर पुनः बाहर आ कर कुर्सी पर बैठ गया, मैं शीशे के पार कमरे में होने वाली गतिविधियों को देख रहा था, आधे घण्टे के बाद मैंने देखा कि आइन्स्ट्राइयन का वही सूक्ष्म शरीर, जो मुश्किल से एक फीट होगा आसन पर बैठ गया और दूसरे ही क्षण वह एक फीट का सूक्ष्म शरीर पूरे आइन्स्ट्राइयन के शरीर में परिवर्तित हो गया, उस समय मेरे वही चिरपरिचित आइन्स्ट्राइयन कमरे में अपने आसन पर बैठे हुए थे ।

मैंने दरवाजा ठकठका कर अन्दर आने का संकेत देते हुए कमरे के अन्दर घुसा तो आइन्स्ट्राइयन मुस्करा रहे थे उन्होंने कहा—ब्रू ! आज मैं अपने उद्देश्य में सफल हो गया और मैं जिस थ्योरी पर कार्य कर रहा था, उसमें सफलता पा ली, अब मेरा उद्देश्य सिद्धाश्रम जाने का है ।

यह सब मेरे लिए सर्वथा नया था, जब मैंने इसके बारे में कुछ प्रश्न किये तो उन्होंने उत्तर दिया कि पूरे संसार का वह प्रारम्भिक और अद्वितीय आश्रम है, जो कि अपने आप में पूर्ण है, जीवन की पूर्णता इसी में में है कि व्यक्ति सशरीर सिद्धाश्रम जा सके ।

और ब्रू के अनुसार आइन्स्ट्राइयन ने सिद्धाश्रम जाने के बारे में प्रयोग और परीक्षण प्रारम्भ कर दिये, एक दिन उन्होंने मुझे बताया कि अपने शरीर को सूक्ष्म करके

विस्तार से अपनी पुस्तक में स्पष्ट किया है और विडियो फिल्म में यह प्रामाणिकता के साथ स्पष्ट कर दिया है ।

ऐसे ही परीक्षण जर्मनी में भी पिछले कई वर्षों से हो रहे हैं, जर्मनी के पैरा साइंस के अध्यक्ष विच्रैव ने समस्त वैज्ञानिकों के सामने अपने सूक्ष्म शरीर का प्रदर्शन कर और उस सूक्ष्म शरीर को हजारों मील दूर भेज कर वहां से वस्तु ला कर और पुनः पूर्ण शरीर में परिवर्तित हो कर यह बता दिया कि इस क्षेत्र में जर्मनी सबसे आगे है ।

इस समय पूरे यूरोप और अमेरिका में इस विद्या पर तीव्रता के साथ काम हो रहा है, अमेरिका ने तो इसके लिए अलग से विभाग खोल दिया है, और इतना अधिक फण्ड इसके लिए कायम किया गया है कि जो उसके रक्षा बजट का दसवां हिस्सा है, रूस के वैज्ञानिक लादीनितोवा ने लगभग ८० वैज्ञानिकों के सामने अपने सूक्ष्म शरीर का प्रदर्शन करते हुए सूक्ष्म शरीर के माध्यम से मंगल लोक तक पहुंच कर वहां की मिट्टी और चट्टान के टुकड़े ला कर सबके सामने रख दिये, और प्रयोगशाला में जब इस धूल और चट्टान के टुकड़ों का विश्लेषण किया गया तो वे प्रामाणिक उतरे, वैज्ञानिकों ने माना कि वास्तव में ही यह मंगल ग्रह कीं भूमि के ही चट्टान के टुकड़े हैं ।

पर इससे यह तो सिद्ध हो ही गया, कि वर्तमान में व्यक्ति अपने सूक्ष्म शरीर को किसी भी लोक में ले जा सकता है और वहां से वापिस लाया जा सकता है ।

कुछ निश्चित साधनाएं सम्पन्न करके ही सिद्धाश्रम में पहुँचा जा सकता है, और मैं उन साधनाओं को सम्पन्न करने में लगा हूँ और सफलता के अत्यन्त निकट हूँ, मैं किसी भी क्षण सिद्धाश्रम पहुँच सकता हूँ, और ऐसा कहते कहते वे प्रसन्नता से भर गये, ऐसा लगा कि जैसे उन्होंने जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य प्राप्त कर लिया हो, मैंने ऐसा मुस्कराता हुआ प्रसन्नतापूर्ण चेहरा पहली बार देखा था।

पर इसके बाद आइन्स्ट्राइयन ज्यादा जीवित न रह सके, जीवन के अंतिम दिनों में वे सूक्ष्म शरीर और सिद्धाश्रम पर एक पुस्तक लिख रहे थे, जिसमें, प्रकृति के इन रहस्यों को भेदने की क्रिया समझाई थी, उनकी मृत्यु के बाद उनकी यह अधूरी पुस्तक यूरोप में "आइन्स्ट्राइयन थ्योरी" के नाम से प्रकाशित हुई, जिसमें उन्होंने संसार के वैज्ञानिकों को चेतावनी देते हुए लिखा है कि मैंने अणु के टुकड़े कर परमाणु की रचना कर संसार को विनाश की ओर धकेला है क्योंकि परमाणु बम पूरे विश्व को समाप्त करने की ओर ही अग्रसर है, पर विज्ञान से आगे ही पूर्णता सत्यता और श्रेयता है, जिसके माध्यम से मानव अपने सूक्ष्म शरीर का निर्माण कर सकता है और सशरीर पृथ्वी लोक में कहीं पर भी और पूरे ब्रह्माण्ड में विचरण कर सकता है।

उन्होंने अपनी बात को जारी रखते हुए लिखा है कि यदि मुझे प्रभु ने थोड़ा बहुत भी और जीवन दिया तो मैं अपने जीवन काल में ही सिद्धाश्रम जाना चाहता हूं जो कि मानव जीवन का अन्तिम लक्ष्य और ध्येय है, मैंने सूक्ष्म शरीर निर्माण और उसके विचरण करने के सिद्धान्त का पता लगा लिया है, मैंने उन साधनाओं को भी सम्पन्न कर लिया है जिसके द्वारा सिद्धाश्रम पहुँचा जा सकता है, और मेरे जीवन का वह अद्वितीय क्षण होगा, जब मैं सिद्धाश्रम में होऊंगा।

पर मृत्यु ने असमय में ही पश्चिम के ऋषि आइन्स्ट्राइयन को छीन लिया परन्तु उनके उपरोक्त शब्दों में वैज्ञानिकों को और उनके दिमागों को झनझना कर रख दिया कि विज्ञान के आगे ही पूर्णता है, जीवन का अंतिम उद्देश्य ही सिद्धाश्रम प्राप्ति है जीवन का लक्ष्य इनको प्राप्त कर असीम अखण्ड ब्रह्मानन्द में लीन हो जाना है। ○

पराविज्ञान और सिद्धाश्रम से सम्बन्धित पश्चिम में प्रकाशित ग्रन्थ

पश्चिम के उच्च कोटि के वैज्ञानिकों और चिन्तकों ने आइन्स्ट्रायइन के बाद उनकी थ्योरी को समझने का गम्भीर प्रयास किया है, उन प्रतिष्ठित विद्वानों के द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ –

१. आइन्स्ट्राइयन : थॉट्स एण्ड आइडिया – मि० आर० एच० ब्रू,
२. आइन्स्ट्राइयन ए पर्सनलिटी – मि० आर० एच० ब्रू
३. बॉडिलेस सोल – मि० विजकिन
४. सिद्धाश्रम ए ह्यूमन गोल – मिस० क्रानविन
५. आइन्स्ट्राइयन : ए बॉडीलेस थॉट – मि० डी० ऐवन
६. सिद्धाश्रम ए अबनॉरमल गोल – डॉ० सी० एलनिन
७. द सर्व फॉर दी सिद्धाश्रम – मि० डिलनौवा
८. आफ्टर साइन्स – मिस० रोजा कुलशिवा
९. सिद्धाश्रमा'ज योगी – रिचर्ड ब्रन

१ मार्च

तन्त्र दिवस

जो पूरे विश्व में मनाया जाने लगा है

१ मार्च, जिसे **"तन्त्र-दिवस"** के रूप में पूरा विश्व मना रहा हैं, प्रकृति का यह नियम है, कि कोई भी ज्ञान उपर उठता हुआ जब अन्तिम बिन्दु को छू लेता है, तो फिर नीचे उतरना शुरू करता है, और जो ज्ञान-विज्ञान किसी कारणवश नीचे गिरा हुआ होता है, वह वापिस ऊपर उठने लगता है, प्रकृति का यह सर्पाकार वर्तुल एक नियम है जो अनादिकाल से चल रहा है।

एक समय ऐसा था जब तन्त्र पूरे विश्व में सर्वोपरी

था महाभारत का पूरा युद्ध तन्त्र के माध्यम से ही लड़ा गया, भगवान श्री कृष्ण को उस समय में भी 'जगद्गुरु' और "सर्वश्रेष्ठ तांत्रिक" कहा गया, रावण ने तन्त्र के माध्यम से ही समस्त विज्ञान को ग्रौर प्रकृति को अपने अधीन कर रखा था, महाभारत युद्ध में दुर्योधन, द्रोणाचार्य, भीष्मपितामह ग्रौर पांडवों ने सारी व्यूह रचना तन्त्र के आकार से की, और तांत्रिक शक्तियों के प्रयोग से अपनी हार को भी विजय में परिवर्तित कर दिया, गुरू गोरखनाथ ग्रौर शंकराचार्य तक यह तन्त्र-प्रक्रिया अपने पूर्णता के साथ गतिशील थी, पर वह समय तन्त्र का सर्वोच्च बिन्दु था और फिर धीरे धीरे तन्त्र नीचे गिरता गया ग्रौर नोचे गिरा हुआ विज्ञान ऊपर की ओर उठने लगा।

पिछले २५०० वर्षो से निरन्तर विज्ञान ऊपर की ओर उठता गया १९१४ में प्रारम्भ हुआ प्रथम विश्व युद्ध विज्ञान द्वारा ही लड़ा गया, दूसरे विश्व युद्ध तक विज्ञान तेजी के साथ ऊपर की ओर उठता गया और तन्त्र नीचे की ओर खिसकता गया, वर्तमान समय में विज्ञान अपने अंतिम बिन्दु को स्पर्श कर रहा है, **पर मैं देख रहा हूं कि पिछले पन्द्रह वर्षो से पुनः तन्त्र ऊपर उठ रहा है, और विज्ञान के प्रति लोगों की आस्थाएं कम होने लगी है, रूस, अमेरिका, इंगलैण्ड, जर्मनी और जापान आदि देश भी इस बात को अनुभव करने लगे है कि विज्ञान के माध्यम से तो सम्पूर्ण संसार का सर्वनाश निश्चित है, इसकी अपेक्षा तो यदि पुनः तन्त्र का सहारा लिया जाय तभी यह संसार सर्वनाश से बच सकता है, तन्त्र के माध्यम से ही जीवन में पूर्णता और सफलता आत्मिक शान्ति और ब्रह्मत्व अनुभव हो सकता है, जापान के प्रसिद्ध वैज्ञानिक हिरोयाता ने पिछली विज्ञान कान्फ्रेन्स में स्पष्ट रूप से चेतावनी देते हुए कहा था कि "यदि हम अपनी आगे की पीढी को बचाना चाहते है तो यह तन्त्र के द्वारा ही सम्भव है, यदि हम खिले हुए पुष्प हरी भरी प्रकृति और विश्व सौन्दर्य को अक्षुण्ण बनाये रखना चाहते है तो यह तन्त्र के माध्यम से ही सम्भव है, तन्त्र ही हमें जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्णता प्रदान कर सकता है।**

रूस के प्रसिद्ध वैज्ञानिक इवानोव ने तन्त्र की व्याख्या करते हुए कहा है, कि यह जादूगिरी चमत्कार या हाथ की सफाई नहीं है, यह तो अपने शरीर की शक्तियों को पूर्णता प्रदान करने की क्रिया है, मानव शरीर में ग्रनन्त संभावनाएं है, ग्रसीम शक्तियां है, हम इन शक्तियों में से केवल एक प्रतिशत से ही परिचित हो सके है, **इन शक्तियों को उजागर करना उन्हें समझना और उनके माध्यम से पूर्णता प्राप्त करना ही तन्त्र है।**

अमेरिका के प्रसिद्ध वैज्ञानिक और विज्ञान अकादमी के अध्यक्ष मि० जे० वी० ब्रेवे ने विज्ञान ग्रकादमी के अध्यक्ष पद से बोलते हुए कहा कि "अभी तक विज्ञान ने ग्रणु परमाणु बम या जो कार्य किये है, उन सब का भली प्रकार से सामना तन्त्र के माध्यम से कर सकते है, **जब शरीर की आन्तरिक शक्ति और ऊर्जा का संघर्ष "मन्त्र" से करते है, तो इन दोनों की टकराहट से "प्राण--ऊर्जा" पैदा होती है, जिसकी चिनगारी भी हजार-हजार परमाणु बमों से भयानक होती है, इस प्राण ऊर्जा को रचनात्मक गति देना और इसका उपयोग करना तथा इसके माध्यम से विश्व को सुख, सौन्दर्य और पूर्णता देना ही तन्त्र है।**

इंगलैण्ड के वैज्ञानिक ब्रिदलाव ने विज्ञान संस्थान के अध्यक्षीय पद से बोलते हुए बताया कि इस समय पूरा विश्व, युद्ध के कगार पर बैठा हुआ है, कभी भूल वश भी एक छोटी सी चिनगारी लग गई तो कुछ ही मिनटों में यह सारा विश्व समाप्त हो जायेगा, न हमारी सभ्यता रहेगी और न हमारी संस्कृति, न हमारी वैज्ञानिक उपलब्धि रहेगी ग्रोर न जीवन का सौन्दर्य ही, **जो कुछ हम विज्ञान के माध्यम से प्रगति कर रहे हैं, उससे ज्यादा प्रगति तो तन्त्र के माध्यम से सम्भव है, जो कुछ हमने अब तक प्रगति की है, वह तन्त्र में पहले से ही विद्यमान है, विज्ञान जहां विनाश पथ की ओर अग्रसर है, वहीं तन्त्र**

रचनात्मक और आनन्द पथ पर अग्रसर हैं, आने वाला समय तन्त्र को ही समर्पित रहेगा।

इन सब उच्चकोटि के वैज्ञानिकों की धारणा के पीछे आधारभूत तथ्य है, उन्होंने तन्त्र के अलग अलग पहलुओं को छुआ है, परखा है, देखा है, और अनुभव किया है कि तन्त्र के माध्यम से वह सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है, जो विज्ञान के द्वारा प्राप्त हो रहा है, २१वीं शताब्दी पूर्ण रूप से तन्त्र को ही समर्पित होगी और इसीलिए पूरा विश्व १ मार्च को "तन्त्र दिवस" के रूप में मना रहा है, और २४ फरवरी से १ मार्च तक के समय को "तन्त्र सप्ताह" मान कर तन्त्र के क्षेत्र में नवीन उपलब्धियां, नवीन शोध प्राप्त कर रहा है।

मानव शरीर में तीन विशेष शक्तियां है, और इन तीनों का परस्पर सम्बन्ध ही पूर्णता प्रदान कर सकता है अन्तःकरण की भाव शक्ति का यन्त्र से, मनःशक्ति का तन्त्र से और प्राण शक्ति का मन्त्र से सम्बन्ध होता है, इन तीनों के परस्पर सम्बन्ध से शरीर में बाह्य और आन्तरिक दोनों शरीरों में परस्पर घर्षण प्रारम्भ होता है और इससे घार्षणिक तथा धारावाहिक दोनों ही प्रकार की विद्युत उत्पन्न होती है घार्षणिक विद्युत का उत्पादन शरीर करता है और धारावाही विद्युत का उत्पादन मस्तिष्क, वैज्ञानिकों के अनुसार मन्त्र दीक्षा में इन दोनों ही प्रकार की विद्युत का समवेत–गुणित प्रयोग होता है, जिसके द्वारा असंभव कार्य संभव हो जाते है, जिनको आज चमत्कार कहा जाता है, वह तो मात्र मानव शरीर स्थित इन दोनों ही प्रकार की विद्युतों का समवेत-गुणित प्रतिफल है।

जब हम तन्त्र को समझने की कोशिश करते है तो मन्त्र और यन्त्र को अलग नहीं रख सकते, साधना के लिए जो सामग्री अपेक्षित होती है, उनकी व्यवस्था करना और उनका उपयोग करना "यन्त्र" है, उस साधना को व्यवस्थित तरीके से संचालित करना 'तन्त्र' है, और उसमें निहित शब्दों का उच्चारण करना 'मन्त्र' है, इस प्रकार उस विशेष प्रकार के मन्त्रों का उच्चारण-प्रभाव सामग्री पर पड़ता है, और उससे जो प्राण ऊर्जा विद्युत प्रवाहित होती है, वह मनोवांछित कार्य सिद्धि में सहायक होती है।

विश्व में जिन तन्त्रों का प्रयोग और उपयोग ज्यादा होने लगा है, वे निम्न है–

१- प्राण-शक्ति

जिसके द्वारा साधक अपने शरीर में से सूक्ष्म प्राणों को अलग से रूप दे कर उसके माध्यम से पूरे विश्व में कहीं पर भी विचरण करना और पुनः शरीर में लीन कर देना।

२- आत्म-शक्ति

जिसके माध्यम से शरीर स्थित सभी चक्रों को जाग्रत करते हुए, दूसरे के मन की बात को जान लेना स्वयं के या किसी के भी आगे के वर्षों में होने वाली घटनाओं को पहिचान लेना और उसके जीवन में जो घटनाएं घटित हो चुकी है, उनको चित्र की तरह देख लेना और समझ लेना।

३- सम्मोहन शक्ति

जिसके माध्यम से किसी भी पुरुष या स्त्री को पूर्ण रूप से सम्मोहित कर देना और उसके विचारों को उनकी भावनाओं को अपने अनुकूल बना लेना, फोटो या चित्र के द्वारा भी इस क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर लेना।

४- आकाश गमन शक्ति

जिसके द्वारा अपने प्राणों को परावर्तित कर सूक्ष्म प्राण से वायु वेग से किसी भी स्थान पर जाना और पुन. अपने मूल शरीर में लौटना।

५- सौन्दर्य शक्ति

हिरण्य गर्भ पद्धति से अपने प्राणों में विशेष प्रकार

की ऊर्जा का संचयन करना और उसके द्वारा असौन्दर्य को सौन्दर्य में परिवर्तित कर देना ।

६- मनःशक्ति

जिसके द्वारा मन को सूक्ष्म आकार दे कर पूरे ब्रह्माण्ड में फैला देना और हजारों मील दूर बैठे हुए व्यक्ति को समाचार देना या संवाद प्राप्त करना तथा उसके मानस को अपने अनुकूल बना लेना ।

७- ज्वलन शक्ति

जिसके द्वारा आंखों में सूर्य से करोड़ों गुना तेज विद्युत उत्पन्न कर इस्पात को भी पिघला देना या वायुयान को नीचे उतारने के लिए बाध्य कर देना अथवा श्राप या वरदान देने की क्षमता प्राप्त कर लेना ।

इस तन्त्र सप्ताह में इन सातों प्रकार की शक्तियों को प्राप्त करने के लिए प्रयत्न एवं प्रयोग प्रारम्भ किये जा सकते है, हो सकता है कि पहली या दूसरी बार में सफलता मिल जाय न भी मिले, **विश्व के अन्य उन्नत देशों ने भी धैर्यपूर्वक कई वर्षो तक इन क्षेत्रों में प्रयत्न और प्रयोग किये है, और तब जाकर उन्हें सफलता मिली है, पर जो सफलता मिली है, वह अपने आप में अद्वितीय है, जिनको वे 'प्रयोग' नाम से सम्बोधित करते है, भारतवर्ष में उसे 'साधना' कहा जाता है, और साधना के द्वारा यदि साधक निरन्तर इस प्रकार की शक्तियों को प्राप्त करने की ओर प्रयत्नशील हो तो निश्चय ही उन्हें सफलता मिल सकती हैं ।**

पूरा विश्व इस समय एक संक्रमण काल से गुजर रहा हैं, पूरा विश्व एक नयीं करवट ले रहा हैं, विश्व के वैज्ञानिक गम्भीरतापूर्वक उपरोक्त तन्त्रों का प्रयोग और उपयोग करने के लिए प्रयत्नशील हैं और इससे उन्हें अभी तक जो सफलता मिली हैं, उससे वे आश्चर्यचकित हैं, इन प्रयोगों (या साधनाओं) से प्राप्त सफलताओं को देखकर ये वैज्ञानिक आश्चर्यचकित रह गये है, इन शक्तियों की असीम संभावनाओं और उपलब्धियों को अनुभव कर वे रोमांच अनुभव कर रहे है, उन्हें यह विश्वास होने लगा है कि विना कुछ भी व्यय किये बहुत कुछ प्राप्त किया जा सकता है, इस प्रकार की शक्तियों

विश्व में प्राचीन विद्याओं को पुनर्स्थापित करने में संलग्न
पूज्य श्रीमाली जी

को प्राप्त करने से अभी तक व्यक्ति का जो आन्तरिक प्राणतत्व समझ से परे था, उसे समझने की कोशिश हो रही है, इससे राकेटों प्रक्षेपास्त्रों और बमों पर जो लाखों करोड़ों डालर व्यय हो रहे है, वे बच जायेंगे और उनका उपयोग मानव जाति को ज्यादा सुखी, सफल और सम्पन्न करने के लिए होगा ।

भारतवर्ष को भी चाहिए कि वह अभी से विश्व में होने वाले परिवर्तन को अनुभव करें, साधकों को चाहिये कि उनकी पृष्ठभूमि साधनात्मक है, वे पिछले कुछ वर्षों से प्रयत्न कर रहे है, उनको साधना या मन्त्र अथवा सिद्धि के बारे में ज्ञान है, आवश्यकता है, पूर्ण विश्वास और धैर्य के साथ इस विज्ञान को समझने की, और बिना किसी आलोचनाओं की परवाह किये इस क्षेत्र में प्रवृत्त होने की, और निरन्तर इसके बारे में प्रयत्न करने की, तो अवश्य ही वे इस क्षेत्र में श्रेष्ठता और सर्वोच्चता प्राप्त कर सकेंगे ।

वह आँखों से इस्पात पिघलाता है

चमत्कार तो वह कहलाता है, जो हाथ की सफाई को या आँखों को भ्रमित करता हो, परन्तु यह तो बिल्कुल सत्य और अपनी इन आँखों से देखी हुई घटना है, वह भी कोई बहुत वर्ष पहले की बात नहीं, अभी ताजी घटना है ।

मैं "भारत के तंत्र और तांत्रिक" विषय पर शोध कार्य कर रहा हूं, और मेरी इच्छा है कि इस विषय पर डॉक्टरेट की डिग्री प्राप्त करूं, परन्तु मेरे जीवन का मकसद यह रहा है कि मैं अपनी लेखनी से प्रामाणिक तन्त्र और तांत्रिकों को अङ्कित करूं, अपने कैमरे से उन दृश्यों को पूर्णता के साथ लोगों के सामने रखूं जिससे कि वे विश्वास कर सकें और इसके लिए मैं लगभग पूरे भारत वर्ष में घूम चुका हूं ।

१८ मई १९८६ मात्र दो वर्ष पहले की बात है, मैं नैनीताल के "अंकुर" होटल में ठहरा हुआ था, मुझे कहीं से जानकारी मिली थी कि भीमताल के पास कोई योगी रहते हैं, जो बिल्कुल नंग धड़ंग अवस्था में बेपरवाह अपनी मस्ती के आलम में विचरण करते रहते हैं, परन्तु

तन्त्र के क्षेत्र में अत्यन्त पहुँचे हुए व्यक्ति हैं, और उन्हें कई तन्त्र सिद्ध हैं, मैं उनकी खोज में नैनीताल पिछले दस बारह दिनों से रुका हुआ था, और दो बार भीमताल के चक्कर भी लगा चुका था ।

नैनीताल अत्यन्त सुन्दर हिल स्टेशन है, गर्मियों में तो सैकड़ों हजारों सैलानी नैनीताल में घूमने के लिए या कुछ दिनों के लिए विश्राम करने के लिए आते हैं, इन दिनों बड़ी गहमा गहमी थी, मैं रोज शाम को नैनीताल की झील के किनारे किनारे घूमने निकल जाता था, और दो तीन घण्टे घूमने के बाद किसी भोजनालय में भोजन कर लेता और फिर होटल में आ कर सो जाता ।

वहीं एक कुली से मेरी भेंट हो गई, उसका नाम शेरजंग था, वह नेपाल की तरफ का था, परन्तु उसे नैनीताल और उसके आस पास की पहाड़ियों के चप्पे चप्पे का ज्ञान था, मैं उसको अपने साथ रखता,, कई बार वह नेपाल की तरफ की ऐसी ऐसी बातें बताता कि मुझे विश्वास ही नहीं होता, परन्तु उसे बात करने का ढंग आता था और वह बात इतनी सुन्दरता के साथ कहता कि सुनने को जी बना रहता ।

उस दिन जब मैं उसके साथ घूमने निकला तो उसने कहा, बाबूजी ! आप तो तांत्रिकों के चक्कर में पड़े हैं, वे तो भगवान होते हैं, और सारी प्रकृति को अपनी मुट्ठी में बांध कर रखते हैं, पर इन दिनों कौसानी में एक तांत्रिक आये हैं, बड़े जबरदस्त तांत्रिक हैं, वे, वे दिन को आदमी बने रहते हैं, और रात को मन चाहा रूप धारण कर लेते हैं, बड़ी बात तो यह है कि वे अपनी आँखों से लोहे को पिघला कर पानी बना देते हैं, और उड़ते हुए हवाई जहाज को अपनी आँखों की ताकत से रोक देते है, बड़े सिद्ध योगी हैं, वे -:- और कहते कहते उसने उस अज्ञात तांत्रिक के प्रति हाथ जोड़ दिये और वहीं पर सड़क के किनारे घुटने टेक कर नमाज की मुद्रा में जमीन पर सिर टेक कर प्रणाम कर लिया ।

वज्रेश्वर जी महाराज

वज्रेश्वर जी उच्च कोटि के तांत्रिक है, और उन्हें असीम सिद्धियां प्राप्त है, इस घटना के बाद जब मैंने प्रेस ट्रस्ट को इन्टरव्यू दिया तो अगले साल कई संवाददाता और वैज्ञानिक नीलाउत गये, और उन्होंने स्वामी जी से भेंट की, उनके सामने भी स्वामी जी ने बता दिया कि आंखों की शक्ति के द्वारा तीव्र दाह उत्पन्न की जा सकती है, और इसके माध्यम से पत्थर की चट्टान के टुकड़े टुकड़े किये जा सकते है, उन वैज्ञानिकों ने भी यह स्वीकार किया है कि वास्तव में ही तंत्र में आश्चर्य जनक शक्ति होती है, इसके बाद तो भारत के प्रसिद्ध वैज्ञानिक एन० आर० बनर्जी ने तो सन्यास स्वीकार कर लिया, और तब से वज्रेश्वर जी के साथ ही रहते है ।

वज्रेश्वर जी के गुरू स्वामी अरविन्द है जो सिद्धाश्रम के श्रेष्ठ योगी है और सिद्धाश्रम से निकलने वाली पत्रिका "सिद्धाश्रम वाणी" के प्रमुख सम्पादक है ।

मैंने पूछा, शेरजंग ! तुम सही कह रहे हो, वास्तव में ही क्या वहां पर कोई तांत्रिक है, या तुम गप्प उड़ा रहे हो ।

उसने कहा, "मैं अपनी आँखों से उनको देख चुका हूँ, वे प्रत्येक वर्ष तीन महीनों के लिए कौसानी आते हैं, अप्रेल, मई और जून में वे अपने गुरू के स्थान पर बैठ कर कोई साधना सिद्ध करते हैं, और उस समय हजारों हजारों लोग उनके दर्शन के लिए उमड़ पड़ते हैं, आज कल भी वे कौसानी के पास ही रुके हुए हैं ।

कौसानी का नाम मैंने पहले भी सुन रखा था, अत्यन्त ही सुन्दर और प्रकृति से भरपूर स्थान है; कौसानी, **इस स्थान पर किसी समय महात्मा गांधी लगभग एक महीने तक रुके थे और गीता के कर्म योग पर भाष्य लिखा था,** कौसानी, जो सुमित्रानन्दन पं…

हिडिम्बा तन्त्र

भारतवर्ष में सैकड़ों तंत्र प्रचलित है, पर कठोपनिषद में हिडिम्बा तंत्र को विस्तार से समझाया गया है उसमें बताया है–

एतद्ध्यवाक्षरं ब्रह्म एतद्ध्यवाक्षरं परम् ।
एतद्ध्यवाक्षरं ज्ञात्वा यो यदिच्छति तस्य तत् ।

कठोपनिषद-१६

इस प्रकार साधना करने से हिडिम्बा सिद्ध होती है, और सूर्य का पूर्ण स्वरूप आंखों में साकार हो जाता है, जिसके

द्वारा इतनी तेज दाह उत्पन्न की जा सकती है कि वह इस्पात को भी पिघला दे।

जिस प्रकार दीपक की लौ देख कर पतंगे आकर्षित हो जाते है, और गर्मी होने पर भी उससे चिपट जाते है, ठीक उसी प्रकार ऐसी शक्ति प्राप्त होने पर संसार की प्रत्येक वस्तु आकर्षित हो जाती है और वह वस्तु या पदार्थ तीव्रता के साथ गतिशील हो कर दाह उत्पन्न करने वाले व्यक्ति से चिपट जाती है या उसके नजदीक आ जाती हैं।

की जन्म स्थली है, जिन्होंने छायावाद के क्षेत्र में अद्वितीय काव्य रचना कर भारतीय साहित्य में अपना नाम अमर कर दिया, मैं कौसानी जाने के लिए उतावला हो उठा, मैं देख लेना चाहता था कि शेरजंग की बात में कोई दम भी है या नहीं, और वहां कुछ नहीं भी होगा तो दो चार दिन प्रकृति के बीच रह कर वहां का सूर्योदय देख कर लौट आऊंगा, सुना था कि कौसानी का सूर्योदय और आबू का सूर्यास्त विश्व प्रसिद्ध है, कौसानी में जब सूर्य उगता है तो चारों तरफ बिछी हुई बर्फ पर हजारों हजारों इन्द्र धनुष खिल जाते हैं, ऐसा दृश्य अपने आप में अद्वितीय अनुपम होता है, ऐसे ही दृश्य को देख कर **महात्मा गांधी ने कहा था कि यह स्थान स्विट्जरलैण्ड से भी कई गुना ज्यादा सुंदर है ।**

मैं दूसरे दिन ही सुबह शेरजंग को अपने साथ ले कर **कौसानी जाने वाली** बस में बैठ गया, अब तो यह स्थान अत्यन्त आसान हो गया है, क्योंकि रानीखेत से एक सीधी सड़क बद्रीनाथ तक निकाली है, और इसी के रास्ते **पर कौसानी** पड़ता है, यों रानी खेत से दो तीन रास्ते हैं, कौसानी जाने के ।

रानीखेत भी मु... प्रकृति की दृष्टि से बहुत अच्छा लगा मगर मैं यहां रुका नहीं, मैंने विचार किया कि पहले कौसानी पहुँच जाऊं और उसके बाद ही वापिस लौटते समय रानीखेत एक दो दिन के लिए रुकूंगा, मैंने सुन रखा था कि रानीखेत के पास ही एक अघोरी साधना रत है, जो कि वास्तव में ही बहुत पहुंचे हुए योगी और तांत्रिक है।

लगभग पांच घण्टे की यात्रा से मैं थक कर चूर हो गया, ऊबड़ खाबड़ रास्ता और पहाड़ी के घूमने वाले मोड़ों पर बस चलने से इतने अधिक हिचकोले आते कि अच्छे से अच्छे आदमी के भी जोड़ दर्द करने लग जाते हैं परन्तु कौसानी जाते ही सारी थकावट दूर हो गयी, चारों तरफ प्रकृति का अद्वितीय वातावरण था, ऐसा लग रहा था कि जैसे यहां पर प्रकृति ने अपना पूर्ण शृंगार किया हो।

वहां मैंने कुछ लोगों से पूछ ताछ की तो सभी लोगों

आज विज्ञान वापिस आध्यात्मिक तथ्यों की ओर देखने लगा है पर क्या वैज्ञानिक यन्त्र आध्यात्मिक शक्तियों को नाप सकते हैं ? क्या विज्ञान आध्यात्मिक शक्तियों को परख सकता है, आज भी प्रति वर्ष कौसानी के पास नीलाउत मे स्वामी जी प्रति वर्ष की भांति आते हैं आज भी हजारों लोग उनके दर्शन कर अपने आप को धन्य समझते हैं उनके द्वारा किये गये दोनों कार्य मेरे और प्रतिष्ठित व्यक्तियों के सामने घटित हुए हैं, क्या इसका उत्तर विज्ञान के पास है? क्या विज्ञान इन गुत्थियों को सुलझा सकता है ? समय ही इन गुत्थियों को सुलझा सकेगा ।

ने स्वीकार किया कि बहुत ऊंचे महात्मा है जो 'नीलाउत' में अपने गुरू के आश्रम पर साधना कर रहे है, मैंने लगभग बीस पच्चीस लोगों से बातचीत की, जो भी उन महात्मा के बारे में सुनता वह तुरन्त जमीन पर झुक कर अपने दोनों कानों को हाथों से पकड़ कर उन्हें मन ही मन प्रणाम करता और फिर बताता कि वास्तव में ही वे पहुंचे हुए सिद्ध महात्मा हैं, और उनकी आंखों में तो साक्षात सूर्य और चन्द्रमा विराजमान हैं ।

कई लोगों ने स्वीकार किया कि वास्तव में ही वे उड़ते हुए हवाई जहाज को रोक देते है और बैठे बैठे ही अपने स्थान से अदृश्य हो जाते हैं, कुछ लोगों ने बताया कि वे उड़ते हुए पक्षियों को जबरदस्ती उतार कर अपने पास बिठा देते है और फिर उन्हें दाना पानी देकर उड़ा देते है, कुछ लोगों ने यह भी बताया कि वे लोहे को पिघला कर पानी बना देते है ।

उस दिन शाम हो आई थी, और नीलाउत यहां से १९ किलोमीटर दूर था, इस बारे में खोज करने पर मालूम हुआ कि गांव के पास ही बहुत पुराना नीलकण्ठेश्वर महादेव का मन्दिर है, जहां पर पाण्डवों ने लगभग छः महीनें व्यतीत किये थे और भगवान शिव की साधना कर उनसे **"अन्नपूर्णा पात्र"** प्राप्त किया था, जिसकी वजह से पाण्डवों को कभी भी भोजन की समस्या नहीं रही, नीलकण्ठेश्वर महादेव की वजह से ही उससे सटे गांव का नाम नीलाउत पड़ गया ।

मैं बड़ा ही आश्चर्यचकित था, कि क्या ऐसा संभव हो सकता है, क्या आंखों में इतनी क्षमता आ सकती है, कि वह इस्पात को पिघला दे, या क्या किसी की आंखों से इतनी जबरदस्त तरंगे प्रवहित हो सकती है, कि वह उड़ते हुए हवाई जहाज को रोक दे या पक्षियों को नीचे उतरने के लिए मजबूर कर दे, पर हो भी सकता है, जो भी होगा कल अपनी आंखों से देख लिया जायेगा ।

कौसानी में जहां बस रुकती है, वहां से एक फर्लांग दूर छोटी सी पहाड़ी पर "गांधी आश्रम" बना हुआ है, और पांच छः कमरे भी बने हुए हैं, है, जहां पर रात्रि को यात्री विश्राम कर सकता है, व्यवस्था बहुत अच्छी है, और आने जाने वाले यात्रियों को ओढने के लिए कम्बल रजाई आदि भी दी जाती है, वह रात मेरी आनन्द के साथ व्यतीत हुई ।

दूसरे दिन मैं सुबह जल्दी उठ गया, प्रातःकालीन सूर्योदय को देखने का मेरा चाव था, और मैंने देखा कि करीब तीस चालीस लोग उस स्थान पर सूर्योदय को देखने के लिए एकत्र हो गये है, थोड़ी ही देर में सूर्य निकला, ऐसा लगा कि जैसे समुद्र में से कोई आग का गोला निकला हो, और जब सूर्य एक हाथ भर ऊपर आया तो उसकी किरणों से सामने बिछी हुई बर्फ पर हजारों हजारों रंग बिखर गये, वास्तव में ही यह अपने आप में अद्भुत दृश्य था, आदमी उस सूर्योदय को देखकर ठगा सा रह जाता है, मैं आनन्द विभोर हो उठा।

थोड़ी देर बाद थोड़ी निचाई पर बनी हुई एक छोटी सी दुकान से चाय पी और शेरजंग को लेकर मैं नीलाउत की ओर निकल गया, सुबह नौ बजे कौसानी से गीलोरा स्थान तक एक स्थानीय बस जाती है, और गीलोरा से मात्र दो किलोमीटर की दूरी पर निलाउत गांव है, मैं और शेरजंग उस बस में बैठ गये और लगभग साढे ग्यारह बजे गीलोरा उतर गये, यहां से जब हम रवाना हुए तो मैंने देखा कि झुण्ड के झुण्ड लोग उस सन्यासी के दर्शन करने के लिए जा रहे है, मार्ग में कई लोग आते हुए दिखाई दिये वे दर्शन करके लौट रहे थे, आस पास के कई गांवों के लोग तो नित्य उन महात्मा के दर्शन करने के लिये जाते है, वास्तव में ही उन महात्मा की उस क्षेत्र में वड़ी प्रसिद्धि है।

मेरे साथ कई ग्रामीण पुरूष और स्त्रियां चल रही थीं, उनकी स्थानीय भाषा यों तो समझ में आ जाती है, पर कहीं कहीं पर कोई शब्द समझ में नहीं आता तो शेरजंग से उसका अर्थ पूछ लेता, उन लोगों के कहने का भाव यह था कि निलाउत में जो योगी ठहरे हुए हैं, वे दिखने में तो करीब पचास पचपन की आयु के लगते हैं, पर वास्तविक उम्र ३०० वर्षों से भी ज्यादा है, उनका नाम वज्रानन्द जी स्वामी है, सिर के बाल सफेद हैं, और कमर तक केवल टाट का मोटा सा कपड़ा बांध कर रखते हैं, ऊपर कुछ भी धारण नहीं करते, सर्दी, गर्मी या बरसात में भी इसी अवस्था में रहते हैं।

हिडिम्बा तंत्र के जानकार पूज्य गुरुदेव श्रीमालीजी

दिन में केवल एक बार भोजन करते हैं, नीलाउत में नीलकण्ठेश्वर महादेव के पुजारी रत्नेश्वर जी हैं, उन्हीं के घर का भोजन एक समय करते हैं, उनके गुरू बहुत उच्च कोटि के योगी थे, और उन्होंने कुछ समय तक यहीं रह कर साधना की थी, अब वे सिद्धाश्रम चले गये हैं, इसीलिए वज्रेश्वर जी महाराज साल में तीन महीनें इसी स्थान पर आ कर रुकते हैं और कोई विशेष साधना करते हैं, उनके गुरूजी ने भी रत्नेश्वर जी के यहां ही भोजन ग्रहण किया था, इसीलिए वज्रेश्वर जी महाराज केवल उस सात्विक ब्राह्मण के घर का ही भोजन स्वीकार करते हैं।

इसके अलावा वे सर्वथा निस्पृह योगी हैं, कभी किसी से किसी भी प्रकार की कोई चीज स्वीकार नहीं करते, यदि उनके सामने रुपयों का ढ़ेर भी लगा देते हैं तो

हिडिम्बा तन्त्र : शोध और साहित्य

हिडिम्बा तंत्र पर भारतवर्ष में तो कुछ पुस्तकें प्रकाशित हुई ही हैं पर विदेशों में भी इस तंत्र पर शोध कार्य हो रहा है, और कई ग्रंथों की रचना की गयी है, "बर्ट" विश्वविद्यालय में तो बाकायदा इसका अध्यापन किया जाने लगा है ।

इससे सम्बंधित कुछ विशिष्ट ग्रंथ इस प्रकार हैं –

१. हिडिम्बा तंत्र – परमहंस स्वामी परशुराम
२. हिडिम्बा तंत्र साधना एवं सिद्धियां – योगी ज्ञानदेव चैतन्य
३. ए स्टडी ऑफ हिडिम्बा तंत्र – रोबर्ट मूर
४. हिडिम्बा तंत्र - ए प्रेक्टिकल स्टडी – डॉ० विलियम फ्लेर
५. हिडिम्बा तंत्र - ए प्रेक्टिकल नॉलेज – लॉर्ड मूर
६. हिडिम्बा - आचनेर लामा (यह तिब्बती भाषा में प्रकाशित अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जिसका अंग्रेजी अनुवाद पिछले ही दिनों प्रकाशित हुआ है ।)
७. हिडिम्बा सिद्धि – लामा वेल
(यह प्रति नेपाल पुस्तकालय में सुरक्षित है, और दो साल पहले इस पुस्तक का अंग्रेजी अनुवाद लंदन से प्रकाशित हो चुका है ।)

इसके अलावा कई पत्र पत्रिकाओं में हिडिम्बा तंत्र के बारे में प्रामाणिक लेख प्रकाशित हुए हैं, सितम्बर ८७ का "सिद्धाश्रम-वाणी" विशेषांक तो पूरा हिडिम्बा तंत्र पर ही प्रकाशित था ।

उसकी तरफ नजर उठा कर भी नहीं देखते, उनके आने का और जाने का समय निश्चित है, वे पिछले कई वर्षों से ठीक २७ अप्रेल को पहुँच जाते हैं, और ३ जुलाई को निकल जाते हैं, वे वहां से कहां जाते हैं, और कहां से आते है, इसके बारे में किसी को कोई ज्ञान नहीं है, पर जब तक वे नीलाउत में रहते हैं नित्य सैकड़ों लोग उनके दर्शन के लिए आते हैं और और कुछ लोग तो तीन महीनें बराबर निलाउत में ही ठहरे रहते हैं ।

वास्तव में ही जितने लोगों से मैंने पूछताछ की या बातचीत हुई सभी ने उनके बारे में अत्यन्त आदर और सम्मान व्यक्त किया, सभी ने इस बात को स्वीकार किया कि वास्तव में ही वे बहुत उच्च कोटि के सन्यासी योगी हैं ।

बातचीत करते करते ही हम नीलाउत पहुंच गए, जब मैं पहुँचा तब दोपहर के दो बज गये थे, निलाउत बहुत छोटा सा गांव है, शायद मुश्किल से सौ घरों की बस्ती होगी, परन्तु पहाड़ों के बीच बसा हुआ, यह अपने आप में अद्वितीय, भव्य स्थान है, मैं जब वहां पहुँचा तब भी तीन चार हजार लोग जमा थे, जो कि आस पास के गावों से और दूर दूर से स्वामीजी के दर्शन के लिये आये थे ।

मैं जल्दी से जल्दी स्वामी जी के दर्शन करना चाहता था, मेरे साथ शेरजंग था और मार्ग में ही दो तीन व्यक्ति और मेरे साथ हो गये थे, जो कि स्वामीजी को पिछले बीस वर्षों से जानते थे, और जब तक स्वामीजी नीलाउत रहते, नित्य दर्शनों के लिऐ आते थे, उनकी सहायता से

मैं जल्दी ही स्वामीजी के पास पहुंच गया ।

वास्तव में ही स्वामीजी का व्यक्तित्व अपने आप में अत्यन्त भव्य है, ऐसा लगता है कि जैसे कोई देवात्मा पृथ्वी पर उतर आई हो, भव्य और तेजस्वी चेहरा, उन्नत ललाट, पीछे व्याघ्र की तरह बिखरे हुए अयाल, चौड़ा और पुष्ट वक्षस्थल, स्वामीजी एक दूधिया चट्टान पर बैठे हुए थे, उस तरफ सभी पहाड़ लगभग लाल रङ्ग के हैं, परन्तु इन पहाड़ों के बीच में वह प्राकृतिक चट्टान सर्वथा श्वेत दूधिया रङ्ग की है, स्वामीजी इसी चट्टान पर बैठे हुए थे और पीछे ही घास फूस से बनी हुई झोपड़ी थी, जो श्रद्धालुओं ने मना करने के बावजूद भी स्वामीजी के लिए बना दी थी ।

मैंने उनके पास जा कर पूर्ण श्रद्धा के साथ प्रणाम किया, तो उन्होंने मुझे एक क्षण के लिए देखा, ऐसा लगा जैसे कोई अग्नि-स्फुलिंग अन्दर तक उतर गया हो, उन्होंने कहा, क्यों देवव्रत ! "भारत के तांत्रिकों पर रिसर्च कर रहे हो, कुछ सफलता मिली," – और वे हल्के से हंस दिये ।

मैं वास्तव में ही आश्चर्यचकित था, उन्होंने मेरा नाम ले कर मुझे पुकारा था, उन्होंने यह पहले से ही जान लिया था कि मैं इन दिनों क्या कर रहा हूं ।

मैंने स्वीकृति में गर्दन हिलाई और कहा 'आपकी बड़ी चर्चा सुनी थी, इसीलिए मैं आपके दर्शनों के लिए उपस्थित हुआ हूं, वास्तव में ही मैं एम० ए० करने के बाद भारत के तन्त्र और तांत्रिकों पर शोध कार्य कर रहा हूँ, और मेरी इच्छा है कि मैं यूनीवर्सिटी से इस विषय को प्रस्तुत कर डाक्टरेट की डिग्री प्राप्त करूं ।

उन्होंने कहा **"तंत्र आज भी विद्यमान है, आवश्यकता है देखने की और समझने की, जहां विज्ञान समाप्त हो जाता है, वहीं से तंत्र प्रारम्भ होता है, तंत्र के माध्यम से ही जीवन की पूर्णता प्राप्त की जा सकती है"।**

मैंने कहा आप ज्यादा जानते हैं, पर मैंने सुना है कि साधना के द्वारा आपने अपने शरीर में और आंखों में जो विशेष ज्वलंत शक्ति प्राप्त कर ली है, इसके माध्यम से आप इस्पात को भी पिघला देते हैं ।

उन्होंने कहा तन्त्र में यह कोई कठिन क्रिया नहीं है,

हिडिम्बा तन्त्र और सौन्दर्य

हिडिम्बा तंत्र के माध्यम से नारी शरीर को अद्वितीय सौन्दर्य प्रदान किया जा सकता है, अमेरिका के "बर्ट" विश्वविद्यालय में इस पर जो शोध कार्य हुआ है, उसके अनुसार इस तंत्र को सिद्ध करने पर आंखों में विशेष आकर्षण और सम्मोहन शक्ति प्राप्त हो जाती है । इसके बाद किसी भी स्त्री को सामने बिठा दिया जाता है और इस तंत्र के माध्यम से शरीर में विशेष प्रकार की ऊर्जा पैदा कर आंखों के माध्यम से शक्ति प्रवाहित कर सामने बैठी हुई नारी शरीर की फालतू चर्बी तत्क्षण समाप्त की जा सकती है, चेहरे के दाग धब्बे या मसे समाप्त किये जाते हैं, झुर्रियां जला कर खाक कर दी जाती है, आंखों के नीचे का स्याहपन दूर कर दिया जाता है और सारे शरीर के सांवलेपन को इस ज्वलन शक्ति से समाप्त कर दिया जाता है ।

भारतवर्ष में भी इस पर कार्य हुआ है, और वास्तव में ही इसके माध्यम से बदसूरत मोटे थुलथुल भारी शरीर को सुन्दर आकर्षक सौन्दर्यमय बनाया जा सकता है ।

योगीराज अरविन्द

योगीराज अरविन्द अत्यन्त प्रतिष्ठित और महत्वपूर्ण योगी है, स्वामी सर्वेश्वरजी के गुरु है, और सिद्धाश्रम के साधक है।

सिद्धाश्रम जीवन का श्रेष्ठतम अद्वितीय और दिव्य आश्रम है, जहां जाना प्रत्येक देवता और मनुष्य की इच्छा होती है, वहां पर आज भी पांच सौ, सात सौ या हजार वर्ष की आयु प्राप्त योगी सशरीर विद्यमान है।

भारतवर्ष में भी ऐसे कई योगी, गृहस्थ, जन समाज में परिचित है, जो सिद्धाश्रम के योगी है, और अपने सूक्ष्म शरीर से या वर्तमान शरीर से सिद्धाश्रम आने जाने में समर्थ है।

श्री योगीराज अरविन्द सिद्धाश्रम से कई बार जन समाज में आते है कुछ दिनों तक रहते है, समाज में आध्यात्मिक चेतना फैलाते है और वापिस विशिष्ट साधनाएं और साधनाओं से संबंधित शोध करने के लिए सिद्धाश्रम चले जाते है।

हिडिम्बा तन्त्र के माध्यम से आंखों में विशेष तीव्रता और अग्नि प्राप्त की जा सकती है, जिसके माध्यम से इस्पात तो क्या इस पृथ्वी की उच्च कोटि की धातु को भी पिघलाया जा सकता है।

उन्होंने कहा – "ऐसी कई धातुएं हैं जिनको पिघला कर परस्पर जोड़ा नहीं जा सकता, और हमारे वैज्ञानिक इन धातुओं को पिघलाने के लिए ब्रह्माण्ड का सहारा ले रहे हैं, जहां गुरुत्वाकर्षण नहीं है वहां पर इन धातुओं को पिघलाने की कोशिश कर रहे हैं, पर इन धातुओं को यहां भी पिघलाया जा सकता है, और जब नेत्रों में अग्नि-स्फुलिंग आ जाता है, तो आकर्षण भी स्वतः बन जाता है, क्योंकि अग्नि किसी भी पदार्थ या प्रकृति के किसी भी तत्व को अपनी ओर खींचती है, और इसी वजह से उड़ता हुआ वायुयान उस नेत्र शक्ति की वजह से रुक जाता है, और यदि नेत्रों से और ज्यादा दाहकता प्रवहित की जाय तो आकाश में ही वायुयान को भस्म किया जा सकता है, इसी आकर्षण शक्ति के सहारे पक्षियों को नीचे उतरने के लिये बाध्य किया जा सकता है।

मैंने हिडिम्बा तन्त्र पढा था, जिसमें अग्निस्फुलिंग नेत्रों में पूर्ण सूर्य को स्थापित कर प्रज्जवलित किये जाने की विधि वर्णित है, परन्तु यह तन्त्र अपने आप में इतना अधिक पेचीदा और दुर्बोध है कि सामान्य व्यक्ति समझ नहीं सकता, हिडिम्बा तन्त्र को किसी योग्य गुरु के माध्यम से ही समझा जा सकता है।

जब मैं स्वामी जी से बात कर रहा था, तो आस पास लगभग पांच सात हजार लोग जमा थे, वे सभी श्रद्धा भाव से उनके दर्शन करने के लिये आये हुए थे, मैंने अपनी बात को आगे बढाते हुए कहा, यह आपकी कृपा है कि मुझे आते ही आपने समय दिया और मेरे प्रश्नों का उत्तर दे रहे है।

उन्होंने कहा, जब तुम नैनीताल से चले थे तभी मैंने तुम्हें देख लिया था, और जब तुम कौसानी रुके हुए थे, तब भी मैं तुम्हारे मन में घुमड़ते हुए भावों को और विचारों को पढ़ रहा था, मैं देख रहा था कि तुम अविश्वास की दीवार पर खड़े हुए मुझे देख रहे हो और अब भी तुम्हारे मन में अविश्वास बार बार कौंध जाता है।

वास्तव में ही बात सही थी, मैं स्वामीजी की बात सुन रहा था, परन्तु मेरे मन में संतुष्टि नहीं थी, जो कुछ

मैंने सुना है और जो कुछ सुन रहा हूँ वह सही हो भी सकता है और नहीं भी हो सकता।

स्वामी जी ने कहा, किसी धातु की कोई जंजीर या कोई पदार्थ हो तो लाओ मैं अभी तुम्हें अविश्वास के ढेर से नीचे उतार कर बता देता हूँ।

मैंने इधर उधर नजर दौड़ाई एक ग्रामीण के पास लगभग चार इन्च मोटा लोहे का रोल, जो कि वहीं पर पड़ा था मैंने उसे उठा कर स्वामी जी के पास लाना चाहा वह ठोस लोहे का डंडा लगभग चार इन्च मोटा और छः फीट लम्बा था, इतना अधिक भारी होने की वजह से मैं उसे उठा नहीं पाया तो पांच छः मजबूत ग्रामीणों की सहायता से उसे उठा कर स्वामी जी के पास ले आया।

स्वामी जी ने कहा यह तो केवल धातु है, क्या इससे भी ज्यादा मजबूत और दृढ धातु है, उन्होंने उस भारी डंडे को सामने रखवा दिया उस समय मेरे अलावा नीलाउत गांव के प्रधान हीरालाल जी, कौसानी के गांधी आश्रम के अधिष्ठाता श्रीराम भाई पटेल दिल्ली के केन्द्रीय मन्त्रालय में अवर सचिव श्री आर. एन. मेहरा बम्बई के टाटा रिसर्च इन्स्टीटयूट के वैज्ञानिक एन. पणिकर और बम्बई के जीवण भाई जवेरी आदि महत्वपूर्ण व्यक्ति उपस्थित थे।

स्वामी जी ने एक क्षण के लिए अपने आपको स्थिर किया और लगभग एक या डेढ मिनट के बाद उनकी आंखों से बहुत गहरा और नीला तेज प्रकाश सा दिखाई दिया हम सब लोग सन्न से खड़े–खड़े इस दृश्य को देख रहे थे, स्वामी जी ने अपने हाथ पीठ की ओर कर दिये थे, कमर से ऊपर किसी प्रकार का कोई वस्त्र नहीं था, हजारों ग्रामीण नर नारी उस दृश्य को देख रहे थे, और हमने देखा कि उनकी आंखों से निकले तेज से पहले तो वह कलाई से भी मोटा लोहे का डंडा लाल सुर्ख हो गया और उससे तेज दाह निकलने लगा, थोड़ी देर बाद वह

डंडा लाल सुर्ख हो कर और तेज आंच से नीला सा होने लगा और हमने देखा कि लगभग चार मिनट के भीतर भीतर वह इस्पात का मोटा सा डंडा पानी की तरह पिघल कर उस स्थान पर ही फैल गया।

उस समय किसी में हिम्मत नहीं थी कि उनकी आंखों की ओर ताके, दो सैकण्ड के बाद ही अचानक संयोगवश ऊपर घर्रं-घर्रं की आवाज करता हुआ, वायुयान जाता दिखाई दिया, वह बहुत ऊंचाई पर था, स्वामी जी ने एक पल के लिए आंखें बन्द की और फिर आंखें खोल कर उन्होंने ऊपर ताका, हम सब आश्चर्यचकित हो कर ऊपर देख रहे थे, और हमने देखा कि ऊपर उड़ता हुआ वायुयान लगभग स्थिर हो गया, और उसके दोनों इन्जनों ने काम करना बन्द कर दिया वह वायुयान लगातार बेबस सा नीचे की ओर आ रहा था, जैसे कि डोर से बंधा हुआ पतंग खींचने पर नीचे आता है।

जब बहुत नीचे आ गया तो हमने देखा कि स्वामी जी ने आंखें नीचे जमीन की ओर झुका ली, और तभी वायुयान के इन्जनों ने काम करना शुरू किया और पेड़ों की फुनगियों को काटता हुआ वह आगे की ओर बढ गया, हवाई जहाज इतना नीचे आ गया था, कि नीचे का तल पेड़ों की फुनगियों को छूने लगा था, एक सैकण्ड के लिए भी स्वामी जी यदि और दृष्टि निक्षेप करते तो निश्चय ही

वह वायुयान जमीन से टकरा जाता ।

दूसरे दिन ही दिल्ली के अखबारों में उस जहाज के पायलेट मल्होत्रा का सनसनी खेज बयान छपा था, कि मैं बहुत उंचाई पर हवाई जहाज उड़ा रहा था, अचानक हवाई जहाज के दोनों इन्जनों ने काम करना बन्द कर दिया, मैंने वायुयान में आपात काल की घोषणा कर दी यात्रियों को बेल्ट बांधने के लिए कह दिया । मेरा जहाज बहुत तेजी से नीचे की ओर उतर रहा था, मेरे सारे प्रयत्न निष्फल हो रहे थे, और हम दोनों पायलेटों ने सोच लिया था कि यह जहाज अवश्य ही किसी पहाड़ी से टकरा कर चकनाचूर हो जायेगा, ऐसा क्यों हो रहा है, और ऐसा क्यों हुआ, हम कुछ नहीं कह सकते ।

पर जब वायुयान बहुत नीचे को ओर गया, और जब पेड़ों को छूने लगा तो मैंने अपनी आंखें बन्द कर लीं, पर तभी संयोगवश वायुयान के दोनों इन्जनों ने काम करना शुरू कर दिया और वायुयान पुनः उपर की ओर उठ गया, यह इतना नीचे कैसे आया, इन्जन क्यों बन्द हो गये और फिर बहुत नीचे आने के बाद वापिस इन्जनों ने काम कैसे शुरू कर दिया, कुछ नहीं कह सकते ।

उन दोनों पायलेटों के बयान से हड़कम्प सा मच गया था, पर वास्तविकता तो हमारे सामने थी, मेरा केमरा बराबर काम कर रहा था, और मेरे पास आज भी इन दोनों घटनाओं के सा[illegible] के रूप में अठारह-बीस फोटो विद्यमान है ।

वह लोहे का डण्डा चट्टान पर ही पिघल कर फैल गया था, और ठण्डी हवा लगने से वहीं पर जम सा गया था, हमने देखा कि स्वामी जी अत्यन्त शान्त भाव से हमें देख कर मुस्करा रहे थे, जैसे कि कुछ हुआ ही नहीं हो ।

आज विज्ञान वापिस आध्यात्मिक तथ्यों की ओर देखने लगा है, पर क्या वैज्ञानिक यन्त्र आध्यात्मिक शक्तियों को नाप सकते है ? क्या विज्ञान आध्यात्मिक शक्तियों को परख सकता है ? आज भी प्रति वर्ष कौसानी के पास नीलाउत में स्वामी जी प्रति वर्ष की भांति आते है, आज भी हजारों लोग उनके दर्शन कर अपने आपको धन्य समझते है, उनके द्वारा किये गये दोनों कार्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों के सामने घटित हुए है, क्या इसका उत्तर विज्ञान के पास है ? क्या विज्ञान इन गुत्थियों को सुलझा सकता है ? समय ही इन गुत्थियों को सुलझा-सकेगा ।

हिडिम्बा-सिद्धि

हिडिम्वा तन्त्र मूल रूप से तिब्वत के सिद्ध लामाओं का तन्त्र है, और यहीं से यह पूरे भारत-वर्ष तथा विश्व में फैला, इसकी सारी क्रिया पद्धति तिब्वती है ।

इस साधना की ओर विदेशी विद्वानों का ध्यान तब खिंचा, जब तिब्वती लामा "बोग चू" इंग्लैण्ड गये, और उन्होंने अपने नेत्रों की ज्योति-दाह को इतना अधिक उग्र किया, कि लोहे को पिघला कर पानी कर दिया वहां के तां[illegible]क, विद्वान और राज-नयिक उस सभागार में उपस्थित थे, और सब देख रहे थे कि यह कोई हाथ की सफाई और जादू नहीं था, अपितु बीसवीं शताब्दी में वैज्ञानिकों के गाल पर करारा तमाचा था, "बांग चू" ने उस सभागार के वातावरण को इतना गर्म कर दिया, कि वह सभा-गार एयरकन्डीसण्ड होते हुए भी खौलने सा लगा अन्दर बैठे लोगों के शरीर जलने से लगे, और लोग बाहिर भागने लगे 'बांग चू' ने सिद्ध कर दिया कि विज्ञान से परे भी प्रकृति के रहस्य है जिन्हें समझना जरूरी है ।

इसके बाद तो वहां इससे सम्बन्धित कई ग्रन्थ छप गये, रोबर्ट ह्यूज, विलियम बर्न आदि ने इस तन्त्र को सिद्ध कर पूरे विश्व में यह प्रमाणित कर दिया कि भारतोय-तिब्वती साधनाएं और तन्त्र प्रामाणिक है, पूरी तरह से यथार्थ है, आवश्यकता है उसे समझने की, और उसे पूरी क्षमता के साथ सिद्ध करने की ।

तीसरा विश्व युद्ध बहुत निकट है

पर वह लड़ा जायेगा

परामनोविज्ञान शक्तियों से

देश अमेरिका : मिसी सिपी

एक वातानुकूलित ध्वनि निरोधक कक्ष, जिस पर परमाणु शक्ति का कोई प्रभाव नहीं पड़ता ।

कमरे में हलका सा प्रकाश है, और एक कुर्सी पर एक स्वस्थ तन्दुरस्त युवक पालथी मार कर ध्यान मुद्रा में बैठा हुआ है, और पास में ही एक डॉक्टर सा लगने वाला व्यक्ति खड़ा है, थोड़ी देर कमरे में शान्ति रहती है ।

फिर डॉक्टर सा लगने वाला व्यक्ति उस युवक को

कहता है कि "ब्रेवर्द" स्थान पर कितनी मिसाइलें लगी हुई हैं और उनकी स्थिति कैसी है।

रूस के ब्रेवर्द स्थान को पूर्णतया परमाणु किरणों और अणुओं से आरक्षित किया हुआ है, जिससे उपग्रह से लिये गये कैमरों में इन मिसाइलों के फोटो नहीं आते और इसकी वजह से यह पता ही नहीं चलता कि वहां पर किस आकार की किस प्रकार की मिसाइलें स्थित है और उनकी मारक शक्ति कितनी तीव्र है।

डॉक्टर सा लगने वाला व्यक्ति अपने गुप्तचरों द्वारा भेजी गयी रिपोर्ट से युवक के बताये हुए कथन का मिलान करता है, तो संख्या बिल्कुल सही मिलती है, और युवक जो बता रहा है, वह पूर्णतः सही है, रूस स्थित गुप्तचरों ने जो सूचनाएं भेजी थी, उनसे युवक के बताए हुए विवरण पूर्णतः मेल खाते हैं।

डॉक्टर सा लगने वाला व्यक्ति उस युवक को वहीं छोड़ कर दूसरे कमरे में चला जाता है, वहां पर भी एक

अमेरिका की चैलेंजर दुर्घटना

जनवरी ८८ में चैलेंजर शटल की दुर्घटना ने पूरे अमेरिका में हड़कम्प मचा दिया था और अमेरिका के वैज्ञानिकों के सामने एक बहुत बड़ा प्रश्न चिन्ह लगा दिया था, वे यह समझ नहीं पा रहे थे, कि सब कुछ ठीकठाक होते हुए भी करोड़ों डॉलर की लागत से बना हुआ चेलेंजर क्यों उड़ते ही कुछ ही सेकेण्ड मे जल कर राख हो गया।

और अमेरिका के गुप्तचरों ने इस दुर्घटना को चेलेंज के रूप में स्वीकार किया और इसका पता लगाने के लिये जी-जान से लग गये, सितम्बर ८८ में उन्होंने अपनी गोपनीय रिपोर्ट "नासा" को दी जिसमें उन्होंने प्रमाणों के साथ स्पष्ट किया कि अमेरिका की चेलैंजर दुर्घटना सामान्य दुर्घटना नहीं थी, अपितु दूसरे देश के द्वारा किया गया परा मनोवैज्ञानिक प्रहार था, जिसकी वजह से यह चेलेंजर उड़ते ही जल कर खाक हो गया और उसमें बैठे हुए सभी उच्च कोटि के वैज्ञानिक एक ही क्षण में समाप्त हो गये।

कुर्सी पर बैठा हुआ युवक ध्यानस्थ हो कर **'भावातीत समाधि'** में चला जाता है, उसके शरीर पर लगे हुए यंत्रों से पता चलता है कि युवक बहुत गहरी समाधि में चला गया है, और उसके बाहरी शरीर पर कोई स्पन्दन नहीं है।

तभी धीरे धीरे यन्त्र की सुइयां हिलने लगती हैं, जिससे पता चलता है कि युवक वापिस अपनी चेतना में लौटने का उपक्रम कर रहा है, थोड़ी ही देर में युवक आंखें खोल देता है, और रूस के ब्रेवर्द स्थान के उस दस मील के एरिये में जितनी भी मिसाइलें हैं, उनकी संख्या, उनकी प्रहार क्षमता और उनकी दिशा बता देता है।

युवक कुर्सी पर आराम से बैठा हुआ है।

डॉक्टर सा लगने वाला व्यक्ति उस युवक को ध्यानातीत अवस्था में जाने के लिए कहता है और साथ ही बताता है कि रूस के "ब्रेवर्द" स्थान पर जो मिसाइलें पड़ी हैं, और जिनका मुंह अमेरिका की ओर है, यदि ये मिसाइलें छोड़ी जांय तो पांच सेकण्ड में ही पूरा अमेरिका बरबाद हो सकता है।

डॉक्टर सा लगने वाला व्यक्ति उस युवक को आज्ञा देता है, कि वह **ध्यानातीत अवस्था** में जाय और अपनी परा मनोवैज्ञानिक शक्तियों के द्वारा शत्रु क्षेत्र स्थित उन सभी परमाणु मिसाइलों और प्रक्षेपास्त्रों को नष्ट कर दे।

वह युवक ध्यानातीत अवस्था में चला जाता है, उसके शरीर पर लगे हुए यन्त्र इस बात का संकेत देते हैं, कि वह युवक अत्यन्त गहरे ध्यानातीत अवस्था में जा चुका है, सहसा युवक का शरीर अत्यन्त गर्म हो जाता है, और थोड़ी ही देर में उसका शरीर लाल सुर्ख हो जाता है, और इसके कुछ ही सेकण्ड बाद शरीर धीरे धीरे ठंडा होता है, और दस पन्द्रह सेकण्ड बाद युवक अपनी स्वाभाविक अवस्था में आ कर आंखें खोल देता है ।

तभी टेलीफोन की घण्टी घनघनाती है और दूसरी तरफ से कोई कह रहा है कि "हमारे गुप्तचर अन्तरिक्ष यानों द्वारा भेजे गये फोटोग्राफों से यह ज्ञात हुआ है कि अ ब द स्थान पर भयंकर नये प्रकार का अचानक विस्फोट हुआ है, और वहां जितनी भी मिसाइलें और प्रक्षेपास्त्र थे वे पूर्णतः निष्क्रिय तथा व्यर्थ हो चुके हैं, वहां पर भयंकर आग लगी हुई है ।

डॉक्टर सा लगने वाला व्यक्ति उस युवक को बधाई देता है, कि हमारा ऑपरेशन सफल रहा और तुमने परा मनोवैज्ञानिक शक्ति से जो प्रहार किया, उससे शत्रु के निश्चित स्थान पर लगे हुए सभी प्रक्षेपास्त्र और मिसाइलें निष्क्रिय हो गई हैं और उनमें आग लग गई है ।

यह कोई उपन्यास का अंश नहीं है, या कोई कपोल कल्पना नहीं है, अपितु अमेरिका के अत्यन्त प्रसिद्ध वैज्ञानिक और लेखक लसेल टार्ग की परमाणु रिपोर्ट पर आधारित तथ्य और प्रामाणिक घटना है ।

लसेल टार्ग के ही मित्र और अमेरिका के सुरक्षा विभाग के उच्चकोटि के वैज्ञानिक कीथबर्न ने रिटायर होने के बाद अपनी अत्यन्त ही महत्वपूर्ण पुस्तक में यह रहस्योद्घाटन किया है कि अमेरिकी सुरक्षा विभाग पिछले बीस वर्षों से इस प्रकार के सफल परीक्षण कर रहा है, और उसने कई ऐसे युवकों को तैयार किया है, जो भावातीत और ध्यानातीत अवस्था में जाने की पूर्ण क्षमता रखते हैं, तथा इन युवकों के माध्यम से परा मनोवैज्ञानिक शक्तियों के द्वारा हजारों मील दूर किसी भी

शक्ति-चक्र

जिसके माध्यम से ध्यानातीत अवस्था में पहुंचा जा सकता है ।

स्थान पर भयंकर विस्फोट किया जा सकता है, वहां के चप्पे-चप्पे की प्रामाणिक और सही-सही जानकारी प्राप्त की जा रही है, और इन सब की पुष्टि गुप्तचर अन्तरिक्ष यानों द्वारा भेजे गये चित्रों से प्रमाणित होती है।

अमेरिका के परमाणु वैज्ञानिक दियर मेकरे के अनुसार उन्होंने कुछ ऐसे युवकों को तैयार किया है, जो बहुत नीचे चलने वाली 'फ्रिक्वेन्सी' को पकड़ लेते हैं, और उनके द्वारा जो संदेश प्रेषित किये जाते हैं, उनका विश्लेषण भी कर दिया जाता है ।

पिछले दिनों रूस की प्रसिद्ध पत्रिका "उजबैक" में यह रहस्योद्घाटन हुआ था कि रूस ने परा मनोवैज्ञानिक शक्तियों से सम्पन्न कुछ ऐसे युवकों को तैयार किया है,जो हजारों मील दूर स्थित सर्वथा गोपनीय ढंग से रखे गये युद्ध उपकरणों की सही सही जानकारी प्राप्त कर लेते हैं, यही नहीं अपितु रूस में ही बैठे हुए एक परा मनोवैज्ञानिक युवक को जब आदेश दिया कि अमेरिका के नासा स्थित अमुक कम्प्यूटर को निष्क्रिय करना है, तो उस युवक ने अपने आप को ध्यानातीत अवस्था में ले

जा कर अपनी विशेष तरंगों के माध्यम से उस हजारों मील दूर रखे गये, अत्यन्त महत्वपूर्ण और बहुमूल्य कम्प्यूटर को एक ही सेकण्ड में सर्वथा निष्क्रिय कर दिया था।

'नासा' में ही रूस का एक महत्वपूर्ण भेदिया कार्यरत था; उसने एक घण्टे के भीतर भीतर यह सूचना भिजवा दी कि नासा स्थित अत्यन्त महत्वपूर्ण कम्प्यूटर जिस पर अमेरिका के वैज्ञानिकों को गर्व था और जिसमें लाखों सूचनाएं संग्रहित थी, अज्ञात कारणों से स्वतः ही हुए विस्फोट से सर्वथा निष्क्रिय हो गया है और इसके साथ ही साथ फीड की हुई लाखों सूचनाएं भी समाप्त हो गई है, यह समाचार आते ही वैज्ञानिक ने उस युवक को शाबासी दी, और यह निश्चित हो गया कि इस प्रकार परामनोवैज्ञानिक शक्ति-तरंग के माध्यम से सर्वथा गोपनीय और सुरक्षित रखी हुई वस्तु, बम, मिसाइल या प्रक्षेपास्त्र को सर्वथा निष्क्रिय किया जा सकता है।

पिछले ही दिनों अमेरिका के प्रसिद्ध पत्र 'न्यूयार्क टाइम्स' में प्रकाशित समाचार के अनुसार अमरिकी सरकार प्रति वर्ष एक करोड़ चालीस लाख डॉलर परामनोवैज्ञानिक शक्तियों को विकसित करने में व्यय कर रही है, और इस पर निरन्तर शोध कार्य हो रहा है।

उन्हीं दिनों 'वाशिंगटन पोस्ट' जैसे महत्वपूर्ण पत्र में एक सूचना प्रकाशित हुई थी कि नासा स्थित परा मनोवैज्ञानिक यूनिट में कार्यरत एक परा मनोवैज्ञानिक शक्ति सम्पन्न युवक से यह पता लगाया था कि समुद्र में रूस की कितनी पनडुब्बियां परमाणु संचालित हैं, और वे कहां-कहां पर स्थित हैं।

क्योंकि इस प्रकार की पनडुब्बियों के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त नहीं की जा सकती, समुद्र के भीतर रहने की वजह से गुप्त वैज्ञानिक उपग्रह भी इसका पता लगाने में असमर्थ रहते हैं, परन्तु परामनोवैज्ञानिक ने भावातीत अवस्था में जा कर समुद्र में छिपी हुई सभी ६१ परमाणु शक्ति चालित पनडुब्बियों का पता लगा लिया था और यह भी पता लगा लिया था कि वे समुद्र में कहां कहां पर कितनी गहराई में स्थित है, इतनी गोपनीय जानकारी प्राप्त होने पर अमेरिका ने अपने वैज्ञानिक यन्त्रों के द्वारा पता लगाया तो परामनोवैज्ञानिक ने अपनी शक्ति से जो जानकारी और सूचना दी थी, वह वह बिल्कुल सही और प्रामाणिक पाई गयी।

अमेरिका में परामनोविज्ञान के बारे में कई वर्षों से शोध कार्य हो रहा है, १९६६ में "अमेरिकन साइन्टिस्ट एसोसिएशन फॉर द एडवान्समेंट ऑफ द साइन्स" ने जब यह अनुभव किया कि परामनोविज्ञान के माध्यम से असम्भव कार्य भी सम्भव हो सकते हैं, तो उन्होंने एक विशेष यूनिट "अमेरिकन एसोसिएशन फॉर दी एडवान्समेंट पैरासायकोलॉजी" की स्थापना की और नासा

क्या है यह ध्यानातीत अवस्था

हमारा मन अत्यन्त ही तेजगति से चलने वाला और संवेदनशील है, यह सेकेण्ड के सौ वें समय में पृथ्वी के आठ चक्कर लगा लेता है, यह अत्यन्त सूक्ष्म और वायु से भी महीन होने के कारण इसका प्रवेश कहीं पर भी संभव है।

यदि "मन" तत्व को हम पकड़ लें, तो यह अत्यन्त उच्चस्तरीय उपलब्धि होगी जब व्यक्ति सहज क्रिया से अन्तर्मुखी होकर मन को स्पर्श करता है और उसे सूक्ष्म शरीर का आकार दे कर गतिशील बनाता है, तो यह मन सूक्ष्म शरीर धारण कर उस जगह पहुंच जाता है, जहां ध्यान लगाने वाला योगी उसे पहुंचाना चाहता है उस समय यह सूक्ष्म शरीर और उस व्यक्ति का स्थूल शरीर परस्पर सम्बन्धित रहते है और इस वजह से वह सूक्ष्म शरीर हजारों मील दूर जाकर जो कुछ देखता है, सुनता है, अनुभव करता है, वह स्थूल शरीर को बता देता है।

इस प्रकार व्यक्ति अपने सूक्ष्म शरीर के माध्यम से किसी गोपनीय रहस्य को प्राप्त करने में सफल हो जाता है, इसी क्रिया को "ध्यानातीत अवस्था" कहा गया है।

में इसे पूर्ण यूनिट का दर्जा दिया गया, इस संगठन को मान्यता प्रदान की गई और उसका एक बहुत बड़ा फण्ड अलग से कायम किया गया, जिससे कि इस पर निरन्तर शोध होता रहे।

इसके माध्यम से उन्होंने अपनी प्रयोगशाला में कई विचित्र अनुभव प्राप्त किये, उन्होंने महसूस किया कि परामनोविज्ञान के द्वारा दो अलग-अलग प्रयोगशालाओं में बैठे हुए व्यक्ति बिना किसी वैज्ञानिक उपकरण के बातचीत कर सकते हैं, अपने विचारों का आदान प्रदान कर सकते हैं, यही नहीं अपितु दूर बैठे हुए व्यक्ति के माइन्ड और उसमें घुमड़ते हुए भावों और विचारों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, भौतिक और ठोस वस्तुओं में परिवर्तन किया जा सकता हैं, और विशेष विचार संदेश के माध्यम से हजारों मील दूर रखी हुई वस्तु को नष्ट किया जा सकता है।

अमेरिका ने "इलेक्ट्रोमायोग्रापस" नामक एक यन्त्र बनाने में भी सफलता प्राप्त की है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने शरीर को शिथिल कर मानसिक एकाग्रता से तत्क्षण भावातीत अवस्था में चला जाता है, तो वहां पर वह इतनी अधिक ऊर्जा एकत्र करने में सफल हो जाता है, कि उसके द्वारा वह हजारों मील दूर रखे हुए पदार्थ में परिवर्तन कर सकता है।

सोवियत रूस ने दूसरे विश्व युद्ध के बाद ही परा मनोविज्ञान की महत्ता को समझ लिया था, और उसने यह अनुभव कर लिया था कि दूसरा विश्व युद्ध लड़ा जा चुका है, पर तीसरा महा-युद्ध परम्परागत हथियारों से लड़ कर जीता नहीं जा सकता, इसके लिए परामनो विज्ञान की सहायता के द्वारा ही सफलता पाई जा सकती है, और उसने कई प्रयोग-शालाओं के द्वारा ऐसे युवकों को तैयार किया, ऐसी विधियों को इजाद किया कि जिसके द्वारा दूसरे के विचारों को पढ़ा जा सके, हजारों मील दूर बैठे व्यक्ति के दिमाग को परिवर्तित किया जा सके, जिस प्रकार से चाहे उस व्यक्ति को सोचने के लिए बाध्य किया जा सके, और ध्यानातीत अवस्था में जा कर विचार तरंगों के द्वारा हजारों मील दूर पड़े हुए पदार्थ में मनचाहा परिवर्तन कर सके, एक प्रकार से देखा जाय तो रूस ने इस क्षेत्र में इतनी अधिक सफलता प्राप्त कर ली थी, कि वह परामनो विज्ञान शक्ति के द्वारा शत्रु क्षेत्र स्थित किसी भी पदार्थ को नष्ट कर सकता है, उस दिन तो हड़कम्प मच गया जब अमेरिका के नौ सैना के प्रमुख सचिव इयान बर्न ने आफिस में बैठे बैठे ही रूस के अनुकूल रिपोर्ट तैयार की, अपने अधिकारियों को वह रिपोर्ट दी और एक घण्टे तक वह सचिव इस बात के लिए दबाव डालता रहा कि हमें सब कुछ छोड़ छाड़ कर रूस की आधीनता स्वीकार कर लेनी चाहिए।

इससे अमेरिकी वैज्ञानिकों को यह समझ में आ गया कि इयान बर्न जैसे देश भक्त और अत्यन्त महत्वपूर्ण

परामनोवैज्ञानिक शक्ति

जब साधक ध्यानातीत अवस्थ में जाता है, तो अन्दर अत्यन्त तीव्रगति से हलचल और आलोड़न-विलोड़न होता है, और इससे विद्युत उत्पन्न होने लगती है, जो कि अत्यन्त तीव्र और शक्तिशाली होती है, यह शक्ति नेत्रों के माध्यम से या ललाट में स्थित दोनों भौंहों के बीच में जो तीसरा गुप्त नेत्र है, जिसको "तीसरा नेत्र" या "थर्ड आई" कहा गया है, उसके माध्यम से वह शक्ति निकल कर ध्यानातीत अवस्था में जो चीज पदार्थ उपकरण, वायुयान, प्रक्षेपात्र, राकेट या जो कुछ भी होता है उसे एक क्षण में ही नष्ट कर देती है, और नष्ट करने के बाद वह शक्ति पुनः लौट कर साधक के नेत्र के द्वारा ही शरीर में प्रवेश कर जाती है।

वास्तव में ही यह परामनोविज्ञान शक्ति अत्यन्त ही तीव्र और तेज गति से चलने वाली शक्ति है, जो मार्ग में नष्ट नहीं हो सकती जिसकी प्रहार क्षमता अचूक होती है, राडार के पकड़ में नहीं आती, और जिसके माध्यम से भयंकर तबाही या प्रलय मचाया जा सकता है।

परा मनोवैज्ञानिक प्रयोग

सोवियत वैज्ञानिकों ने एक परीक्षण के द्वारा यह स्पष्ट किया कि दूर बैठे हुए व्यक्ति का चिन्तन भी दूसरा व्यक्ति ग्रहण कर सकता हैं, या उसके भावों को पकड़ सकता है ।

इसके लिए समुद्र के तट पर प्रयोगशाला में एक मादा खरगोश को रखा गया और उसके मस्तिष्क में इलेक्ट्रोड्स लगा दिये गये ।

कुछ ही समय पहले पैदा हुए उस मादा खरगोश के छः बच्चों को पनडुब्बी में रख कर वहां से सौ मील दूर समुद्र के गहरे स्थान पर नियत समय पर चाकू उठा कर एक एक छौने को मारा गया, उपर तट पर मादा खरगोश के मस्तिष्क में लगे हुए इलेक्ट्रोड्स से यह ज्ञात हुआ कि ठीक उसी क्षण में, जब कि गहरे सागर में छौनों को मारा जा रहा था, दो सौ मील दूर बैठे मादा खरगोश के मस्तिष्क में भी प्रतिक्रिया हुई और वह अत्यधिक बेचैन हो कर फड़फड़ाने लगी ।

इससे यह स्पष्ट हैं कि किसी भी घटना का प्रभाव दूर बैठे व्यक्ति के मस्तिष्क में भी ठीक उसी क्षण हो जाता हैं, यदि व्यक्ति चाहे तो कोई भी विचार या संदेश भी उस क्षण विशेष में उसके मस्तिष्क में डाल सकता हैं ।

इस परीक्षण के बाद ही रूस के प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ० वासिलियेव को देश का परा मनो-विज्ञान का अध्यक्ष बनाया गया ।

सचिव के दिमाग को अवश्य ही रूस ने परीक्षण के तौर पर परामनोविज्ञान शक्ति से परिवर्तित किया है, इसके बाद तो अमेरिकी वैज्ञानिकों ने अपने अधीन सभी कार्य करने वाले व्यक्तियों को विशेष सुरक्षा प्रदान करने की कोशिश की, जिससे कि उनके मानस को परिवर्तित नहीं किया जा सके ।

१९७७ तक रूस इस क्षेत्र में अमेरिका से इतना आगे निकल गया था, कि तत्कालीस राष्ट्रपति जिमी कार्टर ने सी० आई० ए० को आदेश दिया था कि वह हर हालत में यह पता लगाये कि रूस परामनोविज्ञान के क्षेत्र में कितना आगे बढ चुका है, और उसने इस क्षेत्र में कितनी सफलता प्राप्त की है ।

जनवरी ८८ में अमेरिका के राष्ट्रपति रीगन ने एक गुप्त फन्ड "नासा" को दिया जिससे कि वह परामनो-विज्ञान के क्षेत्र में तीव्रता के साथ शोध कार्य करे और उनको स्पष्ट शब्दों में बता दिया गया कि इस कार्य में जितना भी धन व्यय होगा, दिया जायेगा पर हर हालत में इस क्षेत्र में उन्नति और सफलता प्राप्त करनी जरूरी है, तभी हम रूस के सामने दृढता के साथ खड़े हो सकेंगे, अन्यथा रूस परामनोविज्ञान शक्ति के द्वारा हमारे सभी गोपनीय स्थान, मिसाइलें, प्रक्षेपास्त्र और राडार स्टेशन वहीं पर बैठे बैठे समाप्त कर सकता है, और हमारी वैज्ञानिक उन्नति धरी की धरी रह जायेगी ।

८ मार्च को जब अमेरिकी उपग्रह एक गोल वस्तु से टकरा कर नष्ट भ्रष्ट हो गया तो अमेरिकी वैज्ञानिकों के हाथ पांव फूल गये, उन्होंने उस टकराने वाली वस्तु के बारे में काफी खोज की, अपने उपग्रह कैमरे से इस बारे में जान-कारी प्राप्त करने की कोशिश की, पर इस बारे में कुछ पता नहीं चल सका ।

अमेरिकी जासूसों के द्वारा इतना ही पता चला कि

रूस परामनोविज्ञान शक्ति के द्वारा कोई ऐसी विधि इजाद कर रहा है, जिसके द्वारा वह तरंग को बन्दूक की गोली की तरह का आकार दे कर उसे अन्तरिक्ष में इतनी तेजी से छोड़ने का उपक्रम कर रहा है, जिससे कि शत्रु देश के उपग्रह उस गोली से टकरा कर समाप्त हो जांय, और तभी अमेरिकी वैज्ञानिकों को यह समझ में आया कि ८ मार्च को सही हालात में गतिशील चेलेंजर किस प्रकार से नष्ट हो गया और किस प्रकार की गोली ने उसके सारे आवरण को छिन्न-भिन्न कर उसे समाप्त होने के लिए बाध्य कर दिया।

अमेरिका के पांच प्रसिद्ध अणु वैज्ञानिकों ने जिनमें श्री जार्ज० बी० वेत् (जिन्होंने परमाणु बम के निर्माण में महत्वपूर्ण सहयोग दिया था) ने अपने हस्ताक्षरों से युक्त एक रिपोर्ट प्रस्तुत की है, जिसमें बताया गया है, कि जिस प्रकार से युद्ध होने पर एक प्रकार से संबंधित अस्त्र शस्त्रों की होड़ चल रही है उसके अनुसार तीसरा विश्व युद्ध होने पर एक प्रकार से सारा संसार समाप्त हो जायेगा, परमाणु वैज्ञानिक डा० हार्चिन ने प्रमाण देकर अपनी रिपोर्ट में बताया है कि अमेरिका के पास वर्तमान में पचीस हजार परमाणु बम प्रक्षेपास्त्र और मिसाइलें है ये सभी बम हिरोशिमा पर गिराये बम से भी ज्यादा विध्वंसक और प्रहारक है, अमेरिका के पास बयालीस ऐसे बम भी है जो हिरोशिमा पर गिराये गये बम से एक हजार गुना अधिक विध्वंसकारी और विनाशकारी है, इसी प्रकार सोवियत रूस के पास इस समय लगभग तैयालीस हजार परमाणु बम, प्रक्षेपास्त्र तथा मिसाइलें है, इसके अलावा फ्रांस, जर्मनी इंगलैण्ड, और चीन के पास भी कई परमाणु बम है, जो अत्यन्त विध्वंसक है।

परा मनोविज्ञान से सम्बन्धित विशिष्ट ग्रन्थ

यों तो अंग्रेजी में परा मनोविज्ञान से सम्वन्धित हजारों ग्रन्थ प्रकाशित हैं, परन्तु कुछ ग्रन्थों के नाम नीचे दिये जा रहे हैं, इस विषय में रूचि रखने वाले इन ग्रन्थों का अध्ययन कर इसके बारे में विशेष जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

१. ह्यूमन पर्सनेल्टी एण्ड इट्स सरवाइवल ऑफ बॉडिली यैथ (डब्लू. एच. एच. मायर्स)
२. फैंटाजम्स ऑफ दी लिविंग (इ. एम. सिजविक)
३. न्यू फ्रन्टियर्स ऑफ माइंड (जे. बी. राइन)
४. द रीच ऑफ माइंड (जे. बी. राइन)
५. ट्वेंटी केसेज सजेस्टिव ऑफ रि-इन्कारनेशन (इयान स्टीवेसन)
६. साइंस एण्ड साईन्टिकल फनोमिना (जे. एन. एम. टिरिल)
७. साइकिकल रिसर्च टूडे (डी. जे. वैस्ट)
८. ट्रीटाइज ऑन पैरासायकोलॉजी (रेने सुद्री)
९. ए केस अगेंस्ट जोंस (जॉन विवियन)
१०. एट दी ऑवर ऑफ डैथ (कार्लिस व हैरलड्सन)

हिन्दी में भी परा मनोविज्ञान से सम्बन्धित पुस्तकें प्रकाशित होने लगी हैं पर अभी तक कोई प्रामाणिक पुस्तक दृष्टिगोचर नहीं हुई।

–धर्मयुग से साभार

इस रिपोर्ट के अन्त में बताया गया है, कि इन अस्त्र शस्त्रों से यदि युद्ध हुआ तो धरती आकाश और समुद्र में भयंकर विध्वंस होगा और यह युद्ध इतना प्रलयंकारी होगा कि, इसमें पराजित और विजित दोनों ही देश पूर्णतया समाप्त हो जायेंगे।

इन दिनों इतने अधिक गुप्त उपग्रह अन्तरिक्ष में छोड़े गये है कि कोई भी देश अब गोपनीय ढंग से अपने अस्त्र शस्त्र नहीं रख सकता, अतः युद्ध में विजयी होने के लिए यह आवश्यक हो गया है कि शत्रु पर किसी ऐसी नवीन प्रणाली से आक्रमण किया जाय; जिसका उसे उपग्रह या किसी भी वैज्ञानिक प्रणाली से पहले से ही ज्ञान न हो सके और न वह आक्रमण कर सके, सोवियत रूस और अमेरिका दोनों इस सम्बन्ध में प्रयत्नशील है और दोनों ही इस निर्णय पर पहुँचे है कि परामनोवैज्ञानिक शक्तियों के माध्यम से ही दूसरे देश पर पूर्णतः गोपनीय ढंग से प्रहार किया जा सकता है और इसके द्वारा ही शत्रु देश के वैज्ञानिकों पर और उनके मस्तिष्क पर नियन्त्रण पाया जा सकता है, अथवा शत्रु देश के संचालक नेताओं प्रधान मंत्री राष्ट्रपति या युद्ध मन्त्री के दिमाग को अपने अनुकूल रखा जा सकता है।

पूज्य गुरुदेव
आत्म तत्व के सिद्धतम आचार्य

पिछले अगस्त ८८ में अमेरिका की कांग्रेस ने जो अन्वेषण रिपोर्ट तैयार की है, उसमें यह स्वीकार किया गया है कि परामनोविज्ञान के माध्यम से ही अब रूस पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

अब पूरे विश्व के वैज्ञानिकों ने यह स्वीकार किया है कि परामनोविज्ञान पूर्णतः वैज्ञानिक पद्धति है, इस पर जो अन्वेषण हुए है, उसके द्वारा जहां हाथ की सफाई, जादूगरी और अन्धविश्वासों का पर्दाफास हुआ है, वहीं परामनोविज्ञान अपने आप में प्रामाणिक विज्ञान बन कर शक्ति के नवीन रहस्यों को निरन्तर उजागर कर रहा है जो कि साधारण व्यक्तियों के लिए चमत्कारों से कम नहीं है।

यह सब देख कर हमें भारतीय पुराणों पर विश्वास होने लगा है कि जिनमें दिव्य दृष्टि भगवान शिव के तीसरे नेत्र से निकलने वाली ज्वाला, ऋषि, मुनियों द्वारा अपने श्राप से सैकड़ों लोगों को भस्म कर देने वाले चमत्कारों का विस्तार से वर्णन है, आज परामनोविज्ञान पुराणों की इन सब घटनाओं को प्रामाणिकता देने में जुटा है, आज विश्व परामनोविज्ञान के माध्यम से ऐसी चमत्कारिक शक्तियों की खोज में है, जो हमारे चिन्तन में परिवर्तन करने में समर्थ है, और जिन्हें बुद्धि का अजीर्ण हो गया है, उनके लिए यह विज्ञान चुनौती बन कर खड़ा है।

चमत्कारों का उल्लेख होने पर धर्मयुग में प्रमाण के साथ प्रकाशित तथ्य को मैं सामने रख रहा हूँ।

चमत्कार का उल्लेख आने पर "तास" द्वारा

१३ जनवरी ८४ को प्रसारित की गयी एक हत्वपूर्ण घटना का वर्णन करना आवश्यक हो जाता है, इस समाचार के अनुसार इल्युशिन १८ नामक यात्री विमान एक चमकदार गोले से भिड़ने के बाद सुरक्षित तौर पर जमीन पर उतर आया, इस दुर्घटना में कोई भी यात्री और विमान कर्मचारी घायल नहीं हुआ, यह घटना काकेशस के काला सागर स्थित स्वास्थ्य केन्द्र सोची में घटित हुई थी, यह विमान ४० किलोमीटर उड़ने के बाद एक हजार दो सौ मीटर की ऊंचाई पर लगभग दस सेन्टीमीटर के प्रज्वलित गोले के सम्पर्क में आया, यह रहस्यमय गोला विमान के काकपिट से टकराया औ भीषण गर्जना करते हुए अदृश्य हो गया, कुछ सैकेण्ड बाद ही वह यात्री कक्ष में पुनः प्रकट हुआ और भय तथा आश्चर्यचकित यात्रियों के सिर के ऊपर से धीरे धीरे गुजरता हुआ विमान के पिछले भाग में पहुँच कर दो भागों में विभाजित हो गया, तत्काल दोनों भाग पुनः एकाकार हो गये और बिना आवाज किये वह प्रज्वलित गोला विमान से बाहर निकल गया, विमान चालकों ने तत्काल विमान को हवाई पट्टी पर सुरक्षित उतार लिया, विमान की राडार प्रणाली तथा तमाम उपकरण टूटे हुए पाये गये, परीक्षण करने पर विमान में दो छेद पाये गये, एक विमान की नोक पर और दूसरा पूंछ में, दोनों स्थान वहीं थे जहां से गोला प्रविष्ट हुआ तथा बाहर निकला था।

उपरोक्त घटना से स्पष्ट है कि इस प्रज्वलित गोले को विमान की
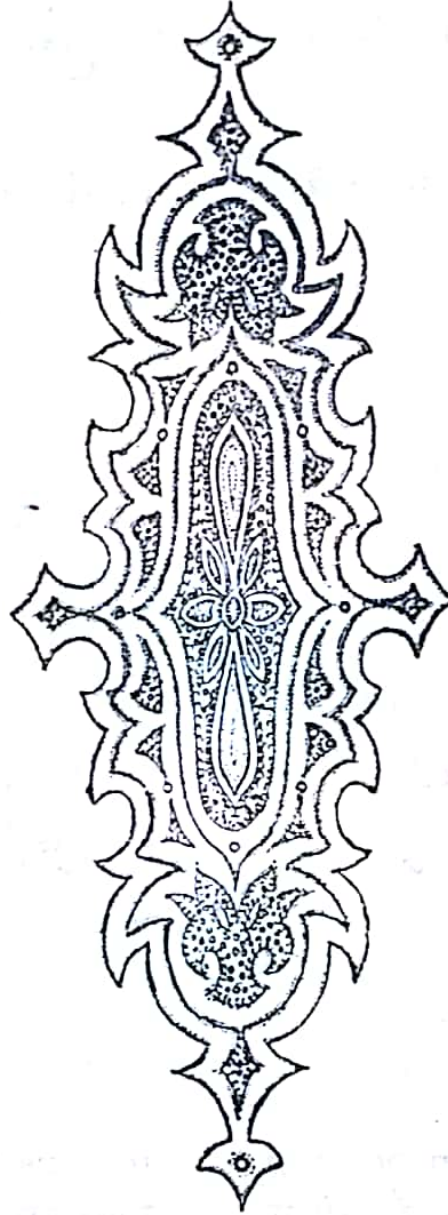
परा तत्व यन्त्र

जिस पर ध्यान केन्द्रित करने से 'मन' की अतल गहराइयों में पहुंचा जा सकता है।

राडार प्रणाली नहीं पकड़ पायी अन्यथा विमान चालक विमान को उसके बिना टकराये निकाल ले जाता, दूसरा सर्वाधिक रहस्यपूर्ण तथ्य है इस गोले में यह जानने की शक्ति होना कि कौन सी वस्तु बेजान है कौन सी जीवित, अन्यथा स्वाभाविक रूप से यह होता है कि काकपिट से टकराने के पश्चात वह चालक और यात्रियों के शरीरों के सम्पर्क में आते हुए बाहर निकलता, जिसके फलस्वरूप सभी मृत्यु के शिकार बन जाते, तीसरा आश्चर्यचकित कर देने वाला तथ्य इस गोले में विचार करने, निर्णय लेने तथा अपनी गति पर नियन्त्रण रखने की शक्ति है, यही कारण है कि वह यात्रियों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए उनके ऊपर से धीमी गति से गुजरा, संभव है वह यात्रियों का निरीक्षण करना चाहता हो अथवा उनकी प्रतिक्रिया देखने का इच्छुक हो, घटना के विवरण से यह भी सिद्ध होता है कि इस रहस्यपूर्ण गोले में अपने आकार को अनेक भागों में विभाजित कर लेने और पुनः एकाकार हो कर किसी भी धातु में से गुजर जाने की क्षमता है, निश्चित ही इसमें साधारण मानव मस्तिष्क की अपेक्षा कहीं अधिक विकसित मस्तिष्क है।

इस अद्भुत घटना के सम्बन्ध में परामनोवैज्ञानिक जो अनुमान लगा रहे है, उनमें सबसे अधिक संभावना यहीं लगती हैं कि उपरोक्त रहस्यमय प्रज्वलित गोला किसी परामानव की परामानसिक शक्ति का ही चमत्कार है।

○

अमेरिका की चुड़ैलें

जिन्होंने अमेरिका का जन जीवन अस्त व्यस्त कर रखा है
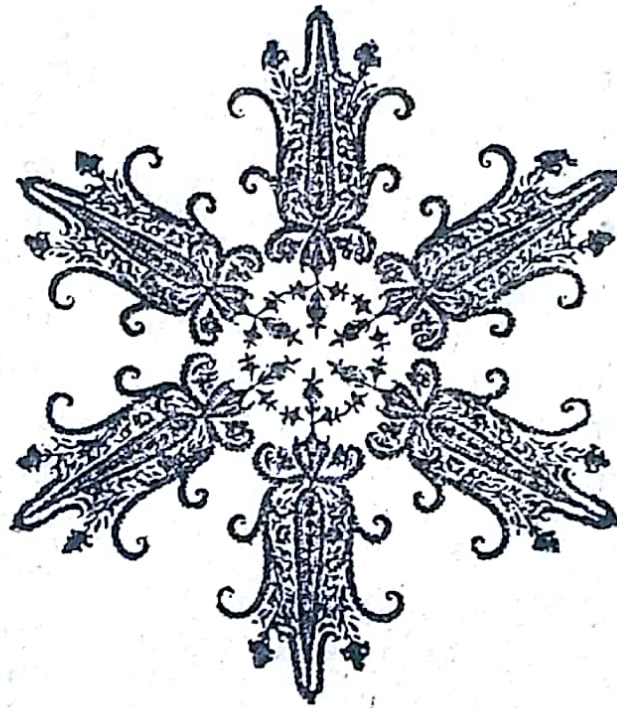
शीर्षक पढकर विश्वास नहीं होता कि बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में भी इस प्रकार की वातों पर विश्वास किया जा सकता है, और फिर शीर्षक तो है अमेरिका की चुड़ैलें...., अमेरिका, जो विज्ञान के क्षेत्र में पूरे विश्व में सर्व श्रेष्ठ है जिसने आज से पन्द्रह बीस वर्ष पहले ही चन्द्रमा की धरती पर नीलआर्मस्ट्रोंग को उतार दिया था, क्या वहां के लोग भूत प्रेतों और चुड़ेलों पर विश्वास करते है क्या स्थिति इतनी गम्भीर हो जाती है कि ये चुड़ैलें जन समाज को अस्त व्यस्त कर दें।

पर यह बात सही है अमेरिका एक तरफ विज्ञान के क्षेत्र में श्रेष्ठ प्रगति कर चुका है, परन्तु जन समाज को उतना लाभ नहीं मिल पाया है, पिछले दिनों हेमबुर्ग यूनिवर्सिटी के अध्यक्ष रार्बट फिल ने लगभग चार हजार युवकों पर परीक्षण किया था, ये युवक २१ वर्ष से ३५ वर्ष की अवस्था के बीच के नौजवान थे जिन पर आने वाले अमेरिका का भार था, उन सब से लगभग दस प्रश्न किये गये, और उनमें एक प्रश्न यह भी था कि क्या सूर्य पृथ्वी के चक्कर लगाता है या पृथ्वी

सूर्य का चक्कर लगाती है ?

और यूनीवर्सिटी के अध्यक्ष डॉ० फिल ने परीक्षण के बाद अत्यन्त दुःख के साथ अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की कि ८० प्रतिशत अमेरिकन नौजवानों को यह भी ज्ञात नहीं है कि सूर्य पृथ्वी का चक्कर लगाता है, अधिकांश नौजवानों ने उत्तर दिया कि सूर्य ही पृथ्वी का चक्कर लगाता रहता है।

यह एक सामाजिक सर्वेक्षण था, पर इससे यह पता चल जाता है कि वहां का समाज भी हमारी तरह ही सामान्य अपने सुख-दुख में ही जीवित रहने वाला और परेशान है, मुट्ठी भर वैज्ञानिक निरन्तर प्रयत्न और प्रयोग कर रहे हैं और उन्होंने विज्ञान के क्षेत्र में अमेरिका को सर्वोच्च स्थान दिलवाया है।

मैं खुद भी अमेरिका दो बार घूम आया हूँ, और वहां के सामान्य जन जीवन को निकटता से देखने का प्रयत्न किया है, मैंने देखा है कि वे भूत प्रेतों पर हम से ज्यादा यकीन करते हैं, और उन चुड़ैलों से परेशान हैं' वाशिंगटन से आगे तो एक कस्बे में होटल की मालकिन ने केवल एक खाली बचे हुए होटल के रूम को यह कह कर देने से इन्कार कर दिया कि इसमें चुड़ैल का निवास है इसलिए पिछले दस वर्षों से मैंने यह कमरा किसी को भी किराये पर नहीं दिया है, यदि कोई किराये पर कमरा लेकर उस में रात्रि को विश्राम करता है तो यह चुड़ैल उसको मार डालती है, कई होटलों में मैंने यह भी देखा कि होटल के मालिक एक कमरा बिल्कुल खुला रखे रहते है, उसमें किसी को भी ठहरने नहीं देते, उनके अनुसार इससे चुड़ैले उनको परेशान नहीं करती और वे चुड़ैले जब भी चाहे, इस कमरे में आकर ठहर जाती है।

ह्यूस्टन के आगे तो मैंने कई ऐसे भोजनालय देखे जो एक तरफ एक थाली में उस दिन के बने खाद्य पदार्थ परोस कर रख देते है और वह थाली दिन भर टेबल पर पड़ी रहती है, उस टेबल पर और कोई अन्य नहीं बैठता उनके अनुसार यह एक टेबल चुड़ेलों के लिए सुरक्षित हैं और जब भी उनको भूख लगती है तो इस थाली में से खा लेती हैं, इससे वे संतुष्ट हो कर अन्य आगन्तुक व्यक्तियों को तकलीफ नहीं देती और न भोजनालय को किसी प्रकार का कोई नुकसान ही पहुँचाती है।

यह स्थिति केवल अमेरिका की ही नहीं, पूरे यूरोप समुदाय की है, इंगलैंण्ड में तो कोई समय ऐसा भी था कि चुड़ेले केवल लन्दन की गलियों या सड़कों पर ही नहीं घूमती थी, अपितु राज घरानों में भी घुस जाती थी, और वहां की राजनीति को भी प्रभावित करने की क्षमता रखती थी।

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि इंगलैण्ड की महारानी एलिजाबेथ और राजा जैम्स के शासन काल में तो एक अध्यादेश जारी किया गया था और कुछ विशेष सैनिक तथा चुड़ैलों को पकड़ने की शक्ति रखने वाले

भूत-प्रेत चुड़ैलें

जिस प्रकार से मानव जाति में भी अलग-अलग रंग नस्ल और जाति के लोग होते है, उसी प्रकार इन इतर प्राणियों में भी भूत,पिशाच, राक्षस, चुड़ेलें आदि जातियां होती है, और निरन्तर वायुमण्डल में घूमती रहती हैं, ये मानव जाति को देख सकते है, परन्तु हम इन्हें नहीं देख पाते।

इसका कारण यह है कि मानव पंच तत्वों का बना है, जिसमें भूमितत्व भी है, इसीलिए मानव ठोस और गुरूत्वा कर्षण शक्ति से बंधा हुआ है पर इन प्राणियों में भूमि तत्व न होने की वजह से ये सभी अदृश्य रहती है, और वायु की गति से एक स्थान से दूसरे स्थान तक जा सकती है।

पर ये सभी जातियां अत्यन्त विश्वास पात्र और मानव के लिए सहायक होती है, यह अलग बात है कि इनको छेड़ने पर या इनको क्रोध दिलाने पर ये मानव को नुकसान भी पहुंचा सकती है।

तांत्रिकों की नियुक्ति की थी जिससे कि वे चुड़ेलों की धर-पकड़ कर सके और उन्हें कैद कर सके, सन् १६०० के आसपास तो चर्च में महारानी के सिपाही नित्य यह प्रार्थना करते थे कि हे ईसू! महारानी को चुड़ैलें तंग न करे, साथ ही साथ वे अपने लिए भी प्रार्थना करते थे कि उनकी नियुक्ति या ड्यूटी ऐसी जगह न लगे जहां चुड़ैलों का डेरा हो।

उस समय इंगलैण्ड के कई लार्डो, ड्यूकों के शयन कक्षों की पहरेदारी ऐसे तांत्रिकों से या सिपाहियों से कराई जाती थी, जो चुड़ेलों की कार्यशैली से परिचित और उनकी गतिविधियों को जानते थे, ऐसे सिपाहियों को विशेष ट्रेनिंग दी जाती थी, ये सिपाही चुड़ेलों की आवाजें पहिचान लेते थे और कुछ तांत्रिक उपायों, मन्त्रों और सामग्री से उन चुड़ेलों को बांध लेने में माहिर, थे उस समय इस प्रकार का ज्ञान रखने वाले सिपाहियों को विशेष योग्य समझा जाता था, और उनके तरक्की के लिए यह एक शर्त थी।

अमेरिका के जन जीवन का यह विश्वास है कि शैतान कुछ विशेष लाभ के लिए इन चुड़ेलों को पृथ्वी पर भेज देता है, और ये चुड़ेलें जब इन्सान के सम्पर्क में आती है तब मनुष्य के भौतिक आकार से रगड़ खाने की वजह से टकराव, भयानक आवाजें, और आग की चिनगारियां छूटने लगती है, इन दिनों भी अमेरिका और इंगलैण्ड में पत्र-पत्रिकाएं इस प्रकार के विवरणों से भरी रहती है, इगलैण्ड में तो इस विषय पर इतनी अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है कि उन सब को एकत्र किया जाय तो उनसे एक पूरा पुस्तकालय बन सकता है।

इस सारे प्रकाशित साहित्य का यदि हम अध्ययन करें तो लगभग सभी लेखक या विद्वान चुड़ेलों के अस्तित्व को स्वीकार करते है, और वैज्ञानिक अथवा मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह साबित करने की कोशिश करते है, कि वास्तव में ही चुड़ेलें होती है जो कि मानव जीवन को कई प्रकार से परेशान करती रहती है पर यदि इन चुड़ेलों को सन्तुष्ट किया जाय तो ये किसी भी प्रकार से हानि नहीं पहुँचाती, अमेरिका में इन चुड़ेलों को दूर करने के लिए कई विशेषज्ञ समाज में प्रतिष्ठित माने जाते है, जिस प्रकार से हमारे यहां ओझा, झाड़ीघर, भोपे आदि होते है, जो तन्त्र मन्त्र से इन चुड़ेलों को बांधने में या पेड़ पर कीलने में माहिर माने जाते है, पर अमेरिका में जो चुड़ेल-विशेषज्ञ होते है उनका समाज में काफी सम्मान होता है, गांवों और कस्बों के लोग उनको सुविधाएं देते है, ये विशेषज्ञ तन्त्रों-मन्त्रों का तो सहारा लेते ही है, साथ ही साथ डण्डे से हन्टर से भी चुड़ेलों को भगाने में विश्वास रखते है, कई बार तो अमेरिकन ग्रामीण इन चुड़ेल विशेषज्ञों के पास जाकर अपने जीवन का भविष्यफल भी पूछते है कि क्या इस मुकदमे में, मैं विजयी होऊंगा या सामने वाला जीत जायेगा, या मेरी पत्नी को गर्भ है, अगली सन्तान पुत्र होगा या पुत्री और ये चुड़ेल विशेषज्ञ अपनी पालतू चुड़ेलों के द्वारा उनके उत्तर देते है, और वे अमेरिकन नागरिक संतुष्ट हो कर अपने घर लौटते है।

शैक्सपीयर इंगलैण्ड का प्रसिद्ध नाटककार माना जाता है, उस समय तो चुड़ेलों का इतना अधिक प्रभाव आंतक था, कि उपलब्ध साहित्य से यह पता चलता है कि उस समय महीने में एक दिन सारे ग्रामवासी एकत्र

अब भूतों के फोटोग्राफ भी संम्भव है

पिछले दिनों जापान ने एक नवीन प्रकार के कैमरे का अविष्कार किया है, जिसे "वार्टिक्सोग्राफिक" कैमरा कहा गया है। इस कैमरे की विशेषता यह है कि यह शून्य में विचरण करती हुई अदृश्य आत्मा के फोटोग्राफ भी ले लेती है।

वैज्ञानिकों को इन फोटोग्राफों को देखकर आश्चर्य हुआ है कि व्यक्ति के आस पास उसके सम्बन्धियों यथा मां बाप, भाई, बहिन या अन्य मृत आत्माएं बराबर घूमती रहती है, इस कैमरे से उनके स्पष्ट फोटोग्राफ आये है।

होकर एक बड़े कड़ाह में पानी खौलाते थे, नीचे आग जलाते थे और उस उबलते हुए पानी में पशु पक्षियों की बलि दे कर चुड़ैलों को शान्त करते थे, उनका विश्वास था कि इससे चुड़ैलें सन्तुष्ट हो जाती है और फिर पूरे महीने भर किसी भी ग्राम वाले को तकलीफ नहीं देती, शैक्सपीयर के कई नाटकों में चुड़ैलों का अस्तित्व है और मंच पर चुड़ैलों के कार्यकलाप देखकर दर्शक अत्यन्त प्रभावित होते थे, उस समय शैक्सपियर के अलावा भी कई लेखक अपने नाटकों की लोकप्रियता के लिए उसमें चुड़ैलों के प्रसंग को अवश्य डालते थे, जिससे कि दर्शक प्रसन्न हो सके और उनके नाटक ज्यादा से ज्यादा बिक सके।

अमेरिका के कई प्रतिष्ठित लेखकों की पुस्तकों में भी चुड़ैलों का वर्णन प्राप्त होता है, उनके अनुसार साल में एक बार पूरे देश की चुड़ैलें एक स्थान पर एकत्र होती है, सामूहिक पशु पक्षियों की बलि दे कर आनन्द से भोजन करती है, नाचती है, गाती है, और मनोरंजन करती है, कई अमेरिकी लेखकों ने दावा किया है कि यह सब उन्होंने अपनी आंखों से देखा है।

शैक्सपियर का नाटक "मैकबैथ" अपने आप में विश्व प्रसिद्ध रचना है, और पूरे संसार में इस नाटक को मंच पर खेला गया है, परन्तु संसार के सभी लोगों के मन में यह बात घर कर गयी है कि मेकबैथ नाटक चुड़ैलों को सबसे अधिक प्रिय है और जहां पर भी यह नाटक खेला जाता है, चुड़ैले वहां अवश्य पहुँच जाती है, जहां जहां भी इस नाटक का मंचन होता है, वहां कुछ न कुछ उपद्रव अवश्य होता है, अभी पिछले दिनों मेकबैथ पर आधारित एक आपेरा में अभिनय कर रहे इक्यासी वर्षीय गायक कोचब्रांको जब मंचन के बीच ही ऊपरी मंजिल से गिर कर मर गये तो पुलिस ने इसे आत्महत्या का मामला बताया परन्तु तमाम लोगों की और दर्शकों की यह धारणा थी कि चुड़ैलों ने ही उसे उठाकर ऊपरी मंजिल पर ले जा कर वहां से धक्का दे कर उसे मार डाला है।

आत्माओं से बात-चीत संभव है

इन मृत आत्माओं से बातचीत करने की विधियां काफी समय से प्रचलित है, पश्चिम में तो डार्क पद्धति डेस्क पद्धति और ग्राफिक पद्धति से मृत आत्माओं को बुलाया जाता है और उसके द्वारा संदेश प्राप्त किया जाता है, इस प्रकार की पद्धति से उन आत्माओं के मन में क्या दबी बात रह गई है या उनकी क्या इच्छाएं है, मालूम की जा सकती है, इसी पद्धति से यदि किसी व्यक्ति की अचानक मृत्यु हो जाती है तो उस आत्मा को बुला कर यह मालूम कर लिया जाता है, कि उसने अपना धन कहां दबा कर रखा है या बहुमूल्य कागज कहां रखे है, या वह अपने परिवार वालों से क्या कहना चाहता है, आदि आदि।

ब्रिटेन के लोग तो मेकबैथ नाम से भयभीत हो गये थे, और इस नाटक को वे मेकबैथ के नाम से पुकारते ही नहीं है, इसकी अपेक्षा वे इसे 'हेरीलाइडर' या 'स्काटिस प्ले' कह कर पुकारते है, यदि कभी कोई कलाकार भूल से मेकबैथ का नाम ले लेता है तो वह घबरा जाता है। और इस के प्रायश्चित के लिए तीन बार पीछे मुड़ कर देखता है और थूक कर क्षमा याचना करता है।

अमेरिका में पिछले दिनों शिकागों में यह नाटक खेला तो अमेरिकन कलाकार पहले से ही भयभीत थे, कि यह नाटक तो चुड़ैलों का है और वे अवश्य ही किसी न किसी को मार डालेगी, और हुआ भी यही, इस नाटक के निर्देशक मि० बेलिस को नाटक के बीच में ही दिल का दौरा पड़ा और तत्काल उसकी मृत्यु हो गयी, अभी पिछले दिनों इस नाटक का मंचन न्यूयार्क में किया गया तो सभागार में ही आग लग गई और काफी कुछ नुक–सान हो गया, अमेरिकन लोग भी अब यह सोचने लगे है कि देश में मेकबैथ का मंचन किया ही न जाय, क्योंकि यह निश्चित रूप से चुड़ैलों का नाटक है, या इस नाटक पर चुड़ैलों का कब्जा हो गया है और जब भी इस नाटक

को खेला जायेगा चुड़ेलें अवश्य ही किसी न किसी की जान ले लेगी।

पिछले दिनों जब मैं अमेरिका गया तो एक अत्यन्त सभ्य और बुद्धिमान व्यक्ति से बातचीत के दौरान जब चुड़ेलों का जिक्र आया और मैंने पूछा कि क्या वास्तव में ही चुड़ेलें होती है तो इसका उत्तर देने से पहले वह थोड़ा हड़बड़ा गया और अपने होठों पर उंगली रख कर यह संकेत दिया कि ऐसा प्रश्न नहीं पूछना चाहिए था क्योंकि यदि चुड़ेलों का अस्तित्व नकारा जाता तो चुड़ेलें नाराज हो जाती है, और उत्तर देने वाले का नुकसान कर बैठती है।

जिस प्रकार से हमारे देश में भूत प्रेत का अस्तित्व माना जाता है, और हम चाहे कितना ही आधुनिक होने का दावा करें, हमारे मन के किसी कोने में यह विश्वास जमा हुआ है कि मरने के बाद कोई कोई मनुष्य भूत यौनि में चला जाता है और वह नुकसान पहुंचा देता है।

अमेरिका में चुड़ेलों के बारे में जन समाज के मन में गहरा आंतक छाया हुआ है, ऊपर से वे भले ही कितना ही वैज्ञानिक होने का दावा करे, परन्तु मन में कहीं न कहीं पर यह विचार अवश्य जमा हुआ है कि चुड़ेलें होती है यदि उसके साथ ढंग से पेश न आवे तो वे नुकसान भी पहुँचा देती है।

पिछले दिनों अमेरिका के प्रमुख पत्र 'शिकागो पोस्ट' में एक खबर प्रकाशित हुई कि डाक्टर जानडेविस अपनी प्रयोगशाला से लौट कर घर आये अपनी पत्नी और पुत्री के साथ डिनर लिया और सोने के लिए चले गये पर तभी ऐसा लगा कि जैसे उनके दरवाजे पर खटखट हो रही हो उन्होंने उठकर दरवाजा खोला तो वहां कोई नहीं था, डा० डेविस ने दरवाजा बन्द किया, और ज्योंही कमरे में वापिस सोने के लिए गये तो ऐसा लगा कि जैसे पूरे कमरे में भूचाल आ गया हो, अलमारियां और पलंग जोरों से हिलने लगे और विचित्र प्रकार की आवाजें पूरे घर से आने लगी, उस रात डाक्टर डेविस और परिवार के अन्य सदस्य एक क्षण के लिए भी नहीं सो सके।

इसके बाद तो यह नित्य का क्रम हो गया, और परेशान हो कर डा० डेविस को वह मकान आधे से कम कीमत में बेच देना पड़ा, लोगों ने भी उन्हें यही सुझाया कि मकान बेचने में ही हित है, क्योंकि उस मकान पर चुड़ेलों का कब्जा हो गया है और यदि उन्होंने मकान खाली नहीं किया तो चुड़ेलें उनके परिवार के किसी न किसी सदस्य को मार डालेगी।

इसके बाद आज दो साल हो गये वह मकान खाली पड़ा है, न तो उस मकान को कोई खरीद रहा है और न उसमें कोई किराये पर जाने के लिए तैयार हो रहा है।

धीरे धीरे अमेरिका में यह विश्वास बढता जा रहा

आप भी आत्मा से सम्पर्क स्थापित कीजिये

किसी एकान्त कमरे में जहां शोरगुल या आवाज न हो, लगभग शाम के छः बजे के आस पास आसन पर बैठ जाइये, ढीले ढाले वस्त्र धारण कीजिये, कमरे में हल्की सी मोमबत्ती लगा दीजिये इसके अलावा कोई रोशनी नहीं होनी चाहिए।

फिर जिस आत्मा को आप बुलाना चाहे उन्हें आप अपने होठों से धीरे धीरे उच्चारण करते हुए सम्मान के के साथ बुलाइये, यह आत्मा आपके माता-पिता, स्वजन पड़ौसी, प्रेमी, प्रेमिका या कोई मृत महान व्यक्ति, नेता या अन्य कोई भी हो सकता है।

जब मोमबत्ती की लौ कांपे तो समझ लीजिए कि आत्मा आ चुकी है, और आपके सामने बैठी है, तब आप अपना प्रश्न पूछिए, यदि आप बिल्कुल शान्त चित्त से बैठे है तो आपको उस आत्मा के द्वारा अवश्य ही उत्तर प्राप्त होगा।

जब बातचीत समाप्त हो जाय तब सम्मान सहित उस आत्मा को वापिस जाने के लिए कहें।

मैं मृत आत्मा को बुलाता हूं

मुसलमानी मन्त्र "उलकलमा" से सिद्ध "मृतात्मा यन्त्र" को प्राप्त कर शुक्रवार की शाम ६ बजे इस यन्त्र को एक चौकी पर रख दें, सामने लौबान धूप लगा दें, कमरे में हल्का अंधेरा हो, खिड़कियों पर पर पर्द डाले हुए हो, कमरे में लालबत्ती की मद्धिम रोशनी हो।

फिर आप बिना घबराहट के घुटने मोड़ कर (जैसे नमाज पढ़ते समय बैठते है) बैठ जाइये यन्त्र के सामने हीने के इत्र का फोहा रखिये।

आपके सामने चार छः लोग बैठे रह सकते है, पास में टेपरिकार्डर रख दीजिये उसे इस प्रकार से "ऑन" कीजिये जिससे बातचीत टेप हो सके।

फिर आप धीमी गति से किसी भी आत्मा को आवाज दीजिये, दो या तीन आवाजें (धीमी आवाज में) देते ही उस तावीज में सम्बन्धित आत्मा शर्तिया आयेगी, और आप जो भी प्रश्न पूछेंगे, उसका पूरा-पूरा जवाब देगी यह सारी बातचीत टेप हो सकती है।

है, कि चुड़ेलें और मृत आत्माएं होती है, और इन मृत आत्माओं से बातचीत की जा सकती है, धीरे धीरे इस प्रकार की विचार धारा को मानने वाले लोगों की संख्या बढ रही है और वहां पर एक संस्था कायम की गयी है जिनमें चुड़ैलों पर शोध कार्य होने लगा है 'दी स्टेडी एण्ड रिचर्स फोर दी गोस्ट एण्ड स्प्रिच्यूलिज्म" की संस्था ने बाकायदा इस पर शोध कार्य प्रारम्भ कर दिया है और इस संस्था के कई सदस्य उच्च कोटि के वैज्ञानिक डाक्टर एवं बुद्धिजीवी है।

केम्ब्रिज में जनवरी ८८ में विद्वानों की एक कांफ्रेस आयोजित की और इस विषय पर गम्भीरता से विचार किया गया, अन्त में यह निष्कर्ष निकला कि चुड़ेलें और मृत आत्माएं होती है, और अब समय आ गया है कि इनका वैज्ञानिक पद्धति से ज्ञान प्राप्त किया जाय और इन पर शोध हो, ड्यूक विश्वविद्यालय ने पिछले दिनों इसके लिए एक अलग विभाग खोल दिया है, जिसमें इस विषय पर गम्भीरता से शोध हो रहा है।

भारत में भी इस बात की मान्यता है, कि मरने के बाद आत्मा भटकती रहती है और उसे बुलाया जा सकता है, मरने के बाद अपने पिता या दादा का श्राद्ध इसी विचार की एक कड़ी है, उनके अनुसार भी उस दिन मृत आत्मा आती है, और उनके लिए जो भोजन आदि बनाया जाता है, उसे वे स्वीकार करती है।

भारत में और विश्व में "वीजा बोर्ड" का प्रयोग ज्यादा से ज्यादा होने लगा है, जिसके द्वारा मृत आत्मा का आह्वाहन किया जाता है, और उससे भविष्य से संबंधित बातें पूछी जाती है, इसके अलावा "गुह्य" विद्या के माध्यम से भी किसी भी मृत आत्मा को बुला कर उससे रूबरू बातचीत की जा सकती है, और इसके कई अनुकूल परिणाम प्राप्त हुए है, कई व्यक्ति अचानक मर जाते हैं, और वे अपने परिवार को कोई संदेश देना चाहते है तो इस साधना के माध्यम से ऐसा सम्भव हो जाता है, रूपयों का लेन देन, कोई गोपनीय पत्र कहीं रखा हो, या उसने बहुमूल्य चीजें कहीं पर छुपा कर रखी हो या जमीन में गाड़ी हो तो उनके उत्तराधिकारियों को इस साधना के माध्यम से उस आत्मा को बुला कर बातचीत के द्वारा इन सारे रहस्यों और तथ्यों का पता लगाया जाता है, और अब यह पूरे विश्व में निश्चित हो गया है कि चुड़ेलें भूत प्रेत या मृत आत्माएं होती है, और उनको बुलाना उनसे बातचीत करन सहज सम्भव है। ★

भारत का एक मन्त्र

जो हजार-हजार परमाणु बमों की शक्ति से भी ज्यादा विस्फोटक है
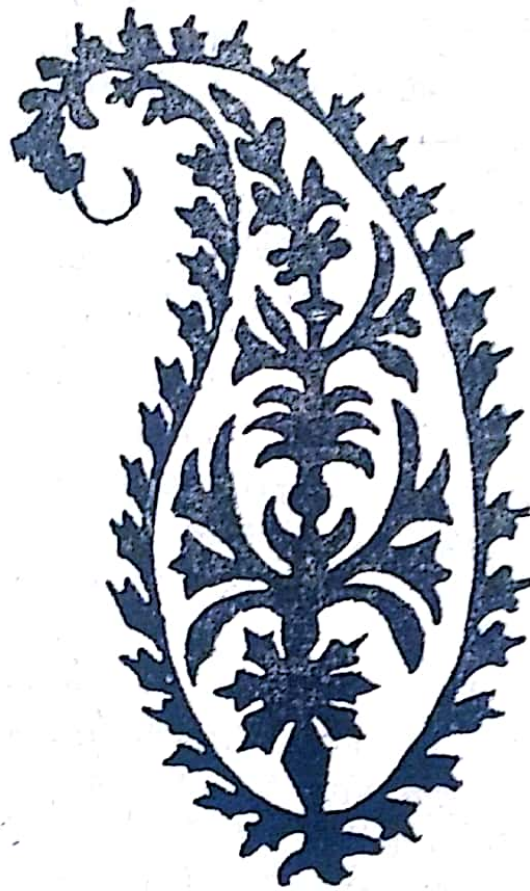
पश्चिम के एक अग्रणी लेखक अत्यन्त संवेदनशील चिन्तक और कई कई पुरस्कारों से सम्मानित विद्वान आर्थर. कोयस्लर ने एक बार भारत के अत्यन्त प्रसिद्ध समाचार साप्ताहिक "ब्लिट्ज" के सम्पादक रूसी करंजिया को एक महत्वपूर्ण वक्तव्य दिया था और इस वक्तव्य से यह कांच की तरह साफ हो जाता है, कि पश्चिम के वैज्ञानिक और चिन्तक भारत के बारे में क्या सोचते है।

आर्थर कोयस्लर १९५८ में भारत आये थे, और उन्होंने भारत के रहन-सहन के बारे में काफी कटु आलोचना की थी, उन्होंने भारतवर्ष को "एक गंदा और शोरगुल वाला देश" कहा था कि पता नहीं इतनी अव्य-

वस्थाओं के बीच भारत के लोग कैसे जिन्दा रह पाते है, सड़कों पर चलते हुए घोड़े, गधे, गायें पशु, साइकिलें आदि को देखकर उन्होंने हैरानी जाहिर की थी, इस प्रकार की अव्यवस्था के बीच भारत के लोग किस प्रकार से सड़क पर वाहन चला लेते है।

उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा था कि भारतवर्ष एक गन्दा और बिना कानून के चलने वाला देश है, भारत के मन्दिर की अपेक्षा न्यूयार्क की गन्दी और शौरगुल वाली गलियां ज्यादा अच्छी है, भारत के मन्दिरों में तो शायद शान्ति मिले या न मिले, परन्तु इसकी अपेक्षा तो मैं अमेरिका के न्यूयार्क की उस शोरगुल वाली गली में रहना ज्यादा पसन्द करूंगा।

उन्होंने महात्मा गांधी पर टिप्पणी करते हुए कहा था कि भारतवर्ष में न तो प्रजातन्त्र है और न राजतन्त्र यहां तो केवल गांधी तन्त्र है और सभी लोग उसी तन्त्र के सहारे चल रहे है।

कोयस्लर स्पष्ट वक्ता थे, उन्होंने कभी भी अपने विचारों को छिपाया नहीं, जो कुछ देखा जो कुछ अनुभव किया उसे दो टूक लिख दिया, उन्होंने भारतवर्ष के बारे में बहुत कुछ अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "द लोटस एण्ड द रोबा" में लिखा है लाल बहादुर शास्त्री ने इस पुस्तक पर प्रतिबन्ध लगवा दिया था जिससे कि यह पुस्तक भारत वर्ष में न पहुँचे क्योंकि इसमें भारत के बारे में और गांधी जी के बारे में काफी कटु आलोचनाएं थी।

आर्थर कोयस्लर ने अपने जीवन में कई ग्रन्थ लिखे है जो विश्व प्रसिद्ध हुए है उनकी प्रसिद्ध रचनाएं है, "द योगी एण्ड कमिसार" "इनसाइट एण्ड आऊट लुक" "लाइफ आफटर डेथ" "लोटस एण्ड द रोबा" 'घोस्ट इन द मशीन" आदि पुस्तकें पूरे विश्व में प्रसिद्ध हुई है, और पश्चिम के उच्च कोटि के वैज्ञानिक और विद्वान भी इस को स्वीकार करते है, कि वास्तव में ही आर्थर कोयस्लर उच्च कोटि के चिन्तक और विद्वान थे, उनकी टक्कर का लेखक शायद नहीं हो सका है।

मैं जो आगे बात कहने जा रहा हूं, वह किसी घटिया लेखक या मामूली से व्यक्ति की बात नहीं कहने जा रहा हूं मैं जो विचार बताने जा रहा हूं वह उस विश्व प्रसिद्ध लेखक के हैं, जिसने विश्व प्रसिद्ध ख्याति प्राप्त की है, जिसकी पुस्तकों ने पश्चिम में तहलका मचा दिया है, पश्चिम के वैज्ञानिक भी इस बात को स्वीकार करते है, कि आर्थर कोयस्लर अत्यन्त उच्च कोटि के वैज्ञानिक, चिन्तक और लेखक थे।

जब ब्लिट्ज के सम्पादक रूसी करंजिया ने उनसे लन्दन में भेंट की तो उन्हें ऐसा लगा कि आर्थर कोयस्लर

सिद्धि-लाभ

जीवन में मनुष्य तीन प्रकार से सिद्धि लाभ कर सकता है, पूर्व कर्म के वेग प्रवाह से, औषधियों के सेवन से तथा मन्त्र शक्ति से।

आयुर्वेद के अनुसार जब औषधि के साथ मन्त्र शक्ति मिल जाती है तो उस औषधि में एक प्रखरता पुष्टता और पूर्णता आ जाती है। आन्तरिक शक्तियों को उच्चारण कर कार्य सिद्धि में मन्त्र शक्ति का प्रयोग समझा जा सकता है, मन्त्र शक्ति के महत्व को ईसाई धर्म और इस्लाम में भी स्वीकार किया गया है।

आन्तरिक ऊर्जा को हजार-हजार परमाणु बमों जैसी शक्ति प्राप्त करने वाला मन्त्र

ॐ ह्रीं मम प्राण देह रोम प्रति रोम
चैतन्य जाग्रय ह्रीं ॐ नमः ॥

तीसरे परमाणु युद्ध से अत्यन्त चिन्तित है, बातचीत के दौरान उन्होंने यह स्पष्ट किया भी, कि यदि तीसरा विश्व युद्ध हुआ तो वह अत्यन्त भयानक होगा और सारी मानव जाति, सभ्यता, संस्कृति और एक प्रकार से सब कुछ समाप्त हो जायेगा, **तीसरा युद्ध तो शस्त्रों से लड़ा जायेगा पर इसके बाद मनुष्य केवल पत्थरों से ही लड़ सकेगा क्योंकि सारा विज्ञान और सारे वैज्ञानिक सारा चिन्तन और सारा लेखन खत्म हो जायेगा।**

रूसी करंजिया ने कहा "भारत वर्ष तो शान्ति प्रिय देश है, वह न तो परमाणु बम बनाना चाहता है और न अपने आपको परमाणु शक्ति सम्पन्न बनाये रखना चाहता है।"

और इसी प्रश्न के उत्तर में आर्थर कोयस्लर ने चौकाने वाला वक्तव्य दिया था जिसका उत्तर देते हुए भेंटकर्ता से कहा था कि, भारतवर्ष को परमाणु बम बनाने की आवश्यकता ही नहीं है।

पर क्यों ?- रूसी करंजिया ने पूछा- यदि कोई अन्य देश परमाणु बम से हमला कर दे तो अपनी आत्मरक्षा के लिए भारतवर्ष के पास क्या रहेगा, ऐसे समय में वह क्या कर सकेगा।

आर्थर कोयस्लर ने कहा कि भारतवर्ष के पास हजार हजार परमाणु बमों की शक्ति से भी ज्यादा ताकत रखने वाला "गायत्री मन्त्र" है जिसमें भयंकर विस्फोटक सामग्री है इस मन्त्र में इतनी अधिक शक्ति है, कि यह एक परमाणु बम के मुकाबले हजार परमाणु बमों के समान प्रहार करने की सामर्थ्य रखता है।

क्या गायत्री मन्त्र ?

हां गायत्री मन्त्र ! यह मन्त्र अपने आप में अत्यन्त शक्ति शाली और विस्फोटक है, युद्ध होने की स्थिति में यदि पूरे भारतवर्ष के लोग मिलकर गायत्री मंत्र का निरन्तर उच्चारण करे तो इससे इतनी अधिक ज्वलन-शील और विस्फोटक शक्ति पैदा होगी कि उसके माध्यम से वह सामने वाले देश को समाप्त कर सकता है, उसके एक परमाणु बम के मुकाबले में यह पैदा की हुई शक्ति

संसार के दस सर्वाधिक शक्तिशाली मंत्र

काली मन्त्र

क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्वाहा।

तारा मन्त्र

ऐं ओं ह्रीं क्रीं हूं फट्

षोडशी मन्त्र

ह्रीं क ए ई ल ह स क ह ल ह्लीं स क ल ह्रीं।

भुवनेश्वरी मन्त्र

"ह्रीं"

छिन्नमस्ता मन्त्र

श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं व ज्र वै रो च नी ये हूं हूं फट् स्वाहा ।।

भैरवी मन्त्र

ह् सै ह स क रीं ह् सै ।।

धूमावती मन्त्र

धूं धूं धूमावती ठः ठः ।।

बगलामुखी मन्त्र

ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां व्वाचम्मुखं स्तम्भय जिह्वाकीलय कीलय बुद्धिन्नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा ।।

मातंगी मन्त्र

ॐ ह्रीं क्लीं हूं मातंग्यै फट् स्वाहा ।।

कमला मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह् सौः जगत्प्रसूत्यै नमः ।।

अत्यन्त ज्यादा विस्फोटक होगी।

कोयस्लर के इस वक्तव्य से रूसी करंजिया चकित रह गये, गायत्री मन्त्र के बारे में कोयस्लर ने जो कहा उससे यह स्पष्ट होता है कि उनके मन में भारतवर्ष के प्रति भले ही संशय हो, भले ही उन्होंने भारत को गन्दा और असभ्य देश कहा हो परन्तु भारतवर्ष के मन्त्रों के बारे में उनका विश्वास था कि ये अत्यन्त उच्च स्तरीय अस्त्र शस्त्र है, यह अलग बात है कि **भारतवर्ष के लोग इन मंत्रों के प्रति आस्था नहीं रखते या मंत्रों के बारे में ज्ञान नहीं है, तो यह उनका दुर्भाग्य ही है, वे विज्ञान के पीछे भागते है और पश्चिम का मुंह ताकते है, जबकि भारतवर्ष के पास इतनी अधिक शक्ति है, कि उलटे यह होना चाहिए कि पश्चिम के देश भारतवर्ष की ओर ताकें।**

वैज्ञानिक कोयस्लर के मन में ये विचार उठने स्वाभाविक है, उन्होंने विज्ञान के भीतर झांक कर देखा था और अनुभव किया था कि विज्ञान के द्वारा संहार हो सकता है, **निर्माण के लिए तो हमें मंत्रों की ओर ही जाना होगा अपने आत्म तत्व को पहिचानना होगा और अपने अन्तर्चक्षु जाग्रत करने होंगे जहां जाने पर संशय की दीवारे समाप्त हो जाती है, प्रकाश का रास्ता खुल जाता है और इस प्रकार व्यक्ति अध्यात्म जगत में प्रवेश कर उस सच्चिदानन्द ब्रह्म में लीन हो जाता है, जहां पूर्ण शान्ति है** और फिर इसके लिए उन्हें भारतवर्ष सर्वाधिक प्रिय लगा, इसके लिए उन्होंने भारतवर्ष की यात्रा भी की, उन्होंने रमण महर्षि, आनन्दमयी मां आचार्य विनोवा भावे, कांची के शंकराचार्य आदि से मिले भी, पर सब खोखले से लगे, वे इनसे प्रभावित नहीं हुए उन्होंने कहा कि और अधिक गहराई में जाकर साधक अपने स्वयं के 'आत्म' को टटोल सकता है, और ऐसा होने पर ही व्यक्ति के जीवन में वहुत बड़ा परिवर्तन आ सकता है।

उन्होंने मन्त्र की शक्ति वैज्ञानिक ढंग से देखने, परखने और समझने की कोशिश की, उन्होंने बताया कि मनुष्य के शरीर तन्त्र के दो भाग है एक आन्तरिक और दूसरा वाहरी, जव तक ये दोनों भाग चेतन अवस्था में रहते है तव तक ये परस्पर सम्पर्कित और सक्रिय रहते है तथा आपस में सम्बन्ध बने रहने की वजह से जो विद्युत उत्पन्न होती है, वह पूरे शरीर में फैलती है।

इस संघर्ष से दो प्रकार की विद्युत उत्पन्न होती है, घार्षणिक और धारावाही। घार्षणिक विद्युत का उत्पादन शरीर करता है तो धारावाही विद्युत का उत्पादन मस्तिष्क। "मन्त्र" में इन दोनों विद्युतों का प्रयोग होता है, जिससे उसका प्रभाव अचूक हो जाता है।

जिस प्रकार धातु और रासायनिक पदार्थो को मिलाने से विद्युत बनती है, ठीक उसी प्रकार मन्त्र और उच्चारण शक्ति के द्वारा भी विद्युत का उत्पादन होता है और इस विद्युत में चमत्कारिक शक्ति आ जाती है, फलस्वरूप इस विद्युत से मानव की आंतरिक भाव शक्ति प्राण शक्ति, मन शक्ति के द्वारा मंत्र असाधारण शक्ति, प्राप्त कर मनोवांछित फल देना प्रारम्भ कर देता है।

कोयस्लर ने अपने जीवन में मन्त्र शक्ति के प्रयोग से असाधारण और असंभव कार्य कर वैज्ञानिकों को यह बता दिया था कि मन्त्र शक्ति के माध्यम से विज्ञान में पूर्णता आ सकती है, और यह पद्धति पूर्णरूप से शत प्रतिशत वैज्ञानिक है। ★

मैं एशिया की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी बनी हूं

तन्त्र के माध्यम से

लन्दन का विश्व प्रसिद्ध गालबर्थ हॉल, जो खचाखच भरा हुआ है, हाल में तिल रखने की भी जगह नहीं है' बाहर हलकी हलकी गुलाबी सर्दी है, हाल के बाहर भी सैकड़ों लोग उस परिणाम को जानने के लिए

सौन्दर्य

सौन्दर्य का आधार आकर्षण और चुम्बकीय व्यक्तित्व है, एक ऐसा शरीर जो कोमलता, मधुरता और सौन्दर्य से युक्त हो, जिसको देख कर सामने वाला ठगा सा रह जाय, जिसका सारा शरीर एक उचित अनुपात में ढला हुआ हो, जिसके चेहरे पर एक अजीब सा आकर्षण प्रभाव और चुम्बकत्व हो जिसे देखकर तृप्ति मिले, आनन्द के वातावरण का संचार हो ऐसा पुरूष सौन्दर्य भी हो सकता है, और नारी सौन्दर्य भी।

इमर्सन ने तो अपनी कविता में कहा है कि चुम्बकीय सौन्दर्य ही संसार की उद्विग्नता, लड़ाई झगड़े द्वेष, क्रोध, लड़ाई, मारपीट और तनाव को समाप्त कर सकता है।

उत्सुक उतावले है, जिसमें **"विश्व सुन्दरी का चयन"** होना है।

इस बार यह कम्पीटीशन काफी "टफ" था, क्योंकि इस बार इस कम्पीटिशन में लगभग १२३ देशों की सुन्दरियों ने भाग लिया था जो कि अपने अपने देश का प्रतिनिधित्व करती थी, जो वास्तव में ही सुन्दरता के मापदण्ड पर खरी उतर रही थी जिनकी झलक पाने के लिए युवक बेताब और उतावले थे।

और इन्हीं रूपमी सुन्दरियों के बीच उस सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी का चयन होना था जिसके सिर पर विश्व सुन्दरी का राजमुकुट पहिनाया जाने वाला था, उसका चयन होते ही लाखों-करोड़ों डालरों के अनुबन्ध उसकी झोली में आने के लिए तैयार थे, जिसे पुरस्कारों से लाद दिया जाने वाला था, जो एक ही रात में पूरे विश्व में प्रसिद्ध होने वाली थी।

और तभी इन रूपसी सुन्दरियों की चयन प्रक्रिया प्रारम्भ हुई, एक एक सुन्दरी निर्णायकों के सामने से गुजरती और इस प्रकार इस कम्पीटिशन में आने वाली सुन्दरियों की पंक्ति समाप्त होते ही निर्णायकों ने मीटिंग की और उन्होंने मंच पर आकर सांस रोके हुए उत्सुक दर्शकों से भरे हुए हाल में घोषणा की कि इस बार अत्यन्त कठिन और संघर्षमय प्रतियोगिता में फिलीपिन की सुन्दरी मिस० जेंडा विश्व सुन्दरी चुनी गई है, निर्णायकों के प्रधान रिचर्ड हेरमेन की इस घोषणा के साथ ही हाल में उपस्थित सभी लोगों ने खड़े हो कर तालियों

की गड़गड़ाहट के साथ विश्व सुन्दरी का स्वागत किया और लार्ड के हाथों उस विश्व सुन्दरी का राजमुकुट उसके सिर पर पहिनाया, एक बार फिर पूरा हाल और हाल के बाहर खड़े लोगों की तालियों से पूरा वातावरण गु'जरित हो गया।

और तभी अध्यक्ष ने माइक विश्व सुन्दरी के हाथों में थमा दिया जिससे कि वह उपस्थित दर्शकों और प्रशंसकों के प्रति आभार व्यक्त करें और चन्द शब्दों में अपनी बात कहें।

मिस जेंडा माईक पर आई, इठलाती हुई एक भरपूर निगाह उपस्थित प्रशंसकों पर डाली और सबका आभार व्यक्त करती हुई रहस्योद्‌घाटन किया कि मेरी सुन्दरता और विश्व सुन्दरी का पद प्राप्त करने का रहस्य मेरी सुन्दरता, खानपान, या कोई विशिष्ट औषधि सेवन नहीं है, अपितु इसका रहस्य "तन्त्र प्रक्रिया" है, और इसका सारा श्रेय मेरे गुरू रिचर्ड ब्रंट को जाता है, जो कि इस क्षेत्र के माहिर तांत्रिक है।

सारा वातावरण और उपस्थित दर्शक सन्न से रह गये, **पहली बार तन्त्र के माध्यम से नारी शरीर को अत्यन्त सुन्दर और आकर्षक बनाया गया था थुल थुल और भारी भरकम शरीर को तन्त्र के माध्यम से पतला, छरहरा और सुडौल बनाया गया था, पहली बार तंत्र के माध्यम से उसकी आंखों में चमक और होठों पर रहस्यमय मुस्कराहट प्रदान की गई थी पहली बार इस विश्व में तंत्र का सफल प्रयोग नारी शरीर पर किया गया था, और उसमें पूर्ण सफलता प्राप्त हुई थी।**

पर यह कोई नयी बात नहीं थी, इससे पहले तिब्बत में इस प्रकार के प्रयोग होते रहे है, **तिब्बत के तवांग मठ** में कुछ विशिष्ट तांत्रिक प्रक्रियाओं के माध्यम से कुरूप, काली और असुन्दर नारी- शरीर को निखार कर विश्व सौन्दर्य के समकक्ष लाने का प्रयास होता रहा है, और १९८३ में तिब्बत के प्रसिद्ध लामा वागवेन अमेरिका पहुँचे और उन्होंने जब टी. वी. पर घोषणा की, कि **आज के जीवन का आधार तंत्र है, और इसके माध्यम से ही हम विश्व को ज्यादा प्रफुल्लित, ज्यादा सौन्दर्यमय बना सकते है।** उन्होंने घोषणा की कि २३ जनवरी १९८३ को प्रातः १ बजे हजारों लाखों लोगों की भीड़ में अत्यन्त काली बेडौल और भारी भरकम नारी शरीर को दूर बैठे-बैठे ही तन्त्र

हिरण्य गर्भ पद्धति

यह पद्धति मूल रूप से तिब्बती साधना का एक अंग है, और वे पिछले कई सौ वर्षो से इस पद्धति को अपनाते आये है, यही कारण है कि तिब्बतीय सौन्दर्य संसार का श्रेष्ठ सौन्दर्य कहलाता है।

हिरण्य गर्भ पद्धति से साधक के शरीर में एक विशेष प्रकार का आलोड़न-विलोड़न होने लगता है, और साधना समाप्त होते होते उसकी आंखों में एक विशेष प्रकार की विद्युत प्रवाह होने लगती है, जिसे "हिरण्य गर्भ प्रवाह" या "पैरामेगनेट रेज" कहा जाता है, इन किरणों की यह विशेषता है कि उसके दृष्टि पथ पर जो भी होता है उसे ये किरणें सुन्दर सुन्दरतर, सुन्दरतम बना देती है इन किरणों के माध्यम से कुछ ही मिनटों में सामने वाले पदार्थ को मनोवांछित आकार दिया सकता है तांत्रिक या साधक इस प्रवाह को देते देते जो कुछ सोचता है, जो कुछ आज्ञा देता है, उसी के अनुरूप सामने वाले पदार्थ का निर्माण या परिवर्तन होता रहता है, उसके चिन्तन में यदि शरीर की सुडौलता छरहरापन या इसके अतिरिक्त जो कुछ चिन्तन होता है, वैसा ही आकार या वैसी ही प्रक्रिया सामने वाले शरीर में होती रहती है और कुछ ही मिनटों में हिरण्य गर्भ प्रवाह देने वाला जो कुछ सोचता है, या आज्ञा देता है वैसा ही वह सामने वाला शरीर बन जाता है।

पेरामेगनेटिक किरणें

पश्चिम में सरकार से नियन्त्रण कई संस्थान खुल गये है, जहां पैरामेगनेटिक रेज का प्रभाव देने की व्यवस्था है, उन्होंने कुछ युबकों को इस कार्य में तैयार किया है, जिसकी आंखों से पैरामेगनेटिक रेज प्रवहित होती हैं।

इसको जानने वाला व्यक्ति एक कुर्सी पर बैठ जाता है, और सामने लगभग दस फीट की दूरी पर कोई नारी शरीर या पुरुष शरीर बैठा होता है, वह पहले से ही एक फार्म भर कर दे देता है कि कि वह अपने शरीर में क्या क्या परिवर्तन चाहती है, इस फार्म में उसे स्पष्ट रूप से उल्लेख करना पड़ता है कि वह कितनी हाइट चाहती है, सीने का नाप, कमर का नाप, नितम्बों का नाप, आंखें, सिर के बालों का रंग, आदि बातें और इच्छाएं उस फार्म में लिखकर वैज्ञानिक को दे दी जाती है।

और पैरामेगनेटिक वैज्ञानिक अपने शरीर में विशेष पद्धति से आलोड़न विलोड़न कर आंखों से पैरामेगनेटिक प्रवाह उस सामने वाले शरीर पर डालता है और उस फार्म में भरे हुए चिन्तन को भी उस प्रवाह के साथ साथ देता रहता है।

यह क्रिया लगभग ४० मिनट चलती है और इन ४० मिनटों में उस सामने बैठे हुए शरीर को उसके मन के अनुरूप आकार दे दिया जाता है।

जापान के इस साइन्स के जानकार और "द पैरामेगनेटिक रिसर्च एण्ड एनलाइसिस इन्सीटीट्यूट" के अध्यक्ष वागचू के अनुसार पुरुष चौड़ा सीना, लम्बा कद और सुडौल आकृति की इच्छा रखते है, तो स्त्रियां गौरा रंग, अनुकूल हाइट और लम्बे घने काले बालों की इच्छा रखती है।

के माध्यम से निखारने का प्रयोग करूंगा और उस कुरूप नारी शरीर को प्रकृति का अत्यन्त असाधारण सौन्दर्यमय पुष्प बना कर सबके सामने प्रस्तुत कर दूंगा।

और उस दिन पूरे अमेरिका में गहमागहमी थी, युवकों के हृदय में उत्साह और रहस्य था तो असुन्दर अमेरिकन महिलाओं के मन में इसके परिणाम जानने की उत्सुकता थी क्योंकि इसके द्वारा ही वे अपने सौन्दर्य में निखार प्राप्त कर सकती थी, इससे पहले उन्होंने जोगिंग कसरत व्यायाम औषधि-सेवन और डाइटिंग आदि सभी प्रयास करके हार गई थी, पर फिर भी वे अपने शरीर को वैसा नहीं बना सकी थी जो पुरुषों को बांध कर रख दें, जिस सौन्दर्य की चमक से सामने वाला व्यक्ति हतप्रभ हो जाय वे ऐसा सौन्दर्य चाहती थी और अब उनकी आशा का केन्द्र लामा वागवेन की घोषणा ही था।

२३ जनवरी १९८३ के दिन के ११ बजे वाशिंगटन के "प्रिमर्ज हाल" में जरूरत से ज्यादा भीड़ थी, बाहर इतनी अधिक लोगों की भीड़ जमा थी कि रास्ता बनाने के लिए पुलिस को हलका लाठी चार्ज करना पड़ा था और ठीक एक बजे हाल में यह प्रक्रिया प्रारम्भ हुई, उस समय हाल में कई प्रसिद्ध वैज्ञानिक, राजनायिक और सौन्दर्य पारखी उपस्थित थे, तत्कालीन राष्ट्रपति के विश्वस्त मि० ब्रिथ और प्रेस कम्यूनर मि० किचलन और उसकी पत्नी भी विद्यमान थी।

मंच पर लामा वागमेन बैठ गये थे, और उनसे दस

फीट की दूरी पर एक अमेरिकन महिला कुर्सी पर बैठी हुई थी, जिसकी उम्र लगभग ३० वर्ष थी, रंग काला ऊंचाई साढे चार फीट और वजन १३८ किलो था, किसी भी दृष्टि से यह महिला सुन्दर नहीं कही जा सकती थी, हाल में चारों तरफ टेलीविजन कैमरे लगे हुए थे, और बाहर पूरा अमेरिका सांस रोके बीसवीं शताब्दी के इस अद्वितीय प्रयोग को देख रहा था।

लामा ने अपने यहां की प्रसिद्ध साधना **'हिरण्य गर्भ'** पद्धति से आंखों में अनंग रचना की और अपनी दृष्टि उस बैठी हुई युवती मिसेज हेलवन के शरीर पर टिका दी, धीरे धीरे ऐसा लगने लगा कि जैसे हेलवन के शरीर में परिवर्तन आ रहा है, शरीर का मोटापा कम होता जा रहा है, और सारे शरीर में एक उद्वेलन एक रासायनिक प्रक्रिया तेजी के साथ होने लगी है।

यह क्रम लगभग ४० मिनट चला और लोगों ने मिसेज हेलवन को लामा के पास ही निर्णायकों के बीच खड़ा कर दिया।

और इस दृश्य को देखकर पूरा अमेरिकी समाज आश्चर्यचकित था मोटी और थुलथुल शरीर की हेलवन पतली और छरहरी हो गयी थी, शरीर का रंग ताम्बई रंग का आकर्षक बन गया था, आंखों में चमक और वजन घट कर मात्र ४८ किलो रह गया था, शरीर का नाप २४-२६ हो कर एक ऐसा नारी शरीर लोगों के सामने माइक पर खड़ा था जो सभी दृष्टियों से अद्वितीय सौन्दर्यशाली कहा जा सकता है, चेहरे पर भोलापन और अजीब सी मुस्कराहट स्वतः आ गई थी और कुछ समय पहले ३० वर्ष की हेलवन मुश्किल से १९ वर्ष की लग रही थी।

सारा हाल तालियों की गड़गड़ाहट से भर गया और **पहली बार विज्ञान ने इस बात को** स्वीकार किया कि **तंत्र के माध्यम से वह सब कुछ सम्भव है,** जो विज्ञान **की शब्दावली में असम्भव माना** जाता है।

इसके बाद तो अमेरिका और इंगलैण्ड में इस विज्ञान को समझने और सीखने के लिए होड़ सी लग

पैरामेगनेटिक पद्धति से संबंधित प्रकाशित ग्रन्थ

१- पैरामेगनेटिक रेंज - ए स्टेडी एण्ड एनलाइसिस - - मि० ब्रि० एण्ड कूवर
२- हिरण्य गर्भा - ए स्टेडी - - जार्ज हेनरज
३- ब्यूटी एण्ड ब्यूटी - - विलयम फ्रेड
४- ए स्टेडी आफ ब्यूटीयन तन्त्रा - - मि० विन्क
५- पैरामेगनेटिक रेज - - वागवेन चू
६- हिरण्य गर्भा - ए कम्पलीट तंत्रा - - लामा वागवेन
७- ए डायनामेटिक तंत्र - हिरण्य गर्भा - - मि० जेक्वल
८- वर्ल्ड ब्यूटी बाई पैरामेगनेटिक - - मि० विदमोर

इसके अलावा भी कई ग्रन्थ इससे संबंधित पश्चिम में प्रकाशित हो रहे है, भारतवर्ष में भी एक छोटी सी पुस्तक प्रकाशित हुई हैं "पैरामेगनेटिक किरणें" जो कि एक वर्ष पहले प्रकाशित हुई थी।

गई, इंगलैण्ड के दो वैज्ञानिक मि० ब्रिक० और मि० जे० रिचर्ड ने तो उसी दिन वहीं घोषणा कर दी थी कि हम आज से वागवेन के साथ ही जा रहे है।

तिब्बत की इस हिरण्य गर्भ पद्धति पर काफी खोज हुई है, और अमेरिका के राष्ट्रपति के विशेष हस्तक्षेप से एक स्वतन्त्र संस्था का निर्माण हुआ है, जिसका नाम है "ए स्टेडी आफ ब्यूटियन तन्त्र" और इस पर निरन्तर खोज हो रही है, उन्होंने यह अनुभव किया है कि वास्तव में ही इस तन्त्र में कुछ ऐसी प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से तन्त्र कर्त्ता की आंखों में एक विशेष प्रकार की पैरा-मेगनेटिक प्रकाश निश्चत होने लगता है जिससे सामने बैठे हुए पुरुष-शरीर या नारी-शरीर की फालतू चर्बी और असौन्दिर्यतत्व घुल कर समाप्त होने लगते है, और कुछ ही समय में वह सामने वाला व्यक्तित्व अपने आप में ही अद्वितीय और दिव्य बन जाता है।

पिछले दिनों जापान के प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण पत्र 'इज वेन' में एक सूचना प्रकाशित हुई थी कि जापान में हिरण्य गर्भ पद्धति में सुधार कर ऐसी मशीन का निर्माण किया है, जिससे पैरामेगनेटिक प्रकाश निकलने लगता है, और उसके द्वारा नारी शरीर के किसी विशेष अंग को उचित आकार और सौन्दर्य प्रदान किया जा सकता है, अब आपरेशन या प्लास्टिक सर्जरी पुरानी पद्धति हो चुकी है, प्लास्टिक सर्जरी से काफी तकलीफ और लम्बा समय लगता है, परन्तु इस पैरामेगनेटिक क्रिया के द्वारा बिना स्पर्श किये सामने वाले शरीर को मन चाहा आकार दिया जा सकता है, उसकी हाइट बढाई या घटाई जा सकती है, शरीर की त्वचा को मन चाहा रंग और चमक दी जा सकती है यही नहीं अपितु टूटे हुए विकृत शरीर के अंगों को भी इस पैरामेगनेटिक किरणों के माध्यम से पूर्णता और सुन्दरता प्रदान की जा सकती है, जापान में ही "पैरामेगनेटिक संस्थान" के द्वारा जो शोध हो रही ही वह अपने आप में क्रांतिकारी है इसके माध्यम से उन्होंने फूलों पर और वृक्षों पर भी प्रयोग किये हैं और इन फूलों को, पेड़ों या पौधों को मन चाहा आकार रंग और सौन्दर्य प्रदान करने में सफलता पाई है, आज जापान की नई पीढी की हाइट इस पद्धति के माध्यम से बढने लगी है।

हिरण्य गर्भ पद्धति के अन्यतम आचार्य
पूज्यवर श्रीमाली जी

पिछले दिनों बम्बई में एशिया क्वीन की चयन प्रक्रिया हुई जिसमें एशिया की लगभग ३७ सुन्दरियों ने भाग लिया था, इसके निर्णायकों में मि० ए० एन० मूर, लेडी हून, मि० गालवेन और कई भारतीय निर्णायक थे, ये सभी अन्त-र्राष्ट्रीय स्तर के निर्णायक थे।

११ नवम्बर ८७ को बम्बई में "एशिया क्वीन" प्रतियोगिता में मिस बीजल हिंगोरानी का सर्व सम्मति

सम्बन्ध

मन्त्र का मानव के मनोविज्ञान के साथ, तन्त्र का सूक्ष्म और भौतिक विज्ञान के साथ तथा यन्त्र का सूक्ष्म तथा स्थूल भौतिक विज्ञान के साथ सम्बन्ध हैं।

मन्त्र

मन्त्र तो एक आन्तरिक चेतना का बाहरी संसार से पूर्ण सम्बन्ध है, स्वयं का स्वयं के द्वारा। मंत्र के द्वारा ही मनुष्य अपने श्रेष्ठतम रूप को समझता है, उससे परिचित होता है, और अपार शक्ति प्राप्त कर अलभ्य दृश्य देख सकता है, अद्वितीय कार्य सम्पन्न कर सकता है।

उपचार

दो वर्ष पहले बम्बई के एक बहुत बड़े अस्पताल में हृदय विशेषज्ञों, प्रसिद्ध चिकित्सकों तथा तांत्रिक वैज्ञानिकों की मौजूदगी में एक प्रयोग किया गया, वह प्रयोग था, गम्भीर असाध्य रोग ग्रस्त रोगियों को मन्त्र दीक्षा द्वारा स्वस्थ करने का, यह प्रयोग काफी हद तक सफल रहा और यह विश्वास हुआ कि "हिरण्य गर्भ प्रयोग" से कैंसर और पोलियो जैसे गम्भीर रोगियों को भी स्वस्थ किया जा सकता है।

से चयन हुआ, यह पहला अवसर था, कि उसे सौ में से सौ अंक प्राप्त हुए और सभी निर्णायकों की राय में बीजल हिंगोरानी ही सर्व श्रेष्ठ सुन्दरी थी।

एशिया क्वीन का ताज पहिनने के बाद मिस० बीजल हिंगोरानी ने अपने प्रशंसकों और निर्णायकों को धन्यवाद देने के बाद बताया कि मुझे जो सुन्दरता और कोमलता प्राप्त हुई है, और मैं जो "एशिया क्वीन" चुनी गई हूं उसका आधार तन्त्र हैं, एक राजस्थान के रहने वाले से मैंने अपने शरीर को सुडौल, सुन्दर, आकर्षक और अन्तर्राष्ट्रीय सौन्दर्य पैमाने के अनुरूप बनाया हैं, आज मुझे सम्मान प्रसिद्धि और जो सफलता मिली हैं, उसके मूल में मेरे तांत्रिक गुरू और तन्त्र ही हैं।

और इस वक्तव्य ने पूरे हाल में सनसनी फैला दी हजारों हजारों स्त्रियों ने भविष्य के सपने बुनने शुरू कर दिये थे इसी गड़गड़ाहट के बीच बीजल हिंगोरानी को एशिया क्वीन का ताज पहना दिया गया था और दूसरे दिन सारे समाचार पत्र बीजल हिंगोरानी और उसके व्यक्तित्व से भरे पड़े थे।

आज पूरा विश्व सौन्दर्यमय बनने को उतावला हैं और इस सौन्दर्य को बनाने में तन्त्र का बहुत बड़ा सहयोग हैं, इस बात को विज्ञान ने स्वीकार किया है, इंगलैण्ड के प्रसिद्ध डाक्टर और सौन्दर्य विशेषज्ञ रिचर्ड हेल ने कहा हैं कि आने वाला समय तन्त्र का हैं, और तन्त्र के माध्यम से ही यह दुनियां ज्यादा सुन्दर और ज्यादा आनन्दयुक्त बन सकती हैं।

स्वप्न

बताते हैं भविष्य का लेखा-जोखा
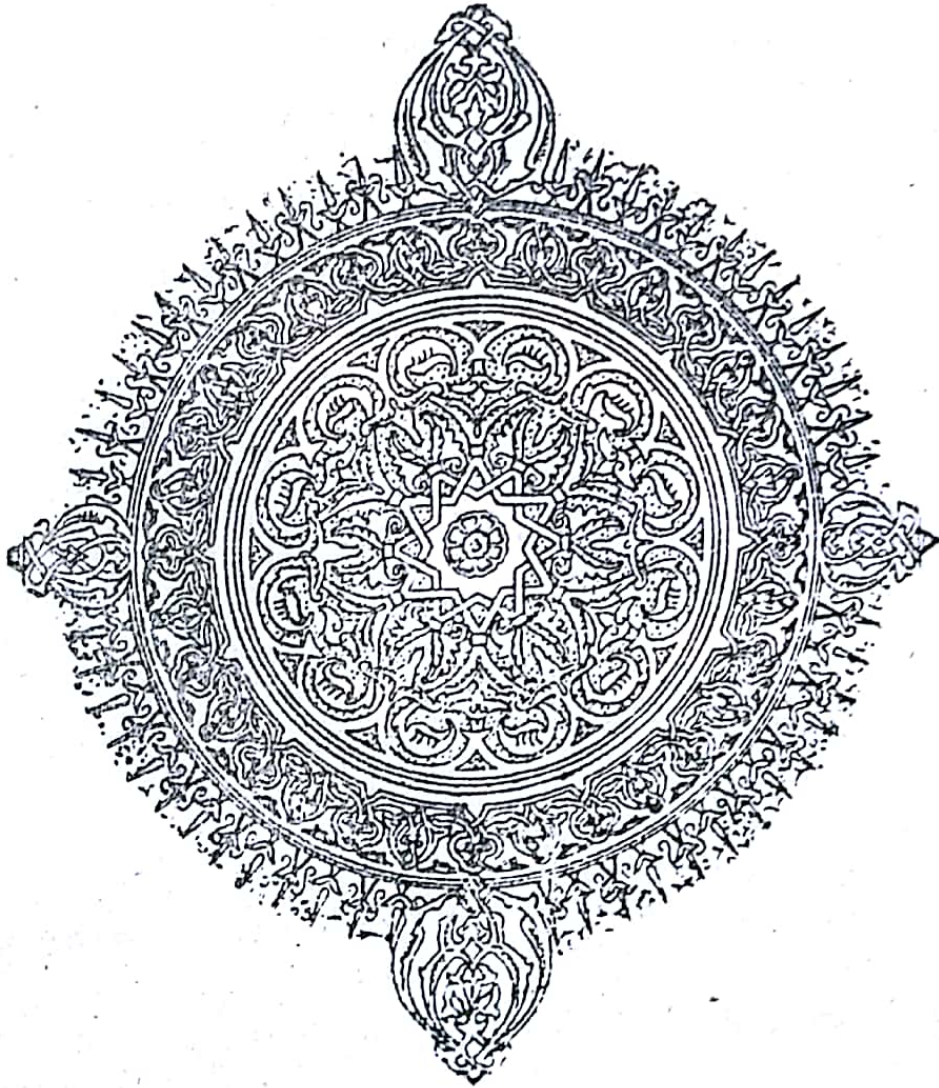
स्वप्नों के बारे में पिछले पाँच हजार वर्षों से बराबर शोध हो रहा है और अभी तक यह गुत्थी ज्यों की त्यों उलझी हुई है कि क्या स्वप्नों का वास्तविक जीवन में कोई महत्व है भी या नहीं, कुछ लोग स्वप्नों को मन की विकृति बताते है, तो कुछ लोगों की यह धारणा है कि स्वप्न वास्तव में ही भविष्य के पथ-प्रदर्शक है और जहां व्यक्ति उलझ जाता है जहां व्यक्ति को कोई रास्ता दिखाई नहीं देता वहां स्वप्न उसकी बराबर मदद करते हैं।

वैज्ञानिकों का यह कहना है कि हमारे मस्तिष्क के आसपास चौबीस करोड़ रक्त वाहिनियों और सिराओं की एक मोटी पट्टी बनी हुई है, जो मानव के चेतन और अचेतन दृश्य और अदृश्य बिम्बों को लेकर उस पट्टी पर सुरक्षित जमा रखते है, और समय आने पर ये बिम्ब ही स्वप्न का आकार लेकर व्यक्ति के सामने उपस्थित होते है।

रूसी वैज्ञानिकों के अनुसार स्वप्न को व्यर्थ का समझ कर टाला नहीं जा सकता, वास्तव में ही स्वप्न पूर्ण रूप से यथार्थ और वास्तविक होते है, यह अलग बात है कि हम इनके समीकरण, सिद्धान्त और अर्थो को समझ नहीं पाते, दूसरी बात यह है कि स्वप्न कुछ क्षणों के लिए आते है, और अदृश्य हो जाते है, जिससे कि व्यक्ति प्रातः काल तक उन स्वप्नों को भूल जाता है, परन्तु यह बात निश्चित है कि एक स्वस्थ व्यक्ति प्रत्येक रात में तीन से लगाकर सात स्वप्न अवश्य देखता है।

अमेरिका के प्रसिद्ध स्वप्न विशेषज्ञ जार्ज हिच ने पुस्तक "ड्रीम" में प्रमाणों के साथ यह स्पष्ट किया है कि व्यक्ति स्वप्नों के माध्यम से ही अपने जीवन में पूर्णता प्राप्त कर सकता है, हमारे जीवन में जितनी भी गुत्थियां है जितनी भी उलझने है इन उलझनों का हल स्वप्नो के पास है और प्रकृति ने मानव शरीर की रचना इस प्रकार से की है कि जहां मानव के जीवन में गुत्थियां और परेशानियां है, बाधाएं और उलझनें है वहीं उन उलझनों या समस्याओं का हल भी प्रकृति स्वप्नों के माध्यम से दे देती है।

मानव शरीर के अन्दर दो प्रकार की स्थितियां है, एक चेतन और दूसरा अचेतन मन; चेतन मन जहां बाहरी दृश्य और परिवेश को स्वीकार कर जमा करता रहता है, वहीं आन्तरिक मन हमारे पूर्व जन्मों की घटनाओं से पूरी तरह से सम्बन्धित रहता है, इसमें तो अब कोई दो राय नहीं कि व्यक्ति का बार बार जन्म होता है और पिछले जीवन के कार्यो दृश्यों और घटनाओं का प्रभाव भी वह इस जीवन में प्राप्त करता रहता है, उसे वहन करता रहता है, यह अचेतन मन ही स्वप्नों का वास्तविक आधार है, और इस अचेतन मन के पास

स्वप्नों की भाषा

स्वप्नों की भाषा सामान्य भाषा नहीं होती, जब स्वप्न आते हैं, तो वे आन्तरिक मन पर अंकित तथ्य होते है, और आंतरिक मन हमारे वर्तमान जीवन से भी जुड़ा होता है तथा इस जन्म से पहले के जन्म से भी उसका संबंध होता है इसलिए उस अन्तर्मन के द्वारा जो संदेश प्राप्त होते है, वे कभी कभी हमें रहस्यमय और काल्पनिक लग सकते हैं, परन्तु कोई भी स्वप्न व्यर्थ नहीं होता प्रत्येक स्वप्न का एक निश्चित अर्थ और उद्देश्य होता है, यदि हम उन उद्देश्यों को तथा उन अर्थो को समझ ले तो हम अपने जीवन को ज्यादा अनुकूल एवं ज्यादा सुखमय बना सकते हैं।

इस अन्तर्मन का संबंध हमारे भविष्य से भी जुड़ा होता है और स्वप्नों के माध्यम से हमें भविष्य का लेखा-जोखा प्राप्त हो जाता है, इस संबंध में विदेशों में और भारत में कई संस्थाएं है जो स्वप्नों का विश्लेषण कर उनके अर्थ को समझाती है।

"मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान" के अन्तर्गत भी एक संस्था "स्वप्न : शोध अनुसंधान एवं विश्लेषण" के रूप में कार्य कर रही है, जिसका उद्देश्य लोगों को उनके स्वप्नों का विश्लेषण करके उन्हें भेजना है, यह विश्लेषण सर्वथा मुफ्त है, इसके लिए किसी प्रकार का शुल्क नहीं लिया जाता।

आप अपना स्वप्न विस्तार से लिख कर हमें भेज दें, स्वप्न आने की तारीख और अनुमानित समय भी लिखकर हमें भेज दें, साथ ही आप अपना पूरा पता लिखा हुआ टिकट लगा हुआ लिफाफा भी हमें भेजे जिससे कि आपके स्वप्न का विश्लेषण कर हम आपको भेज सकें।

अपनी बात को बताने या समझाने का और कोई रास्ता नहीं है, फलस्वरूप वह निद्राकाल में मानव को चेतावनी भी देता है उन दृश्यों को स्पष्ट भी करता है और उसका पथप्रदर्शन भी करता है, इस दृष्टि से अचेतन मन व्यक्ति के लिए ज्यादा सहयोगी और जीवन निर्माण में सहायक है।

स्वप्न : एक पूर्ण विज्ञान

हमारे जीवन की कोई भी घटना व्यर्थ नहीं है, सावधान और सतर्क व्यक्ति प्रत्येक घटना से फायदा उठाता है, और उसको व्यर्थ समझ कर छोड़ नहीं देता। यदि जीवन में सफलता और पूर्णता प्राप्त करनी है, तो जहां चेतन अवस्था में उसके जीवन के कार्य और प्रयत्न तो सहायक होते ही है, इसके अलावा स्वप्नों के माध्यम से भी वह अपनी समस्याओं का निराकरण कर सकता है, संसार में देखा जाय तो स्वप्नों ने व्यक्ति के जीवन में बहुत बड़े परिवर्तन किये है और वैज्ञानिक खोजों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, फ्रांस के दार्शनिक डी० मारगिस की आदत थी कि वे बराबर काम में जुटे रहते थे और काम करते करते ही जब गणित के किसी समीकरण या विज्ञान की किसी समस्या का समाधान नहीं मिलता तो वे वहीं काम करते करते सो जाते, और स्वप्न में उस समस्या का समाधान उन्हें मिल जाता :

वास्तव में ही स्वप्न अपने आप में एक अलग विज्ञान है, उसको उसी तरीके से समझना होगा, कभी कभी स्वप्न सीधे और स्पष्ट रूप से नहीं आते, अपितु वे गूढ रहस्य के रूप में निद्राकाल में आते है और उसे स्मरण रहते है, व्यक्ति को चाहिए कि वह उस स्वप्न का अर्थ समझे या स्वप्न विशेषज्ञ से सलाह ले और उनके अनुसार अपनी समस्याओं का समाधान प्राप्त करे।

जब सांप ने अपने आपको काट लिया

जर्मनी का फेडरिक कैंयूल अणुओं की संरचना सम्बन्धी खोज में व्यस्त था और वह अणुओं को एक

स्वप्नेश्वरी साधना

स्वप्न के माध्यम से भविष्य जानने की कई विधियां हैं, पर उनमें स्वप्नेश्वरी साधना सर्वाधिक प्रमुख और महत्वपूर्ण है, यह साधना सरल है तथा शीघ्र सिद्धि-दायक है, इस साधना को सम्पन्न करने पर जब भी साधक उस मन्त्र का जप कर के सोता है, तो रात में स्वप्नेश्वरी देवी स्वयं उपस्थित हो कर उसके प्रश्नों का उत्तर या हल देती है।

इसके लिए साधक "स्वप्नेश्वरी यंत्र" प्राप्त कर ले, जो पूर्ण रूप से मंत्र सिद्ध और चैतन्य हो, फिर किसी भी शुक्रवार को उस यंत्र के सामने बैठ कर निम्न मंत्र की २१ माला फेरे, इस प्रकार आठ दिन तक मंत्र जप करे, मंत्र जप के समय यंत्र के सामने तेल का दीपक जलता रहे, इसके अलावा अन्य किसी भी प्रकार के विधि विधान की जरूरत नहीं है, यह मंत्र जप हकीक माला से ही जपना चाहिए।

मन्त्र

ॐ ह्रीं स्वप्नेश्वरी आगत–अनागत दर्शय दर्शय फट्

• शुक्रवार से प्रारम्भ कर अगले शुक्रवार को यह साधना सम्पन्न हो जाती है, और "स्वप्नेश्वरी सिद्धि" प्राप्त हो जाती है, फिर जब भी किसी प्रकार के प्रश्न का उत्तर जानना हो, तो वह प्रश्न एक कागज पर लिख कर यंत्र के सामने रख दें, और वहीं पर एक माला मंत्र जाप करके सो जाय।

रात को अवश्य ही स्वप्नेश्वरी देवी उपस्थित हो कर उसके प्रश्न का उत्तर स्पष्ट रूप से बता देती है जो कि साधक को स्मरण रहता है।

इसके माध्यम से साधकों ने अद्वितीय सफलताएं और लोकप्रियता प्राप्त की है।

सीधी पट्टी पर प्रवहित करके अपनी समस्या का हल ढूंढ रहा था परन्तु दो महीने के अथक परिश्रम के बावजूद भी वह अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त नहीं कर पा रहा था।

एक दिन वह इसी प्रकार से अणुओं की रचना प्रक्रिया को सुलझाते सुलझाते प्रयोगशाला में ही सो गया उसने स्वप्न में देखा कि एक सांप गोल गोल घूम रहा है, और वह लम्बा सांप अंगूठी के आकार का होकर अपनी पूंछ को ही मुंह में दबा कर निगल गया और तत्क्षण वह सांप सोने की अंगूठी के रूप में बदल गया।

फैडरिक कैक्यूल की आंख तुरन्त खुल गई उसे अपनी समस्या का हल मिल गया उसने समझ लिया कि अणुओं को एक सीधी पट्टी पर प्रवहित कर मनोवांछित रिजल्ट प्राप्त नहीं किया जा सकता, इसकी अपेक्षा उसे अंगूठी के आकार का वर्तुल देते हुए अणुओं को प्रवहित किया जाय, और उसने ऐसा ही किया और उसकी इस खोज के परिणाम स्वरूप ही उसे नोबल प्राइज मिला।

पाठक उक्त वैज्ञानिक के कार्य और स्वप्न को ध्यान पूर्वक पढ़ें तब समझ में आयेगा कि स्वप्न के अर्थ को ज्यों का ज्यों स्वीकार न कर के उसे अपने तरीके से समझना होता है, तभी उसमें सफलता प्राप्त होती है।

जब सिर में भाला ठोंका

सिलाई की मशीन के अविष्कारक इलिहास होव अपनी सिलाई की मशीन बनाने में व्यस्त थे और दो साल के परिश्रम के बाद भी उन्हें सफलता नहीं मिल रही थी वे साइड से धागा डाल रहे थे पर इससे सिलाई नहीं हो रही थी।

एक दिन इलिहास होव दुखी होकर वहीं सो गये उसी रात उन्होंने सपने में देखा कि एक राक्षस आया है, और इलिहास होव को एक पेड़ से बांध दिया है, और फिर उस राक्षस ने अपने अनुचरों को आज्ञा दी कि इसके सिर के ठीक बीचो बीच भाला घोंपा जाय और अनुचर

जो सपनों से लखपति हुए

० इंगलैण्ड के रिचर्ड ब्रान को एक स्वप्न आया कि उसने एक बोर्ड देखा है, जिस पर रह रह कर कुछ संख्याएं चमक रही हैं, और तभी उसकी आंख खुल गई, उसने दूसरे दिन उन अङ्कों पर लॉटरी लगा दी, और आश्चर्य की बात यह कि उसे चालीस लाख पौण्ड एकबारगी ही लॉटरी से प्राप्त हो गये।

०० बम्बई के हीरानन्द जवेरी को एक दिन स्वप्न आया कि वह रेगिस्तान में यात्रा कर रहा है, और तभी उसने पानी से भरे हुए ऊंटों के काफिले देखे, पहले तीन ऊंट देखे फिर सात, नौ, दो, एक और आठ ऊंट देखे, और तभी उसकी आंख खुल गई, उसने इन्हीं अङ्कों की लॉटरी सुबह उठ कर खरीद ली और एक सप्ताह में ही सिक्किम की आठ लाख की लॉटरी उसे प्राप्त हो गयी।

००० अमेरिका के ओ. नील को एक दिन स्वप्न आया कि वह जंगल में जा रहा है, और एक स्थान पर बैठ कर खड्डा खोदता है और लगभग आठ फीट खोदने पर उसे सोने के सिक्के और मोहरे मिलती है, और तभी उसकी आंख खुल जाती है।

दूसरे दिन वह स्वप्न के अनुसार दिखे हुए रास्ते पर चल पड़ा और वास्तव में उसने देखा कि जो पेड़, जो स्थान, जो दृश्य उसने स्वप्न में देखा था; वैसा ही स्थान वहां है, उसने उसी स्थान पर आठ फीट खड्डा खोदा तो उसे लाखों रूपये की स्वर्ण मुद्राएं प्राप्त हो गयी।

शायद कुछ समय पहले लुटेरों ने अपनी स्वर्ण मुद्राएं वहां छुपा दी होगी पर स्वप्न के द्वारा ओ० नील को वह खजाना मिल गया, और वह एक ही रात में लखपति-करोड़पति बन गया।

ने ऐसा ही किया और तभी इलिहास होव की आंख खुल गई, भय के मारे उनका शरीर अभी तक कांप रहा था, और सारा शरीर पसीने पसीने हो गया था पर फिर भी उसे अपनी समस्या का समाधान मिल गया था उसे समझ में आ गया कि साइड में धागा डालने की अपेक्षा यदि कोई सुई के बीच में छेद किया जाय और धागा पिरोया जाय तो सफलता मिल सकती है।

उन्होंने प्रातःकाल उठकर ऐसा ही किया और उन्हें सफलता मिल गई, संसार को सिलाई मशीन सुलभ हो गयी।

अमेरिका के परामनोवैज्ञानिक मि० डब्ल्यू लोहवी नाड़ी संस्थान के संवेगों के अध्ययन में जुटे हुए थे और इस समस्या का समाधान उन्हें नहीं मिल रहा था।

एक रात उन्होंने सपने में देखा कि कोई उनके शरीर को भालों से छेद रहा है और लोहवी की आंख खुल गई, उन्हें अपनी समस्या का समाधान मिल गया, कि संवेगों का प्रवाह बराबर वर्तुल दवाव की वजह से ही संभव है और उन्होंने इसी पद्धति को अपना कर काम को आगे वढाया ओर उन्हें अपने क्षेत्र में पूर्ण सफलता मिल गई, आगे चलकर लोहवी को अपने इसी खोज से नोवल प्राइज तक मिला।

स्वप्नों के आदि प्रवर्तक
अर्द्ध नारीश्वर

वह साधिका

अमेरिका के इलिहास शहर में रहने वाली मि० डोरोथी को एक स्वप्न बार बार आता था, कि उसने भगवे कपड़े पहन रखे है और वह बराबर पहाड़ों पर चढ रही है, बर्फ के ऊपर आसानी से चल रही है, और पहाड़ के नीचे हजारों लोग बांहें फैलाये उसकी जय जयकार कर रहे है।

मि० डोरोथी को कुछ समझ में नहीं आ रहा था, उसने स्वप्न में देखा कि वह बहुत ऊंचे पहाड़ पर चल रही है, और उसके साथ एक अत्यन्त भव्य तेजस्वी सन्यासी भी भगवे कपड़े पहने हुए पथ प्रदर्शन करता हुआ चल रहा है और तभी उसकी आंख खुल गई।

पूर्ण भौतिकता और विलासिता की चकाचौंध में रहने वाली करोड़पति बाप की बेटी के लिए यह अजीब सा स्वप्न था, वह इसका अर्थ समझ नहीं पा रही थी, पर यह स्वप्न बार बार आता और एक दिन वह भारत का टिकट कटा कर दिल्ली आ ही गई।

उसने छः महीने तक भारत के महत्वपूर्ण तीर्थ

स्थलों की यात्रा की पर उसे उस सन्यासी के दर्शन नहीं हुए जिसे उसने स्वप्न में देखा था, वह उस अज्ञात अनाम अपरिचित सन्यासी की खोज में बराबर घूमती रही और एक दिन सन् १९८३ के अप्रेल में एक साधना शिविर में उसने किसी के कहने पर भाग लेने का निश्चय किया, और उसने देखा कि जो सन्यासी बार बार उसके स्वप्न में आ रहा था, वह तो सामने खड़ा है, वही चेहरा वही मुस्कराहट वही चलने का ढंग, उसे ऐसे लगा कि जैसे इस सन्यासी से तो वह कई कई वर्षों से परिचित है, और वह उसके चरणों में गिर पड़ी।

इसके बाद डोरोथी ने उस सन्यासी के साथ हिमालय के विभिन्न स्थानों की यात्राएं की उसे ऐसा लगा कि ये सभी स्थान और दृश्य वह पहले ही स्वप्न में देख चुकी है, सन्यासी के आगे आगे वह चलती और बताती रहती कि आगे चल कर बांई तरफ एक गुफा है, जिसे मैंने स्वप्न में देखा है और वास्तव में ही थोड़ी ही दूरी पर हूबहू वही गुफा उसे दिखाई दे जाती।

आज पाश्चात्य जगत की श्रेष्ठ साधिका और सेवा भावी है डोरोथी, जिसे दीन दुखियों की सेवा करने के बदले 'मेगवेल' पुरस्कार प्राप्त हो चुका है और सन् ८८ के नोबल प्राइज के लिए उसका नाम प्रस्तावित हो चुका था, यदि वह स्वप्न के अर्थ को न समझ कर भौतिकता में ही डूबी रहती तो केवल एक दो बच्चो की मां और विलासिनी बन कर ही रह जाती, उसका नाम गली मोहल्ले से आगे नहीं पहुँचता पर आज वह लाखों लोगों की जबान पर है।

इसी प्रकार भारत वर्ष के भी सैकड़ों उदाहरण और उनके पत्र मेरे सामने है, जब उन्हें स्वप्न में संकेत मिले हैं, कि वह पूर्व जन्म में उच्चकोटि की साधिका रही है, गृहस्थ जीवन उसके लिए व्यर्थ है, या विवाह करने के दो चार महीने में ही वह विधवा हो गई है परन्तु फिर भी उसके मां बाप उसके विवाह करने के लिए दवाब डाल रहे है।

बार बार उनकी इच्छा होती है कि वह सब कुछ छोड़ छाड़ कर स्वप्न में दिखने वाले गुरू या सन्यासी के चरणों में पहुँच जांय और पूरा जीवन उच्चकोटि की साधनाओं को सीखने समझने और प्रयोग करने में व्यतीत कर दे, पर उनमें डोरोथी जैसी हिम्मत नहीं है चेलैंज को उठाने की ताकत नहीं है, समाज से जूझने की शक्ति नहीं है, और इसी वजह से उनका जीवन एक घटिया सा गृहस्थ जीवन बन कर रह जाता है।

स्वप्न: जीवन की उपलब्धि

स्वप्न हमारे जीवन की उपलब्धि है, वैज्ञानिकों के अलावा कई लेखकों को स्वप्नों से प्रेरणा और अपने उपन्यासों के प्लाट मिले है स्काटलेण्ड के प्रसिद्ध लेखक एल० स्टीवेन्शन ने तो अपना प्रसिद्ध उपन्यास "डिवाइन" को स्वप्नों के आधार पर ही लिखा हैं, स्वप्न में वह जो जो पढता रहता, वही दूसरे दिन स्टीवेन्शन कागज पर उतार देता और उसका यह उपन्यास "बेस्ट सेलर" बना जिसे सात से भी ज्यादा पुरस्कार प्राप्त हुए।

कई उच्च कोटि के संगीतकारों को अपनी नई नई धुनें स्वप्न के माध्यम से प्राप्त हुई, विश्व विख्यात संगीतकार मोजार्ट ने जो अपनी 'बिथवन' धुन बनाई थी वह स्वप्न के द्वारा ही प्राप्त हुई थी, इटली के टारटिनों को स्वप्न के माध्यम से ही लाटरी का नम्बर प्राप्त हुआ था और कई करोड़ों डालर एक ही झटके में प्राप्त कर लिये है।

वास्तव में ही स्वप्न पूर्ण रूप से विज्ञान है, जिसको भली प्रकार से समझने की जरूरत है, इसके गूढ रहस्यों और उसमें निहित हलों को समझने की जरूरत है पश्चिम में तो स्वप्नों पर इतनी अधिक पुस्तकें लिखी जा चुकी है कि यदि उन्हें एकत्र किया जाय तो एक बहुत बड़ा पुस्तकालय भर सकता है, वहां पर सैकड़ों संस्थाएं है जहां स्वप्नों का विश्लेषण होता है, भारतवर्ष में भी स्वप्नों पर इक्की-दुक्की पुस्तकें देखने को मिल जातीं है।

जब हिटलर ने अदृश्य होने की शक्ति प्राप्त की

दूसरा विश्व युद्ध एक प्रकार से निर्णायक युद्ध था, एक तरफ धुरी राष्ट्र के देश थे, जो हर हालत में जीतना चाहते थे और दूसरी तरफ मित्र राष्ट्र थे जो बराबर हारते जा रहे थे, पिछड़ते जा रहे थे, और उनमें एक प्रकार का आंतक सा छा गया था, ऐसा लगने लगा था कि इंगलैण्ड और यूरोप के राष्ट्रों का अस्तित्व ही

समाप्त हो जायेगा।

इधर जर्मनी अत्यन्त तीव्रगति से आगे बढ रहा था, क्योंकि उसके पास अदम्य साहस और जीवन्त शक्ति से सम्पन्न राष्ट्रनायक हिटलर था जिसने घोषणा की थी कि, संसार में केवल जर्मनी के युवकों के शरीर में ही शुद्ध आर्यरक्त प्रवहित हो रहा है, और ये युवक पूरे विश्व पर शासन करने के लिए ही पैदा हुए हैं, हिटलर की इस घोषणा से पूरे जर्मनी में एक उबाल सा आ गया था, उसने युवकों के सीने में एक नयी चेतना एक नये भाव और पूरे संसार पर शासन करने की इच्छा जाग्रत कर दी थी।

हिटलर था भी एक अत्यन्त आकर्षक और सम्मोहक व्यक्तित्व का धनी, साधारण कुल में जन्म लेकर वह जिस तेजी से जर्मनी में आगे बढा था, वह वास्तव में ही आश्चर्यजनक था, एक धूमकेतु की तरह उदय हुआ था उसका, जब वह बोलता तो जर्मनी की जनता मन्त्र मुग्ध सी हो कर उसे सुनती रहती, जब वह घोषणा करता तो जर्मनी के युवक लड़ मरने के लिए तैयार हो जाते और जब वह ललकारता तो जर्मनी का प्रत्येक व्यक्ति अपने आप को बलिदान करने के लिए उतावला सा हो उठता, उसने जर्मनी में एक ऐसी आग लगा दी थी, कि उस समय जर्मनी पूरे यूरोप के लिए एक हौआ सा बन कर रह गया था।

और फिर यह बात सत्य भी थी कि जर्मनी के पास अत्यन्त उच्चकोटि का दिमाग था, उसके वैज्ञानिक बहुत ही आगे की सोचने वाले थे, वे नित्य नवीन तरीके से युद्ध की सामग्री और युद्ध से संबंधित अस्त्र शस्त्र तैयार करने में जुटे हुए थे, और देखा जाय तो उस समय विज्ञान के क्षेत्र में अमेरिका और रूस उससे हजारों मील पीछे थे।

जर्मनी के वैज्ञानिकों ने ही सबसे पहले बम वर्षक युद्ध विमान बनाये, जर्मनी ने ही सबसे पहले बिना पायलेट के चलने वाले बम वर्षक बना कर मित्र राष्ट्रों में

योगीराज चेत्तानन्द

योगीराज का नाम साधकों और सन्यासियों के लिये कोई अपरिचित नहीं है, उनके दो आश्रम है, एक तवा घाट पर और दूसरा लिपू लेखा दर्रे के पास। आकाश मार्ग से गतिशील होने के वे अन्यतम आचार्य है, और उनके कई शिष्य भी इस साधना में सिद्ध है।

जो यात्री कैलास मानसरोवर की यात्रा पर जाते है, वे अवश्य योगीराज के भी दर्शन करने उनके आश्रम पर जाते है, इन यात्रियों के लिये कैलास मानसरोवर से भी ज्यादा महत्व योगीराज चेत्तानन्दजी के दर्शन है।

लिपू लेखा दर्रा वर्तमान में वह स्थान है, जहां भारत और चीन की सीमा रेखा है यहां पर भारतीय अधिकारी कैलास मानसरोवर की यात्रा करने वाले व्यक्तियों को चीनी सैनिकों के हाथों में सौंप देते है, यहीं पर वीजा पासपोर्ट आदि की चेकिंग होती है, आश्चर्य की बात यह है, कि भारतीय सैनिक जितने ज्यादा योगीराज चेत्तानन्द के भक्त और अनुयायी है, चीनी सैनिक भी उनके प्रति उतनी ही ज्यादा श्रद्धा रखने वाले है, दोनों ही देशों के सैनिक योगीराज को सम्मान की दृष्टि से देखते है।

इनके आश्रम में हर समय पन्द्रह बीस शिष्य बने रहते है, और इतनी कठिन सर्दी होने के बावजूद भी योगीराज लगभग नंगे बदन रहते है, कमर पर केवल श्याम हिरण चर्म लपेटे रहते है और प्रत्येक यात्री को अपनी तरफ से गर्म दलिया और दूध खिलाते है, उनके लिए कम्बल और अन्य सामग्री भी मुफ्त में प्रदान करते रहते है।

भारतवर्ष में आकाशगमन प्रक्रिया, जल गमन प्रक्रिया के साथ साथ योगीराज और उनके शिष्यों को ऐसी साधनाएं भी सिद्ध है, जिनके द्वारा वे बर्फीले पहाड़ों पर तेजी के साथ दौड़ते रहते है, एक पहाड़ से दूसरे पहाड़ पर कुछ ही क्षणों में पहुंच जाते है और कठिन स्थितियों में भी अपने आपको ठीक ठाक बनाये रखते है, वास्तव में ही योगीराज चेत्तानन्दजी भगवान शिव के मूर्तिमंत स्वरूप है, कैलास मानसरोवर यात्रा में उनके द्वारा प्रदान की हुई कम्बल आज भी मेरे पास उपहार रूप में विद्यमान है।

तहलका सा मचा दिया और जर्मनी ने ही पनडुब्बियों का सर्वप्रथम आविष्कार कर सैकड़ों जहाज पानी में ही डुबो दिये, एक प्रकार से देखा जाय तो इससे इंगलैण्ड लड़खड़ा गया जब जर्मनी ने पर्ल हार्बर पर आक्रमण किया तो इंगलैण्ड ने घुटने टेक दिये, वह समझ गया कि जर्मनी से पार पाना कठिन है जर्मनी के पास ऐसे वैज्ञानिक थे जो संसार के श्रेष्ठतम वैज्ञानिक कहे जा सकते है, उन वैज्ञानिकों के पास ऐसा मस्तिष्क था जो नवीन से नवीन वैज्ञानिक विधियां निकाल कर यूरोप के अन्य राष्ट्रों को हतप्रभ बना दिया था, आगे चल कर जब जर्मनी हार गया और उसके दो टुकड़े हो गये तो वैज्ञानिकों को भी आधे आधे बांट दिया गया, कुछ वैज्ञानिक रूस की आधीनता में चले गये और कुछ अमेरिका के पास, आज अमेरिका और रूस विज्ञान की जिन बुलन्दियों पर है,

शून्य गमन प्रक्रिया

भारतवर्ष में 'शून्य गमन प्रक्रिया' रही है और पश्चिम के वैज्ञानिक भारत को इन साधनाओं और सिद्धियों को अपना कर ही सफलता प्राप्त कर रहे है शङ्कराचार्य ने स्वयं "शून्य गमन प्रक्रिया" के द्वारा ही अपने शिष्य मण्डन मिश्र को मृत्यु-मुख से बचाया था।

शङ्कराचार्य ने इस शून्य गमन प्रक्रिया को अपनी छोटी सी पुस्तक "शून्य" में पूर्णता के साथ समझाया है, उन्होंने इस साधना को मैसूर राज्य के मोकांबिका स्थान के आगे १८०० मीटर की ऊंचाई पर कोडाजाद्रि की गुफा में सम्पन्न की थी।

पूरे भारतवर्ष मे मोकांबिका (मूक-अंबिका) मन्दिर ही एक ऐसा मन्दिर हैं जहां मन्दिर की देवी प्रातःकाल "महा सरस्वती" दोपहर में 'महालक्ष्मी' और रात्रि के समय 'महाकाली' होती हैं यह मन्दिर मैसूर राज्य में आया हुआ हैं, इस देवी और इस मन्दिर से संबधित हजारों चमत्कार भारतवर्ष मे फैले हुए हैं।

शङ्कराचार्य ने मन्दिर के पुजारी को शून्य साधना मन्त्र वताने के लिए कहा, क्योंकि वह इस साधना से सिद्ध सम्पन्न पुजारी था, पर पुजारी ने शङ्कराचार्य को मना कर दिया, ऐसी स्थिति में शङ्कराचार्य ने कहा "तुम चाहे मुझे यह साधना मत बताओ देवी स्वयं मुझ इस मन्त्र को बता देगी" और उन्होंने पास में ही स्थित कोडाजाद्रि की गुफा में बैठ कर साधना प्रारम्भ की, यहीं पर इसी गुफा में देवी ने शङ्कराचार्य को शून्य गमन साधना मन्त्र वताया और उसे सिद्ध कर शङ्कराचार्य शून्य गमन प्रक्रिया के सिद्ध हस्त आचार्य बने।

आज भी यदि कोई व्यक्ति इस मन्दिर में जाता हैं तो उसे ऐसा लगता हैं कि वह जमीन से लगभग छः इंच ऊपर चल रहा हैं, दूसरी विशेषता इस मन्दिर की यह हैं कि इस मन्दिर में १०८ खंभे हैं और यदि हाथ से किसी भी खंभे पर प्रहार किया जाय तो सभी खम्भों से एक ही मन्त्र की ध्वनि निस्रत होती हैं, जो 'शून्य गमन प्रक्रिया साधना मन्त्र' हैं, यह मन्त्र साफ साफ सुना जाता है कहते है कि इसी मन्त्र को सिद्ध कर शङ्कराचार्य ने शून्य गमन प्रक्रिया सम्पन्न की थी और देवी ने पुजारी से रुष्ट हो कर यह व्यवस्था कर दी थी कि भविष्य में कोई भी दर्शक यदि यह मंत्र जानना चाहे तो पुजारी की गरज न करनी पड़े और प्रत्येक खंभे से इसी मंत्र की ध्वनि स्पष्ट रूप से उच्चरित होती रहे।

उसके पीछे जर्मनी के वे ही वैज्ञानिक है।

पर उन्हीं दिनों इंगलैण्ड के अत्यन्त चतुर जासूस ब्लादीमोर ने जर्मनी के एक अत्यन्त कुशल वैज्ञानिक ब्रेचर का अपहरण कर उसे इंग्लैण्ड पहुंचा दिया, उसने पनडुब्बियों के रहस्य और बमवर्षकों के ब्ल्यू प्रिन्ट इंगलैण्ड को बता दिये और साथ ही साथ जब अमेरिका इंगलैण्ड से जा मिला तो उन दोनों देशों ने अपने अपने सैकड़ों हजारों जासूसों को जर्मनी पहुँचा दिया, फेरीवाले के रूप में, शरणार्थियों के रूप में भिखारियों के रूप में संवाददाताओं के रूप में, ये चतुर जासूस एक एक मिनट की गतिविधि इंगलैण्ड को, और इन सूचनाओं के अनुसार कार्य करवह पुनः विजय की ओर अग्रसर हो रहा था।

२३ फरवरी १९४४, पहली बार इंगलैण्ड ने अपने जासूसों की सहायता से पानी में प्रहार करने वालों बमों की सहायता से जर्मनी की पनडुब्बियों का जाल तोड़ा, पहली बार इंगलैण्ड ने एक ही घण्टे में छः पनडुब्बियों को डुबो कर बता दिया कि वह विजय पथ पर अग्रसर है, इसके पीछे जर्मनी के वैज्ञानिक ब्रेचर का दिमाग था, वह अपने मन से जर्मनी की मदद करना चाहता था, परन्तु भारी दबाव और प्रताड़ना की वजह से उसे इन रहस्यों को खोलना पड़ा, और पहली बार इंगलैण्ड तथा मित्र राष्ट्रों की सेनाएं जर्मनी की ओर आगे बढी।

अमेरिका के युद्ध में भाग लेने से पासा पलट गया था, मित्र राष्ट्रों में एक नयी चेतना और उत्साह आ गया था, धीरे धीरे इंगलैण्ड के वायुयानों ने जबर-दस्त बमबारी करके जर्मनी की सीमाओं को कुतरना शुरू कर दिया था, उनमें इतना हौसला आ गया था कि विमानभेदी तोपों के रहते हुए भी मित्र राष्ट्रों के ये विमान जर्मनी की सीमा से पचास-पचास मील अन्दर तक घुस जाते थे, और भारी तहस नहस कर सकुशल वापिस लौट आते थे।

यद्यपि हिटलर का प्रचार मन्त्री गोयबल्स बराबर जर्मनी की विजय के समाचार पूरे विश्व में प्रसारित

आकाश गमन प्रक्रिया

आकाश गमन प्रक्रिया पूर्णतः विज्ञान सम्मत है, रूस १९६६ से ही इस विज्ञान की ओर प्रयत्नशील था और उसने यह अनुभव कर लिया था कि कुछ विशेष युक्तियों से मानव स शरीर आकाश में उड़ सकता है, और निश्चित स्थान पर वायु वेग से जा सकता है।

रूस के वैज्ञानिकों ने मानव शरीर का अध्ययन कर यह समझ लिया था कि मानव पंच तत्वों– भूमि, जल वायु, आकाश, अग्नि आदि तत्वों से निर्मित है परन्तु मानव शरीर में लगभग ९० प्रतिशत भूमि तत्व है, इसी वजह से वह ठोस और सुदृढ है, इसी वजह से वह जमीन पर चिपकता हुआ चलता है और गुरुत्वाकर्षण भी इसी वजह से है।

उन्होंने पक्षियों पर अध्ययन किया तो ज्ञात हुआ कि उनमें भूमि तत्व केवल पचास प्रतिशत ही है, इसी-लिए वे वायु में उड़ सकते है, और अपने गन्तव्य स्थल तक पहुंच सकते है।

रूस ने १९७१ में ही "स्पेस" नामक संस्था की स्थापना की जिसके अध्यक्ष ब्लादीमोर है इसके अन्तर्गत इस बात का अध्ययन किया गया कि किस प्रकार से मानव शरीर से भूमितत्व की न्यूनता की जाय, और उन्होंने सन् ७८ में इस क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त कर कुछ ऐसे युवकों को तैयार किया जो प्राणायाम और भस्त्रिका के माध्यम से शरीर स्थित भूमि तत्व का ज्वलन कर लेते है फलस्वरूप शरीर भूमितत्व न्यून होने की वजह से शून्य में ऊपर उठने लगता है और उसे मन चाही गति दी जा सकती है, उसी वर्ष रूस ने इसका सफल परीक्षण भी कर लिया।

रूस के तत्कालीन राष्ट्रपति ने इस प्रगति की अनंत सम्भावनाएं अनुभव कर बहुत बड़ा फण्ड इस संस्था को दिया जिससे कि इस पर तीव्रता के साथ परीक्षण और प्रयोग हो सके, ११ फरवरी ७९ को रूस ने एक युवक पैस्त्रानाद को इसी पद्धति से शून्य में उठाया और

वह ऊपर लगभग तीन किलोमीटर आकाश में जा कर सफलता के साथ उसी स्थान पर लौट आया जहां उसे बताया था, उसे इतनी ऊंचाई पर जाने पर भी किसी प्रकार की कोई असुविधा नहीं हुई।

इसके बाद तो रूस ने कई युवक इस प्रकार के तैयार कर लिये जो वायुमार्ग से किसी भी देश की धरती पर उतर सकते थे, और ठीक उसी स्थान पर वे उतरते थे, जहां उन्हें बताया जाता था, आश्चर्य की बात यह कि भूमितत्व की न्यूनता की वजह से वे न तो उपग्रहों के कैमरों में दिखाई देते और न राडार ही उन्हें पकड़ पाते अमेरिका के चैलेन्जर के बारे में पूरी पूरी सूचना इसी प्रकार के युवक ने अपने आंखों से देखकर रूस को दी थी।

जब अमेरिका को इसका पता चला तो तत्कालीन राष्ट्रपति ने "नासा" के अन्तर्गत ही इस विधा पर अलग से विभाग की स्थापना की और सन् १९८२ में तत्कालीन राष्ट्रपति रेगन के सामने ही वैज्ञानिकों ने इस प्रकार के परीक्षण कर सिद्ध कर दिया कि वे रूस से किसी भी तरह से पीछे नहीं है, ८ जून १९८३ को रूस के उपग्रह पर अमेरिका ने इ ी प्रकार के युवक के हाथों से प्रहार करवाया था ऐसा इसलिये जरूरी हो गया था कि वह उपग्रह अत्यन्त संवेदनशील था और उसमें इतने सूक्ष्म पारदर्शी कैमरे विद्यमान थे जो नासा की दीवारों को भेद कर अन्दर के कार्यकलापों के चित्र खींचने में समर्थ थे।

यदि किसी उपग्रह या अन्य विधि से रूस के उस उपग्रह को नष्ट करने का प्रयत्न किया जाता तो पुनः आक्रमण या युद्ध होने की प्रबल संभावना थी और फिलहाल अमेरिका ऐसा नहीं चाहता था पर रूस के उस उपग्रह को नष्ट करना जरूरी था, और अमेरिका ने इस प्रकार के युवक को शून्य पथ पर गतिशील कर उस उपग्रह को विशेष हथगोले से नष्ट करवा दिया क्योंकि उस युवक का चित्र या बिम्ब कैमरे में तो आ ही नहीं सकता था, और इस प्रकार अमेरिका ने अपनी एक बहुत बड़ी समस्या का समाधान कर लिया।

कर रहा था परन्तु उसकी चतुराई और चालाकी चल नहीं सकी, हिटलर ने यह समझ लिया कि अब जर्मनी का पतन निश्चित है, यद्यपि उसकी पीठ पर इटली का तानाशाह मुसोलिनी था, परन्तु जर्मनी और इटली दोनों मिल कर के भी इंगलैण्ड और मित्र राष्ट्रों का सामना नहीं कर पा रहे थे।

हिटलर ने अपने महल को छोड़ दिया था, क्योंकि उसके सीने में एक अज्ञात भय समा गया था, उसने यह समझ लिया था कि जर्मनी का पतन जल्दी ही होने वाला है और यदि वह पकड़ा गया, यदि वह मित्र राष्ट्रों की सेना के हाथ लग गया, तो उसे इतनी भीषण यातनाएं दी जायेगी कि जिसे वह झेल नहीं पायेगा, उसने यह भी अनुमान लगा लिया था कि जिस प्रकार से मित्र राष्ट्रों के बम वर्षक जर्मनी की सीमा के भीतर तक घुस कर प्रहार कर रहे है, उसके अनुसार ये बम वर्षक उसके महल को भी तहस नहस कर देगे और उन महलों की दीवारों के नीचे दब कर वह चकनाचूर हो जायेगा, और इसीलिए हिटलर महल छोड़ कर बंकर में जा छुपा था, जहां वह अपेक्षाकृत अपने आपको ज्यादा सुरक्षित अनुभव कर रहा था।

परन्तु वह भयभीत था उसे सबसे ज्यादा चिन्ता यह थी कि देर सवेर मित्र राष्ट्रों की सेनाएं जर्मनी में घुस कर उसकी जर्मनी को तहस नहस कर देगी और कुत्तों की तरह उसे ढूंढने लगेगी यदि वह उनके हाथ लग गया तो वे उसकी बोटी–बोटी उड़ा देगे, पर इससे पहले उसे जो यातनाएं जो यंत्रणा दी जायेगी उसे स्मरण करके ही हिटलर के रोंगटे खड़ें हो जाते।

और ऐसे ही संतप्त और संत्रस्त दिनों में उसने जर्मनी से पलायन करने की सोची, परन्तु वह उस योजना को अत्यन्त गुप्त रखना चाहता था, यहां तक कि उसने अपनी इस योजना की अपनी पत्नी, घनिष्ट मित्र या अपने अत्यन्त विश्वास पात्र को भी भनक नहीं लगने दी, उसने निश्चय कर लिया कि जर्मनी से बाहर जाने में ही उसकी खैर है, जर्मनी में रह कर तो वह समाप्त ही हो

जायेगा परन्तु जर्मनी के तो सारे रास्ते मित्र राष्ट्रों ने बन्द कर दिये थे, आकाश और समुद्र पर पूरी तरह से नाकाबन्दी हो गयी थी, जर्मनी की सीमाएं सील कर दी गयी थी और वह यह भी जानता था कि उसके चारों ओर पूरी जर्मनी में चप्पे-चप्पे पर इंगलैण्ड और अमेरिका के जासूस बिछे हुए है भनक मिलते ही वे उसको गोली से उड़ा देंगे या ब्रोचर की तरह उसका भी अपहरण कर देंगे, उसके पास मुश्किल से पन्द्रह बीस दिन बचे थे, इन दिनों में ही उसे कुछ निर्णय लेना था, जर्मनी से बाहर जाने की योजना बनानी थी परन्तु वह जर्मनी के बाहर जाये कैसे ? वेश बदल कर के भी बाहर जाना संभव नहीं था, सेना से घिरे हुए बंकर में ही वह सुरक्षित था, यदि बंकर से बाहर जाने की कोशिश की तो वह जरूर समाप्त हो जायेगा, जरूर कोई न कोई भेदिया उसे दबोच देगा, उसे तो अपने मित्रों, संबंधियों और सेना नायकों पर भी भरोसा नहीं रहा था, पर किसी न किसी प्रकार से जीवन को तो बचाना ही था, किसी न किसी प्रकार से जर्मनी के बाहर तो जाना ही था।

और तभी उसके अत्यन्त विश्वस्त और दाहिना हाथ समझे जाने वाले मित्र मिचकाक ने सलाह दी कि यदि किसी भारतीय योगी से सम्पर्क स्थापित किया जाय और उसे पकड़ कर यहां लाया जाय तो उसके द्वारा स शरीर अदृश्य हुआ जा सकता है, भारत में ऐसे कई उच्चकोटि के सन्यासी और योगी है जो आकाश मार्ग से स शरीर विचरण करने में समर्थ हैं, जो वायुवेग से एक स्थान से दूसरे स्थान तक जा सकते है और अपने साथ अन्य व्यक्ति को भी ले जा सकते हैं ।

योजना को आगे बढाते हुए मिचकाक ने कहा–वह दो बार भारत जा चुका है और हिमालय के चार छः योगियों से उसका सम्पर्क भी है, इन योगियों में एक योगी स्वामी चेत्तानन्द जी है जो इस विद्या के अन्यतम आचार्य है, वायुमार्ग से गतिशील होने, अदृश्य होने और आकाश पथ से अपने साथ अन्य व्यक्ति को भी ले जाने में समर्थ है, मिचकाक ने बताया कि मैंने स्वयं अपनी आंखों से इस योगी के कारनामे देखे है, मैंने स्वयं अपनी आंखों से उसे आकाश-मार्ग से गतिशील होते हुए देखा है, उसके लिए किसी भी देश की सीमाएं बाधक नहीं है वह इच्छा शक्ति के सहारे गतिशील होता है और वायु से भी तेज गति से एक स्थान के दूसरे स्थान तक जा सकता है, केवल वही व्यक्ति आपको जर्मनी से बाहर सुरक्षित स्थान पर ले जाने में समर्थ है।

हिटलर ने मिचकाक की बात ध्यानपूर्वक सुनी और उसे मिचकाक की बातों में सार लगा, उसे विश्वास हो गया कि केवल यही एक रास्ता बाकी बच गया है, जिसके द्वारा वह अपनी जीवन रक्षा कर सकता है, मित्र राष्ट्रों की सेनाओं के सामने पड़ने और अपने शरीर की बोटी बोटी होते हुए देखने की अपेक्षा अदृश्य हो जाना ही श्रेष्ठतम उपाय है, अभी उसके बंकर तक मित्र राष्ट्रों की सेनाएं आने में दस पन्द्रह दिन लग सकते है, यदि इसी बीच योगी चेत्तानन्द को किसी तरह बंकर तक लाया जाय, तो यह संभव हो सकता है।

और हिटलर ने मिचकाक को कहा कि तुम आज ही किसी तरीके से जर्मनी से निकल जाओ, तुम पर कोई सन्देह भी नहीं करेगा और न तुम्हें कोई पहिचान भी सकेगा, मैं दो घण्टों के भीतर-भीतर तुम्हारे लिए पनडुब्बी की व्यवस्था कर देता हूं तुम जल्दी से जल्दी भारत के समुद्र तट तक पहुँच सकोगे और वहां से तुम्हें जिस प्रकार से सुविधा हो, चेत्तानन्द के आश्रम तक जा कर उसे अपने साथ लेकर पनडुब्बी के द्वारा ही वापिस यहां पहुँचना है और यह काम तुम्हें चार पांच दिन के भीतर भीतर कर देना है।

मिचकाक एक व्यापारी का वेश धारण कर हिटलर की व्यक्तिगत पनडुब्बी से अगले चार घण्टों के भीतर भीतर

इच्छा शक्ति से चल रहे हैं प्रक्षेपास्त्र

मनुष्य में अनन्त सम्भावनाएं हैं, यह अलग बात है कि हम इन सम्भावनाओं को न पहिचान सकें, या न परख सकें, कहते हैं कि भगवान श्री रामचन्द्र जी को विभीषण ने जो पुष्पक विमान भेंट किया था, वह इच्छा शक्ति से चलता था, इच्छानुसार उस विमान को रोका जा सकता था, और उसका रूख मोड़ा जा सकता था, आधुनिक काल में भी रूस और अमेरिका ने ऐसे कई प्रयोग किये हैं जिसमें उन्हें पूर्ण सफलता मिली है ।

अमेरिका की गुप्तचर एजेन्सी सी० आई० ए० पिछले १८ वर्षों से इस पर कार्य कर रही है, इसका तात्पर्य यह है कि सी० आई० ए० ऐसा समझती है कि यदि इच्छाशक्ति से संवाद या सूचना भेजी जा सके तो यह अन्यतम कार्य होगा, इसमें न तो लिखित आदेश देने की जरूरत है और न बोल कर कुछ कहने की, इससे किसी प्रकार का लिखित प्रमाण भी नहीं रहेगा।

और उसने तत्कालीन राष्ट्रपति से विशेष अनुमति ले कर अत्यन्त गोपनीय प्रकोष्ठ की स्थापना की, जिसमें इच्छाशक्ति की वृद्धि और उसके द्वारा नियन्त्रण पर कार्य शुरू किया, पिछले दिनों उन्होंने इस कार्य की सफलता का प्रदर्शन राष्ट्रपति के सामने कर के दिखाया, सी० आई० ए० ने आठ युवक-युवतियों को तैयार किया जो इच्छाशक्ति से कुछ भी करने में समर्थ हैं, उनमें से एक युवती एम० अल्ट्रा ने अत्यन्त ऊंचाई पर उड़ते हुए वायुयान को रोक कर उसे नीचे उतरने के लिए बाध्य कर दिया, उसने अपनी इच्छाशक्ति का इतना तीव्र प्रहार किया कि वायुयान की गतिशीलता ठप्प हो गई और वह निरन्तर निचाई की ओर आता गया।

पर रूस तो इससे भी बाजी मार ले गया, वहां पर १९६३ से ही इस पर कार्य हो रहा है, रूस के प्रसिद्ध वैज्ञानिक मिखालो ने सोलह हजार पृष्ठों की एक रिपोर्ट प्रस्तुत की, और उसने बताया कि रूस ने इच्छा शक्ति के क्षेत्र में कितनी सफलता प्राप्त कर ली है, मिखाइलो ने अपने निर्देशन में तैयार युवती लेनाडिलजनोवा के द्वारा इच्छाशक्ति के अनुकूल प्रक्षेपास्त्र को संचालित कर उसका सही स्थान पर मारक प्रदर्शन कर यह स्पष्ट कर दिया कि अब अन्तरिक्ष में प्रक्षेपास्त्र इच्छाशक्ति के द्वारा ही संचालित किये जा सकेंगे ।

अमेरिका के अत्यन्त प्रसिद्ध जासूस जॉनक्रंडी ने रिटायर होने के बाद अपनी पुस्तक "द सर्च फॉर दी थॉट्स" में अमेरिका का प्रमाण सहित कच्चा चिट्ठा खोल कर बता दिया कि इस क्षेत्र में रूस अमेरिका से काफी आगे है, और अमेरिका की सी० आई० ए० जो विश्व की अद्वितीय सफलता का दावा कर रही है वह गलत है ।

इस पुस्तक के प्रकाशित होने पर सी० आई० ए० के तत्कालीन निर्देशक जॉनब्रेंग को त्यागपत्र देना पड़ा, और तत्कालीन राष्ट्रपति ने करोड़ों डॉलर का बजट इस मद में रख कर व्यक्तिगत हस्तक्षेप कर यह आदेश दिया कि हर हालत में इस क्षेत्र में रूस से आगे बढ़ना है।

वास्तव में ही अब अन्तरिक्ष युद्ध और अन्तरिक्ष रॉकेट या प्रक्षेपास्त्र-संचालन पूर्ण रूप से इच्छाशक्ति के द्वारा ही संचालित एवं अचूक होने लगे हैं।

जर्मनी से रवाना हो गया, वह विना विलम्ब किये जितना जल्दी हो सकता था भारतीय तट तक पहुँच जाना चाहता था, बम्बई के समुद्र तट से पन्द्रह मील दक्षिण पश्चिम की तरफ एक विद्युत चालित नाव इस पनडुब्बी की प्रतीक्षा कर रही थी, जर्मनी के जासूस को, जो भारत में काफी समय से सक्रिय था, बेतार के तार से सूचना

दी जा चुकी थी।

मिचकाक नाव में बैठा और बम्बई के एक सुनसान इलाके में समुद्र तट पर उतर गया वह उसी दिन बम्बई छोड़ देना चाहता था, क्योंकि उसके पास समय कम था और हिटलर के प्राण संकट में थे।

बम्बई से मिचकाक दिल्ली होता हुआ, मुरादाबाद पहुँचा और वहां से बस द्वारा रामपुर, खटिमा, टनकपुर, चम्पावत, पिथोरागढ एवं धारचूला होते हुए वह तवाघाट तक पहुंच गया, तवाघाट दिल्ली से ५९५ किलो मीटर पर समुद्रतल से १००९ मीटर की ऊंचाई पर काली नदी एवं धोला नदी के संगम पर बसा है, यहीं पर भारतीय योगी चेत्तानन्द जी का आश्रम था।

तवाघाट से ही कैलास मानसरोवर की यात्रा पैदल प्रारम्भ होती है और नौ कीलो मीटर का कठिन मार्ग चलने के बाद पांगु में रात्रि विश्राम होता है, यहां से ८ किलो मीटर दूर सिरखा में दूसरा पड़ाव होता है, यहीं पर नारायण स्वामी का "निखिलेश्वरानन्द आश्रम" है, जिसे यहां के लोग "छोटा कैलाश" कहते है, सिरखा के बाद १७ किलो मीटर जिप्ती, जिप्ती से ८ किलोमीटर मालपा, यहां से ८ किलोमीटर पर बुद्धि, यहां से १७ किलोमीटर पर गूंजी और आगे १० किलोमीटर पर काला पानी (३५७० मीटर ऊंचाई) में पड़ाव डाला जाता है, काला पानी काली नदी का उद्गम स्थल है यहां से ९ किलोमीटर पर श्यांगचिंग नामक छोटी घाटी का मैंदान है, जहां बहुत धीरे धीरे चलना पड़ता है क्योंकि ऊंचाई अधिक होने के कारण सांस लेने में परेशानी होती है, और इसके आगे ६ किलो मीटर चल कर लिपू लेखा दर्रा आता है, (यहां पर आजकल कैलास मानसरोवर के यात्रियों को चीन सरकार के अधिकारियों को सौंप दिया जाता है जो कैलास मान सरोवर की यात्रा कराने के बाद यात्रियों को पुनः लिपू लेखा पर भारतीय अधिकारियों के हवाले कर देते हैं,) लिपू लेखा से आठ किलोमीटर पर मानसरोवर है, उन दिनों भारतीय योगी चेत्तानन्द जी मानसरोवर पर साधना कर रहे थे, मिचकाक को तवा घाट पर ही पता चल चुका था।

बड़ी कठिनाई से मिचकाक योगी चेत्तानन्द जी के पास पहुँचा, इससे पूर्व मिचकाक योगी चेत्तानन्द जी से दो बार मिल चुका था, योगी चेत्तानन्द जी अत्यन्त ही उच्चकोटि के योगी हैं, और वर्तमान में भी उनका आश्रम लिपू लेखा दर्रे पर है, वहां वे अपने शिष्यों को आकाश गमन प्रक्रिया और जल गमन प्रक्रिया, साधना के अलावा अन्य उच्च कोटि की साधनाएं सम्पन्न कराते हैं।

जब मिचकाक योगीराज से मिला, तब सुबह के दस बजे हुए थे, हलकी हलकी धूप निकल आई थी, यद्यपि यहां पर सूर्य के दर्शन कम ही होते हैं, चारों तरफ रह रह कर बर्फ गिरती रहती है पर उस दिन मौसम सुहावना था, मिचकाक ने प्रणाम कर उन्हें बताया कि वे योगीराज को अपने साथ जर्मनी ले जाना चाहते हैं, मिचकाक ने समझाया कि हिटलर इंगलैण्ड से लड़ रहा है जिससे कि इंगलैण्ड चारों तरफ से फंस कर भारत को स्वतंत्र कर दे, एक प्रकार से हिटलर भारत को आजाद कराने के लिए ही यह लड़ाई लड़ रहा है, वर्तमान में हिटलर को जर्मनी से निकालना अत्यन्त जरूरी है और यह काम केवल आप ही कर सकते हैं।

योगीराज पांच मिनट तक मिचकाक को देखते रहे, बोले– "मैं योगबल से यह सब कुछ जान चुका हूँ, पर तुम्हारे इस कथन में कोई सार नहीं है, भारत तो अभी दो वर्ष बाद १५ अगस्त १९४७ के दिन आजाद होगा, अभी उसकी स्वतंत्रता में दो वर्ष बाकी हैं।

– " पर तुम मेरे पास इससे पहले भी दो बार आ चुके हो, और तुमने काफी कठिनाइयां भोग कर यहां तक आने की कोशिश की है, मैं तुम्हारे साथ अवश्य चलूंगा। पर होनी को कुछ और ही मंजूर है"–और यह कहते कहते योगीराज रहस्यमय रूप से मुस्करा दिये।

योगीराज ने अपने शिष्यों को आवश्यक निर्देश दिये और बताया कि मैं तीन चार दिन में ही वापिस लौट

आऊंगा, उन्होंने मिचकाक को भी बता दिया कि मैं तुम्हारे साथ इसी क्षण चलूंगा अवश्य; पर जो कुछ, और जिस प्रकार से तुम चाहते हो, वैसा होना संभव दिखाई नहीं देता, मैं भविष्य के भाल पर लिखी हुई पंक्तियां यहीं पर बैठे बैठे पढ़ रहा हूं।

मिचकाक यह समझ गया कि योगीराज की वाणी असत्य नहीं होगी, हिटलर का अन्तिम समय आ गया है, और उसे अब कोई नहीं मिटा सकता, परन्तु फिर भी उसके हृदय में मित्र प्रेम उमड़ रहा था, हिटलर ने उसे जो कार्य सौंपा था, उसे पूरा करना उसका उद्देश्य था, कम से कम उसके मन में यह बात तो नहीं रहेगी, कि उसने अपने मित्र के लिए कुछ नहीं किया।

तभी योगी राज चेतानन्द जी भगवे वस्त्र धारण कर पैरों में खड़ाऊ पहन कर व्याघ्र चर्म के आसन पर बैठ गये और अपने पास ही मिचकाक को भी बिठा दिया अपने शिष्य को आवश्यक निर्देश दे कर उन्होंने अपने सिर पर तथा मिचकाक के सिर पर एक बड़ी भेड़ के रेसों से बनी हुई ऊनी कम्बल डाल दी जिससे कि बाहर कुछ भी दिखाई न दे सके।

और तभी मिचकाक ने अनुभव किया कि वह आकाश मार्ग में उपर उठ रहा है और कुछ ही क्षणों में वह अत्यन्त ऊंचाई पर पहुँच गया, ऊपर विशेष प्रकार का कम्बल ओढ़े होने की वजह से न तो हवा के थपेड़े लग रहे थे और न सर्दी या गर्मी का अहसास ही हो रहा था उसने अन्दर ही अन्दर मुंह घुमा कर योगीराज की ओर देखा, वे अत्यन्त शान्तचित्त से पालथी मारे मग्न थे और उनके होठ धीरे धीरे रह रह कर बुदबुदा रहे थे।

लगभग दो या तीन घण्टे बीते होंगे, मिचकाक ने अनुभव किया कि आकाश मार्ग से गतिशील उनका आसन धीरे धीरे नीचे उतर रहा है, और लगभग दस बारह मिनटों के बाद ही उसे कठोर भूमि का स्पर्श अनुभव हुआ, योगी चेत्तानन्द ने सिर के उपर ओढ़ा हुआ कम्बल हटाया तो मिचकाक ने देखा कि वह और योगीराज हिटलर के बंकर के पास ही खड़े है।

पर तब तक बहुत देर हो चुकी थी, मित्र राष्ट्रों की सेनाएं जर्मनी के अन्दर तक घुस आई थी और पन्द्रह मिनट पहले ही बंकर से हिटलर का अपहरण कर लिया गया था इस दौरान छोटी सी लड़ाई में करीब बीस विश्वस्त साथी और हिटलर के मन्त्री मारे जा चुके थे, गोयबल्स पहले ही भाग चुका था और लगभग ८० सैनिकों को समाप्त करके हिटलर का अपहरण कर लिया गया था, यह सुनकर मिचकाक धम्म से जमीन पर बैठ गया हिटलर की ऐसी दुखदायक मृत्यु और अपहरण को लेकर उसकी आंखों में आंसू छलछला आये।

योगीराज ने मिचकाक के सिर पर हाथ रखा और कहा "तुम्हें समय बरबाद नहीं करना है, शत्रु तुम्हारी खोज कर रहे है, और यदि तुम्हारा पता चल गया तो वे तुम्हारी बोटी बोटी उड़ा देंगे मैंने तो हिटलर की भाग्य लिपि को यहीं पर पढ़ लिया था, और तुम्हें बता दिया था पर तुम्हारे प्रेम की वजह से मैं तुम्हें मना नहीं कर सका था।

मिचकाक उठा, उसने एक शून्य सी नजर हिटलर के बंकर पर डाली, बंकर के बाहर मरे हुए सैकड़ों सैनिकों के शवों को देखकर वह विचलित हो उठा तभी वहां से पांच सौ मीटर की दूरी पर जोरों से बम का गोला फटा और मिचकाक का अन्दर तक कांप उठा, उसने झुक कर स्वामी जी के चरण छुए और तेजी से एक तरफ सरक गया।

स्वामी जी जिस वायुमार्ग से गये थे उसी रास्ते से वापिस अपने आश्रम पर लौट आये, आज वर्तमान में भी योगीराज चेत्तानन्द जी इतिहास का अत्यन्त महत्वपूर्ण अध्याय अपने हृदय में समेटे हुए अपने लिपू लेखा आश्रम पर विद्यमान है और साधना रत है।

रूपसी सुन्दरियों को पागल सा बना देता था, वह

रूस के अंतिम जार का शासन अपने आप में दबंग और तानाशाही का राज्य था, तत्कालीन जार निकोलस द्वितीय का इकलौता बेटा एलेक्सिस बीमार था उसकी बीमारी भी ऐसी थी कि उस समय डॉक्टरों के पास इसका कोई इलाज नहीं था; एलेक्सिस 'हिमोफीविया' के रोग से ग्रस्त था इसमें खून के थक्के नहीं जमते, फलस्वरूप यदि कहीं पर शरीर में थोड़ी सी भी खरोंच लग जाती है, तो वहां से खून निकलना शुरू हो

जाता है और वह बन्द होता ही नहीं, कुछ ही घण्टों बाद अधिक रक्तस्राव से व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है, ।

जार निकोलस द्वितीय के पुत्र को भी अधिक "रक्त-स्राव" की ही बीमारी थी और यह निश्चित था कि राज वंश का यह दीपक बुझ जायेगा, इससे जार और उसकी पत्नी अत्यन्त चिन्तित थी ।

उन दिनों रासपुतिन की अतीन्द्रिय शक्तियों और उससे सम्बन्धित चमत्कारों के किस्से पूरे रूस में चर्चित थे, यह चर्चा जार और उसकी पत्नी ने भी सुनी, जार की पत्नी जर्मनी की एक राजकुमारी थी, जो कि अत्यन्त सुन्दरी और आकर्षक युवती थी, उन दिनों जार ने अन्तिम प्रयास करने के लिए अपना सर्व श्रेष्ठ घोड़ा रासपुतिन को बुलाने के लिए भेजा ।

दूसरे दिन शाम तक रासपुतिन जार के महल तक पहुँच गया, रासपुतिन अत्यन्त ही सुन्दर, आकर्षक और अद्वितीय व्यक्तित्व का धनी था, उसका कद लम्बा, और आकर्षक था, तेजस्वी चेहरा और पीछे शेर के अयालों की तरह बिखरे हुए आकर्षक घुंघराले बाल थे, उसकी आंखों में एक अजीब सी चमक थी और सारा शरीर सांचे में ढला हुआ था, चौड़े और मज़बूत स्कंन्धों पर हलका सा कपड़ा लपेटे हुए जब रासपुतिन महल में आया तो राजकुमार अन्तिम सांसे गिन रहा था और तत्कालीन जार और उसकी पत्नी अलक्जेन्द्री उदास और खिन्न थी ।

रासपुतिन पलंग के पास आकर घुटनों के बल बैठ गया, और उसने अपनी नजरें राजकुमार के चेहरे पर गड़ा कर मन ही मन होठों से कुछ बुदबुदाना शुरू किया लगभग आधे घण्टे तक रासपुतिन ऐसा ही करता रहा और फिर उठ खड़ा हुआ, उसने तत्कालीन जार को कहा 'तुम्हारा बेटा एलक्सिस बच जायेगा इसकी बीमारी को मैंने खींच लिया है, और एक भरपूर निगाह उसने अलक्जेन्द्री पर डाली ।

सम्मोहन विज्ञान

पश्चिम में सम्मोहन विज्ञान पर सैकड़ों पुस्तकें लिखी जा चुकी है और इसके अचूक प्रभावों को देखकर कई विश्व विद्यालयों में इसे अनिवार्य विषय बना दिया गया है, वहां पर "मेडिकल कोर्स" में तो यह अनिवार्य विषय है जिसमें पारंगतता जरूरी है ।

अब पश्चिम में इसके माध्यम से कई कार्य होने लगे है, अस्पतालों में बिना बेहोशी की दवा दिये रोगी को सम्मोहित कर उसका आपरेशन कर लिया जाता है गर्भवती महिला को सम्मोहित कर सुखदायक प्रसव सम्पन्न कराया जाता है, सम्मोहन की भावना दे कर सिगरेट, चरस आदि नशे की लत को दूर किया जाता है, इसके द्वारा मस्तिष्क की कई विकृतियों को समाप्त करने में सफलता पाई गई है अत्यन्त तनाव पूर्ण जीवन में अनुकूलता प्रदान की गयी है, इसके माध्यम से प्रेमी या प्रेमिका को सम्मोहित कर परस्पर मिलन प्रदान करने में सफलता पाई है, हजारों मील दूर बैठे रोगी को भी इसके माध्यम से सम्मोहित कर दिया जाता है, अधिकारी को जीवन भर अपने अनुकूल बनाये रखा जा सकता है किसी भी पुरुष या स्त्री से गुप्त भेद इसके माध्यम से प्राप्त किये जा सकते है, अपराधी को सम्मोहित कर उसके अपराध को वास्तविकता जानी जा सकती है, और इसके अलावा सैकड़ों ऐसी गुत्थियां है जिसको हल करने में सम्मोहन विज्ञान ने जबरदस्त सहयोग दिया है ।

आज पश्चिम का प्रत्येक देश अपना बहुत बड़ा फन्ड इस प्रकार के कार्य के लिए लगा रहा है, जिससे कि मानव जीवन को सभी दृष्टियों से निरापद सुखदायक एवं अनुकूल बनाया जा सके ।

बाद में अलक्जेन्द्री ने रात को अपनी अन्तरंग सहेली को इस बात की चर्चा करते हुए कहा कि जब रासपुतिन

शक्ति–चक्र

जिस पर त्राटक करने से आंखों में सम्मोहन पैदा होता है

ने मेरी ओर ताका तो मुझे ऐसा लगा कि जैसे वह मुझे खींच रहा है उसकी आंखों में गजब का आकर्षण और सम्मोहन है, बूढे जार पास में खड़े थे, नहीं तो मैं खिंच कर उसके सुदृढ स्कन्धों और विशाल वक्षस्थल में जा छिपती-और कहते कहते अलक्जेन्द्री की आँखों में रासपुतिन तैर गया।

राजकुमार उसी समय से ठीक होना शुरू हो गया और दिनो दिन उसके स्वास्थ्य में सुधार के चिन्ह दिखाई देने लगे, रासपुतिन वापिस जाना चाहता था परन्तु जार और उसकी सौन्दर्यवती पत्नी ने रासपुतिन को अनुनय विनय करके रोक दिया, कहा–जब तक राजकुमार पूरी तरह से स्वस्थ नहीं हो जाता, तब तक आप महल में ही रहें।

और यहीं से रासपुतिन और अलक्जेन्द्री की प्रणय लीला शुरू होती है रात को जब जार निकोलस गहरे नशे में डूबा होता, तब उसकी पत्नी अलक्जेन्द्री रासपुतिन के कमरे में उसकी बांहों में समाई हुई होती, और बाद में तो वह रासपुतिन पर इतनी अधिक मर मिटी कि उसके कहने पर वह जार का सिर भी काटने के लिए तैयार हो गई, आगे के ग्यारह साल एक प्रकार से रूस पर रासपुतिन का ही राज्य था, जार तो केवल नाम मात्र का राजा रह गया था।

रासपुतिन का यह पहला अवसर नहीं था, कि जब कोई सुन्दरी उस पर मर मिटी हो, इससे पहले भी सैकड़ों सुन्दरियां उसके पीछे पागल रही थी, और उसके मन के सहारे उसकी याद में पूरे जीवन को काट देने के लिए तैयार थी, इसका कारण रासपुतिन का कोई पद या धन नहीं था और न इसका कारण उसका सुन्दर और आकर्षक शरीर था, **इसकी अपेक्षा इसका कारण था उसकी आंखों में एक विशेष प्रकार की सम्मोहन-शक्ति, जिसके पाश में बंध कर कोई भी सुन्दरी छूट नहीं सकती थी, एक बार उसने जिस पर नजर डाल दी वह दीवानी हो जाती थी**, उस समय तो आलम यह था कि उच्च कुलीन घराने के लोग अपनी जवान लड़कियों को घर के बाहर तक जाने नहीं देते थे, उन्हें डर था कि यदि कभी रास्ते पर रासपुतिन की सवारी निकली, और यदि रासपुतिन ने नजर डाल दी तो फिर लड़की पर कोई नियंत्रण नहीं रहेंगा, रासपुतिन था भी ऐसे ही सम्मोहक व्यक्तित्व का धनी, जहां सौन्दर्य से युक्त जवान युवतियों का वह प्रणय केन्द्र था, उसकी फोटो को लेकर वे घण्टों बतियाती रहती वहां उच्च कोटि के सेनानायक सचिव और धनी व्यक्ति अपने घर में रासपुतिन के फोटो का टुकड़ा तक नहीं रहने देते, कुछ ऐसा ही आलम था, उन दिनों रूस में रासपुतिन का।

रासपुतिन का जन्म १८६१ में तावोलस्क प्रान्त के एक गांव में किसान के घर में हुआ था, जब वह १४ वर्ष का था तभी वह रूस से भाग कर भारत जा पहुंचा था और लगभग आठ वर्ष तक वह हिमालय की कन्दराओं में भटकता रहा, घर वालों ने यह समझ लिया था कि ग्रेगोरी (रासपुतिन का बचपन का यही नाम था) की मृत्यु हो गयी है या जंगल में किसी जानवर ने उसे मार कर खा लिया है।

पर ग्रेगोरी दैववसात उन दिनों हिमालय में भटक रहा था, उसका भारतवर्ष से कोई परिचय नहीं था

उसकी कोई इच्छा भी नहीं थी कि वह हिमालय में भटके, यह संयोग ही था, कि वह अपने मां-बाप के अत्याचारों से भागा और नदी नाले पर्वत पार करता हुआ, हिमालय जा पहुंचा ।

रासपुतिन ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "ए स्टोरी माईसेल्फ" में अपनी हिमालय यात्रा का विस्तार से विवरण और वर्णन दिया है, यहीं पर उसकी भेंट एक सन्यासी अनुस्वरानन्द जी से हुई जो कि सम्मोहन के श्रेष्ठतम आचार्य थे, ग्रेगोरी लगभग ६ वर्षों तक उनके साथ रहा, और अनुस्वरानन्द ने सम्मोहन साधना उसे सम्पन्न करा दी, एक ऐसी साधना जो अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण और दिव्य है, एक ऐसी साधना जिसे सम्पन्न करने से व्यक्ति के स्वयं का व्यक्तित्व अत्यन्त आकर्षक और सम्मोहक बन जाता है, साधनाकाल में ही उसके शरीर के अङ्ग प्रत्यङ्ग कुछ इस प्रकार से आकार ले लेते हैं, कि पूरा शरीर अत्यन्त सम्मोहक, आकर्षक और चुम्बकीय हो जाता है, साधना सम्पन्न करते करते उसकी आंखों में एक अत्यन्त तीव्र चुम्बकीय शक्ति प्राप्त हो जाती है, और वह जिस पुरुष या स्त्री पर नजर डालता है, वह बंधी हुई हिरणी की तरह उसके पास खींची चली आती है ।

रासपुतिन ने अपनी इस पुस्तक में लिखा है, कि मैं न तो इस साधना को सीखना चाहता था और न इसके बारे में उत्सुक ही था, परन्तु अनुस्वरानन्द को शायद इसी साधना में महारत हासिल थी, और मेरी सेवा से प्रसन्न हो कर उन्होंने यह साधना पूर्णता के साथ सिखा दी ।

पर रासपुतिन का वहां भी ज्यादा समय मन नहीं लगा और एक दिन वह वहां से भाग छूटा, उसने कुछ समय तिब्बत में बिताया और फिर वह रूस अपने घर आ गया ।

रूस के तत्कालीन जार निकोलस द्वितीय ने अपनी डायरी में लिखा है, 'कि ६ जुलाई १९०७ को रासपुतिन

सम्मोहन साधना

रासपुतिन ने हिमालय के योगीराज श्री अनुस्वरानन्द जी से जो साधना सीखी थी, वह सम्मोहन साधना थी; जिसके द्वारा मानव का गुप्त तीसरा नेत्र खुल जाता है, और इसके द्वारा वह जिसको भी भरपूर निगाह से देख लेता है, वह वश में हो जाता है, इस साधना को पुरुष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर सकता है ।

इस प्रकार की साधना को भगवान श्री कृष्ण ने सांदीपन के गुरुकुल में सीखी थी, कहते हैं कि भगवान बुद्ध को यह साधना एक भारतीय योगी ने सिखाई थी, जिसकी वजह से बुद्ध हिंसक पशु, शेर आदि को भी देख लेते थे तो वह पालतू पशु की तरह पास में आ कर खड़ा हो जाता था, इस साधना की अनन्त सम्भावनाएं हैं ।

पश्चिम के कई वैज्ञानिकों ने इसको "थर्ड आई मेडीटेशन" कहा है, और उनकी यह साधना पद्धति पूरी तरह से भारतीय पद्धति है, इसमें उन्होंने कई प्रकार के विचित्र चमत्कार कर के दिखाये हैं, और आज पूरा पश्चिम इस सम्मोहन शक्ति को विज्ञान की उच्चतम उपलब्धि मान रहा है ।

भारत में इस साधना के प्रवर्तक महर्षि जमदग्नि थे, उनके अनुसार किसी योग्य गुरु से 'सम्मोहन यन्त्र' प्राप्त कर उसके मध्य में स्थित विन्दु पर त्राटक करने से यह साधना सम्पन्न हो जाती है, इस प्रकार का त्राटक करते हुए सवा लाख मन्त्र जप सम्पन्न होना चाहिए, जिससे वह फोटो पर भी सम्मोहन प्रभाव दे सके, योग्य गुरु से ही इस प्रकार का "जमदग्नि सम्मोहन मन्त्र" और "जमदग्नि प्रणीत सिद्ध सम्मोहन यन्त्र" प्राप्त करें, इस पर साधना सम्पन्न करें, एक बार साधना सम्पन्न होने पर पूरे जीवन भर के लिए उसकी आंखों में यह प्रभाव बना रहता है, रासपुतिन को भी स्वामी अनुस्वरानन्द जी ने यही साधना सिखाई थी ।

भारत में भी इस विषय पर श्रीमाली जी की पुस्तक "हिप्नोटिज्म" प्रकाशित हुई है, जिसका हिन्दी और अंग्रेजी अनुवाद दोनों ही दिल्ली से प्रकाशित है, और ज़िसमें इस विज्ञान का पूर्णता के साथ समावेश है ।

सम्मोहन शक्ति

पिछले कई हजार वर्षों से लोग यह मानते है, कि सम्मोहन विज्ञान अपने आप में पूर्ण विज्ञान है और उसके द्वारा किसी को भी सम्मोहित किया जा सकता है।

पुरुष या स्त्री किसी को भी देखते ही सबसे पहले हमारी नजर उसके चेहरे पर और आंखों पर पड़ती है, आंखों में प्रभु ने अनन्त संभावनाएं दी है और अद्‌भुत आश्चर्यजनक शक्तियां आंखों में निहित है, आवश्यकता है इन आश्चर्यजनक शक्तियों को उजागर करने की।

रूस ने इस पर कई परीक्षण और प्रयोग किये है. रूस के प्रसिद्ध वैज्ञानिक लिनायलोव ने अपनी तीन हजार पृष्ठों की रिपोर्ट के० जी० बी० (जो रूस की सर्वोच्च गुप्तचर संस्था है) को १९७१ में दी थी, उसमें बताया गया था कि आंखों की सम्मोहक शक्ति के माध्यम से किसी को भी अपने नियन्त्रण में लिया जा सकता है, यहां तक कि पशु पक्षियों को भी देखकर कुछ ही सैकण्डों में उसको सम्मोहित किया जा सकता है।

के० जी० बी० ने इसके लिए अलग से यूनिट बनाकर कार्य शुरू किया और मई ८८ में, के० जी० बी० के चीफ आन्द्रेग्रवई ने राष्ट्रपति को जो रिपोर्ट दी इसमें उन्होंने बताया है कि किसी के भी फोटो को देखकर उसे सम्मोहित किया जा सकता है और उसे अपने विचारों के अनुकूल बनाया जा सकता है, आन्द्रेग्रवई ने अमेरिका के श्रेष्ठतम गुप्तचर पीवल को प्रस्तुत कर बताया कि केवल पीवल के फोटो पर सम्मोहन भावना देकर उसे अमेरिका से मास्को आने के लिए बाध्य किया गया और वह प्रस्तुत हैं, उस समय मि० पीवल पास में ही खड़े थे जो कि अमेरिका के अणु विज्ञान संस्थान में काफी वर्ष तक कार्य कर चुके थे।

यह सम्मोहन शक्ति के प्रभाव का समाचार लीक हो कर इंगलैण्ड के एक अखबार में छप गया और पूरे अमेरिका में हड़कम्प सा मच गया, पर इससे यह तो स्पष्ट हो ही गया कि सम्मोहन विज्ञान के द्वारा किसी भी पुरुष या स्त्री को पूरी तरह से अपने नियन्त्रण में लिया जा सकता है और केवल उसके फोटो के द्वारा ही उसे सम्मोहन भावना दे कर उसे अपने अनुकूल बनाया जा सकता है।

मेरे बेटे की बीमारी ठीक करने के लिए महल में आया और देखते ही ऐसा लगा कि जैसे कोई देवता राजमहल में आ गया हो।'

जैसा कि मैं बता चुका हूं कि आगे के ११ वर्ष रूस पर एक प्रकार से रासपुतिन का ही साम्राज्य रहा, उस समय कई पेचीदी समस्याएं सामने आई पर रासपुतिन ने अपने व्यक्तित्व के बल पर उन समस्याओं को सुलझा दिया, जब रूस के सेनाध्यक्ष जिक्सन ने षड़यन्त्र कर रूस के जार को हटाना चाहा, तो रासपुतिन एक दिन दोपहर को सेनाध्यक्ष के महल में जा पहुंचा और उसकी पत्नी से मिल कर वे सारे रहस्य उसके मुंह से उगलवा दिये जो जिक्सन उस दिन करना चाहता था, यही नहीं अपितु जब तक रासपुतिन वापिस अपने महल में पहुंचा तब तक तो जिक्सन की अद्वितीय सौन्दर्यवती पत्नी ऐखलिस भी रासपुतिन के महल में पहुंच गयी थी, और इस प्रकार से जिक्सन की योजना का समय से पहले ही भंडाफोड़ हो गया।

१९१० रूस के लिए अत्यन्त चिन्ताजनक था, जर्मनी रूस पर आक्रमण करने की पूरी तैयारी कर बैठा था, और उस समय जार का शासन क्षत-विक्षत हो चला था, राजकोष में धन नहीं था, और सैनिकों पर जार का नियन्त्रण नहीं रहा था, ऐसी स्थिति में रासपुतिन स्वयं वेश बदल कर बिना किसी हिचकिचाहट के और डर के जर्मनी पहुँच गया और तत्कालीन जर्मनी के शासक की अठारह वर्षीय पुत्री ब्रेचनेरा से जा मिला।

यह अभी तक रहस्य ही है, कि रासपुतिन जर्मनी के राजमहल के अन्दर तक कैसे पहुँच गया और राजकुमारी से मिलने में कैसे सफल हो गया, पर यह इतिहास सम्मत है कि मिलने के तीन दिन बाद जर्मनी की राजकुमारी ने रासपुतिन से शादी कर ली थी और उसके साथ ही वह रूस चली आई थी, इससे जर्मनी ने रूस पर आक्रमण करने का विचार ही छोड़ दिया।

१९१४ में एक बार फिर रासपुतिन ने रूस को बचा लिया था, यह वह वर्ष था जब प्रथम विश्व युद्ध प्रारम्भ हो रहा था, पर किसी बात से मन मुटाव होने पर रासपुतिन ने राजमहल छोड़ दिया, पर उसने जाते जाते जार के सामने भविष्यवाणी कर दी थी कि आप दवाव में आकर ३१ जुलाई १९१४ को युद्ध के आदेश पर हस्ताक्षर करेंगे और इस युद्ध में रूस को बहुत अधिक हानि और क्षति उठानी पड़ेगी।

और वास्तव में ऐसा ही हुआ, ३१ जुलाई को जार बीमार हो कर अस्पताल में पड़ा था, वह बार बार रासपुतिन को बुलाने संदेश भेज रहा था पर रासपुतिन का कहीं पता नहीं चल रहा था, और अन्ततः जार को मन मार कर युद्ध के लिए हस्ताक्षर करने पड़े, और इतिहास साक्षी है कि इस प्रथम विश्व युद्ध में रूस को सर्वाधिक हानि उठानी पडी, रासपुतिन ने जो भविष्यवाणी की थी वह अक्षरशः सही निकली।

चमत्कारिक शक्तियों और सम्मोहन के धनी रासपुतिन के बारे में इसके बाद किसी प्रकार का कोई समाचार या सूचना प्राप्त नहीं होती, परन्तु यह सत्य है कि वह जब तक जिया, शान से जिया और अपने जीवन काल में उसने जिस पर भी नजर डाली वह उसकी गिरफ्त में ही रही, पर इसके अलावा भी उसके पास कुछ ऐसी आध्यात्मिक शक्तियां थी कि पूरा रूस उस समय उसका दीवाना था।
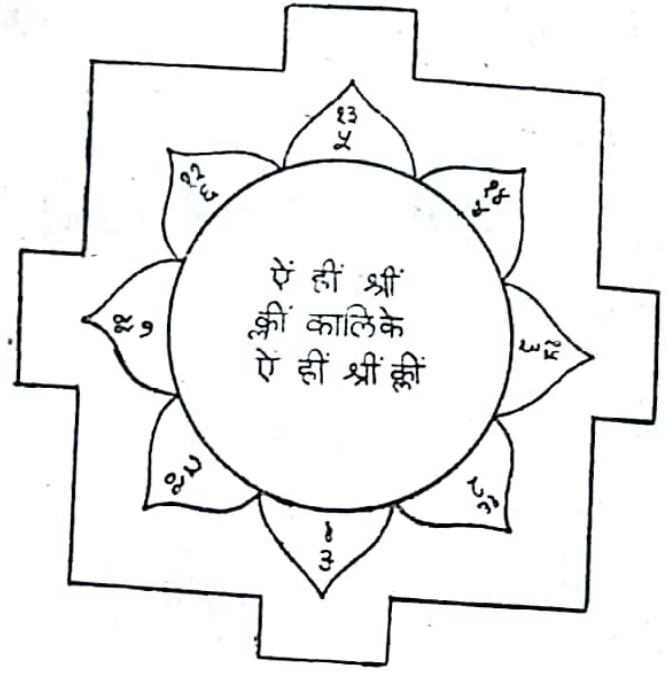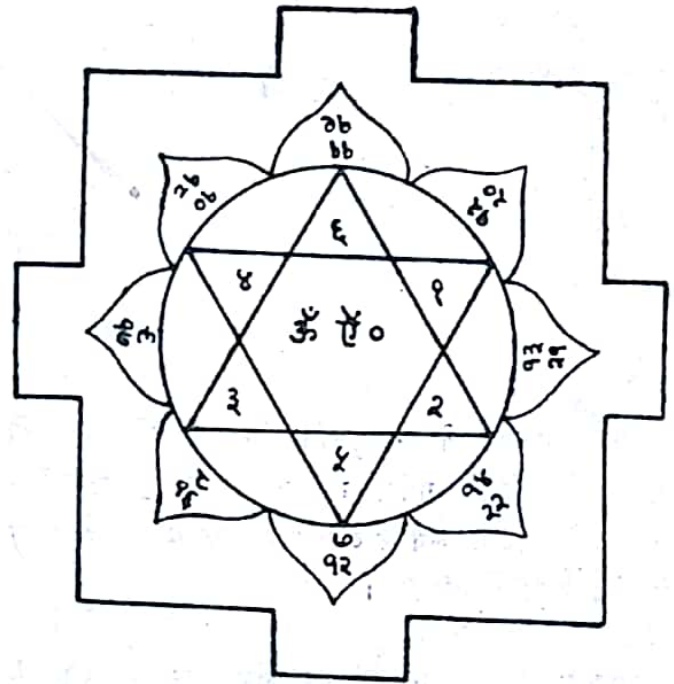
वशीकरण–यन्त्र

सम्मोहन–यन्त्र

छठी इन्द्रिय में छिपी हैं आश्चर्यजनक शक्तियां

अमेरिका के राष्ट्रपति विक्ट्रस की पत्नी को भयंकर बीमारी हो गयी; डॉक्टरों ने हाथ झटक दिये और उन्होंने स्पष्ट रूप से बता दिया कि अब इनके बचने की कोई उम्मीद नहीं है।

पर विक्ट्रस घुटने के बल बैठ कर प्रभु यीसू के चरणों में झुक गये और प्रार्थना की " चाहे तू मुझे किसी भी प्रकार की विपत्ति दे, पर मेरी पत्नी को इस रोग से मुक्त कर दे।"

और उसी क्षण से उसकी पत्नी ठीक होने लगी और महीने भर में वह पूरी तरह से तरोताजा हो गयी, जो काम डॉक्टर और आधुनिक दवाएं न कर सकी, वह विक्टरस की मनःशक्ति ने कर दिखाया।

इतिहास में बाबर और हुमायूं का किस्सा तो सर्व विदित है, हुमायूं मृत्यु शैया पर था और उसके बचने की कोई उम्मीद नहीं थी।

बाबर, हुमायूं के खाट के पास ही घुटने के बल झुक गया और अल्लाह से प्रार्थना की, कि चाहे तू मेरी जान ले ले पर हुमायूं को बचा दे, और उसी दिन से हुमायूं ठीक होने लगा और बाबर धीरे धीरे बीमार होता हुआ समाप्त हो गया, पर इस घटना से बाबर की

मन:शक्ति का पता चल जाता है ।

अमेरिका के प्रसिद्ध वैज्ञानिक इयान ऑर्थर प्रसिद्ध चिन्तक और वैज्ञानिक हैं, जिन्होंने छठी इन्द्रिय या मनः शक्ति के बारे में कई पुस्तकें लिखी हैं और उनकी पुस्तकों को वैज्ञानिकों ने गम्भीरता से लिया है। इयान ऑर्थर ने बताया है कि प्रत्येक मनुष्य के शरीर में तीन प्रकार की शक्तियां होती हैं, शारीरिक शक्ति, भौतिक शक्ति और मन:शक्ति। शारीरिक शक्ति का तो मनुष्य प्रयोग करता ही है, भौतिक शक्ति से भी वह भली भांति परिचित हैं, परन्तु मन:शक्ति के बारे में वह कुछ भी नहीं जानता, जबकि उपरोक्त दोनों शक्तियों से भी ज्यादा प्रबल और तुरन्त प्रभाव देने वाली मन:शक्ति है, जिसके माध्यम से असम्भव कार्यों को भी सम्भव किया जा सकता है।

यह मन:शक्ति एकाग्रता के माध्यम से सम्भव है, जब मन एकाग्र होता है तो उसमें विशेष पावर या शक्ति आ जाती है। अमेरिका के वैज्ञानिकों ने परीक्षणों के माध्यम से मन:शक्ति को आंक कर यह माना है, कि इस शक्ति के द्वारा गुप्त और सुदूर रहस्यों का पता चल सकता है। इयान ऑर्थर ने तत्कालीन राष्ट्रपति और उच्चकोटि के वैज्ञानिकों से भरे खचाखच हॉल में मनः शक्ति के कई प्रयोग सम्पन्न करके दिखाये, उन्होंने चलती हुई घड़ी का पेन्डुलम स्थिर करके दिखा दिया, आधा किलो वजन के पदार्थ को बिना छुए या स्पर्श किये उसे अपने स्थान से हटा कर दिखा दिया, यही नहीं अपितु राष्ट्रपति के प्रेस अटैची मि० मिलबर्न ने एक कोने में जाकर एक कागज पर अरबी भाषा में कुछ लाइनें लिखी और उस कागज को अपनी जेब में डाल दिया, इयान आर्थर ने मन:शक्ति को एकाग्र कर उस कागज पर लिखी हुई इबारत को ज्यों का त्यों उच्चारण करके सुना दिया जब कि इयान आर्थर को अरबी भाषा नहीं आती।

इयान आर्थर की पुत्री लीना आर्थर भी इस क्षेत्र में अत्यन्त सफल है उसने मन:शक्ति को एकाग्र कर चलती हुई नाड़ी स्पंदन को बन्द कर दिया और लगभग पांच मिनट तक ऐसा करके वैज्ञानिकों को हैरत में डाल दिया था, उसने अपनी इसी शक्ति के बल से सामने वाले वैज्ञानिकों के मन में क्या क्या विचार घुमड़ रहे है एक एक कर बता दिया।

रूस ने इस सम्बन्ध में काफी प्रयोग किये है, और वहां के वैज्ञानिकों ने इस मनः शक्ति के प्रभाव को देख कर आश्चर्य व्यक्त किया है, पिछले दिनों रूस के प्रमुख पत्र "इजवेतिया" में महत्वपूर्ण समाचार प्रकाशित हुआ था कि रूस ने मानव सहित उपग्रह अन्तरिक्ष में भेजा था जो कि पृथ्वी से सैकड़ों मील दूर ऊंचाई पर उड़ रहा था रूस की प्रमुख वैज्ञानिक महिला इवानोव ने अपने मन को एकाग्र कर उस उपग्रह में बैठे पायलेट को कुछ आदेश दिये और उस पायलेट ने वैसा करना शुरू कर दिया जब बेतार के तार के माध्यम से उससे सम्पर्क कर पूछा कि उसने उपग्रह का रास्ता क्यों बदला, तो उसने बताया कि मुझे आदेश दिया गया है और उस आदेश के अन्तर्गत ही मैंने ऐसा किया है।

इससे रूस के वैज्ञानिक चकित रह गये, इसकी तो अनन्त संभावनाएं उन्होंने अनुभव की, इसके माध्यम से तो किसी भी देश के उपग्रह को आज्ञा दी जा सकती है, और मनचाहा कार्य सम्पन्न करवाया जा सकता है।

अमेरिका ने सन् ६२ में ही इस क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर ली थी; और जब नील आर्मस्ट्रांग ने पहली बार चन्द्रमा पर कदम रखा तो अमेरिका के प्रसिद्ध वैज्ञानिक और नासा में कार्यरत वियनोव ने आर्मस्ट्रांग को मन:शक्ति के द्वारा बिना किसी वैज्ञानिक उपकरण की सहायता से पांच प्रश्न पूछे और आर्मस्ट्रोंग ने वैज्ञानिक उपकरणों के माध्यम से उन पांचों प्रश्नों के उत्तर दिये।

इस घटना से यह स्पष्ट हो गया कि मन:शक्ति के द्वारा संदेश प्रेषण संभव है, अमेरिका की विख्यात गुप्तचर संस्था सी० आई० ए० के लिए तो यह वरदान स्वरूप

ही है, सी० आई० ए० के तत्कालीन निदेशक हूब ने कहा था कि अब हम ज्यादा कुशलता से कार्य कर सकते है और अपने एजेन्टों को समाचार दे सकते है या समाचार प्राप्त कर सकते है, इसके लिए न तो किसी लिखित पत्र की जरूरत है और न बातचीत को बीच में ही किसी और देश द्वारा सुने जाने की आशंका, इसके बाद तो अमेरिका ने इस क्षेत्र में काफी कुछ कार्य किया हैं।

पिछले दिनों रूस से भागे हुए गुप्तचर इविल ने अमेरिका में रहस्य को उजागर करते हुए बताया कि अब रूसी वैज्ञानिक अपने अन्तरिक्ष यान से सम्पर्क मनःशक्ति के द्वारा ही करते है, अब रेडियों संचार प्रणाली उनके लिए पुरानी पद्धति हो चुकी है, वे अन्तरिक्ष यान का नियन्त्रण इस अतीन्द्रिय शक्ति के द्वारा ही कर रहे है यही नहीं, अपितु इस शक्ति से माध्यम से वे अपनी पनडुब्बियों से भी सम्पर्क बनाये हुए है।

जापान के डा० हिरोसी मोतोयामा ने इस पद्धति पर बहुत कार्य किया है, उन्होंने बताया है कि आने वाला युग मनःशक्ति के माध्यम से ही पहिचाना जायेगा।

डा० मोतोयामा की बात को पूरा विश्व ध्यान से सुनता है, उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "सिक्स्थ सेन्स" में निष्कर्ष निकालते हुए बताया है कि तन्त्र में बताये हुए मूलाधार स्वाधिष्टान, मणिपुर, आज्ञा, अनाहत और सहस्रार चक्रों के माध्यम से ही मनःशक्ति एकाग्र की जा सकती है जिसके द्वारा दूसरे के मन में स्थित विचारों को पढ़ा जा सकता है, उन्होंने तन्त्र और विज्ञान का संबंध स्थापित करते हुए अनुभव किया कि जब साधक का ध्यान मणिपुर चक्र पर होता है, तो मनःशक्ति भौतिक ऊर्जा में परिवर्तित होने लगती है, और जब साधक का ध्यान आज्ञा चक्र पर होता है तो व्यक्ति के शरीर का चुम्बकीय क्षेत्र बारह गुना बढ जाता है तथा जब उसका ध्यान अनाहत चक्र पर होता है तो अन्धेरे में उन फोटो इलेक्ट्रिक सेल में प्रकाश उत्पन्न होने लग जाता है।

वास्तव में ही अब मनःशक्ति या अतीन्द्रिय शक्ति कोई रहस्य नहीं रहा है इसे भली प्रकार से समझा जा सकता है यदि प्रार्थना ध्यान मनन और मन्त्र जप के माध्यम से मन को एकाग्र कर चक्रों को जाग्रत कर ले तो स्वतः ही यह अतीन्द्रिय शक्ति या जिसे "अल्फा तरंगें" कहते है, जाग्रत हो जाती है, और इसके माध्यम से असम्भव को सम्भव किया जा सकता है, ऐसा व्यक्ति सैकड़ों मील दूर बैठे हुए व्यक्ति को देख सकता है, उसके मन की गोपनीय बातों को जान सकता है, उसे मन चाहा "सजेशन" या आज्ञा दे सकते सकता है, जिसके माध्यम से उसे बुरी आदतों से बचाया जा सकता है, इस शक्ति के माध्यम से रोगों पर नियन्त्रण पाया जा सकता है, और वह सब कुछ किया जा सकता है, जो सामान्यतः मनुष्य के वश में नहीं।

वास्तव में ही आज पूरा विश्व तन्त्र को और उसमें निहित शक्तियों को तेजी के साथ अपना रहा हैं और इसके माध्यम से क्रांतिकारी परिवर्तन लाने के लिये अग्रसर हो रहा हैं।

अगला अंक

भगवती जगदम्बा के साक्षात दर्शन संभव है

नवरात्रि के पर्व पर इस बार इस विशेष साधना को सिद्ध किया जायेगा उड्डयन साधना के माध्यम से आगे के पूरे जीवन में साधक अपने ही शरीर में स्थित जगदम्बा को किसी भी क्षण देख सकते हैं, प्रत्यक्ष....पूर्ण रूप से।

किसी के भी भूतकाल की एक एक घटना देखना सम्भव है

फावस बहिने, जो किसी के भी अतीत को....भूतकाल को पढ लेती है, एक विशेष तन्त्र के माध्यम से... कौनसा है, यह तन्त्र, जिसकी वजह से अब किसी का भी भूतकाल गोपनीय नहीं रहा।

अब महाभारत का युद्ध आप भी देख सकते है

दावा किया है, कि जापानी वैज्ञानिक "इजरा" ने। उसने जो मशीन बनाई है, उसका नाम है "अनसीड" अर्थात् अदृश्य घटित घटनाओं की तस्वीरें लेना और फिल्म बना कर देख लेना, क्या आप इन सब से परिचित होना चाहते हैं।

जहां नर मुंडों की दीवारें हैं

बंगाल का तारापीठ. जहां कभी वामाक्षेपा जैसे तांत्रिकों ने साधना की थी ....इस तारापीठ में सभी कमरों की दीवारें नर मुण्डों से निर्मित है, और आंतों से बांधी गई है छतें ....एक दो नहीं पचासों कमरे ... जहां ताजे मुर्दे का भोग लगता है, मां तारा को . ... चलिये न, आप भी हमारे साथ।

सम्भलिये.........अन्तरिक्ष से उतर रहे है विचित्र लोक

एक दो नहीं, पचास से ज्यादा वैज्ञानिकों ने इन्हें अपनी आंखों से देखा है, और कैद है ये लोग अमेरिका कीं गुफाओं में .. .... और इन पर निरन्तर परीक्षण हो रहे है ....प्रामाणिक ववरण।

बहुत उथल पुथल होगी दुनिया में -- अगले बारह वर्षो में

अब इस शताब्दी को केवल १२ वर्ष रह गये है, और श्रेष्ठ योगियों ने बड़ी खतरनाक भविष्यवाणियां कर रखी है, इन वर्षों के लिये .... आप नहीं जानना चाहेंगे इन भविष्यवाणियों को ...... पढ़िये न इसी अङ्क में।

और भी बहुत कुछ, मार्च ८९ के अंक में

पोस्टल एल० आर० जे० ३६६७/८६-८७

रजि० नं० ३५३०५/८१

एक अद्वितीय योजना

जीवन में पूर्ण समृद्धि सुख एवं सौभाग्य प्राप्ति के लिए गोपनीय मन्त्रों से सिद्ध एवं प्राण प्रतिष्ठायुक्त

पारद शिवलिंग

आप सरलतापूर्वक प्राप्त कर सकते हैं।

योजना

आप मात्र ६००/-रु. का मनीआर्डर भेज दें। धनराशि प्राप्त होते ही आपको मात्र ६००/-रु. की वी. पी. से अद्वितीय पारे से निर्मित शिवलिंग भेज देंगे, जो कि आपके लिए पूर्ण सौभाग्यदायक एवं कई-कई पीढ़ियां तक के लिए उपयोगी रहेगा ।

मुफ्त

और ये १५००/-रु. आपके आजीवन सदस्यता शुल्क के रूप में जमा हो जायेंगे, और इस प्रकार आपको जीवन भर पत्रिका नियमित रूप से मुफ्त प्राप्त होती रहेगी ।

रियायत

और ये १५००/-रु. आपकी धरोहर राशि है, जब भी आप चाहें नियमानुसार सूचना दे कर यह धनराशि पुनः प्राप्त कर सकते हैं ।

सौभाग्य

और फिर ऐसा विश्व प्रसिद्ध शिवलिंग आपको सर्वथा मुफ्त में प्राप्त हो जायेगा। इससे ज्यादा और क्या सौभाग्य हो सकता है ।

एक अद्वितीय सौभाग्य; आपके लिए

सम्पर्क

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर – ३४२००१ (राजस्थान)